आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2009 ★ वैशाख 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

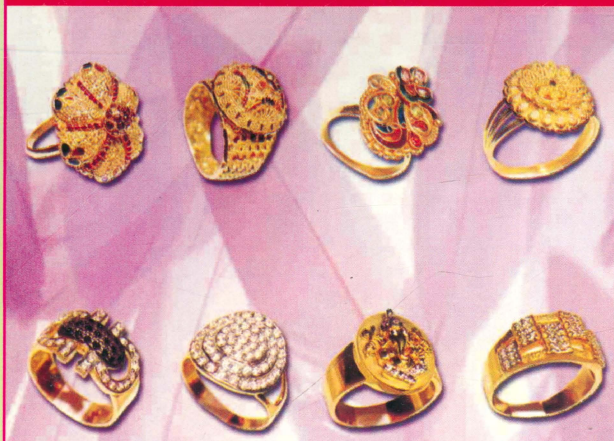

एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोने ◆ चांदी हिरा ◆ मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव ◆ औरंगाबाद ०२४०-२२४४५२०,२२
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.),फोन. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-07/2009-11

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
त्रिवर्षीय सदस्यता-रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में-. रू. 5000/- इस अंक का मूल्य रू. 10/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- रू. 3000/-

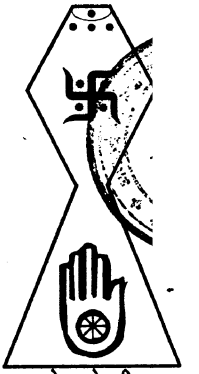

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी,
अप्पापुरक्खी चरेऽप्पमत्तो ।।10 ।।

— उत्तराध्ययन सूत्र 4.10

शीघ्र विवेक न पा सकता,
उठ, अतः काम-सुख त्याग करो।।
यह लोक जान, समता में रमो,
आत्मार्थी जागृत हो विचरो ।।10 ।।

मई 2009
वीर निर्वाण संवत् 2535
वैशाख 2066

वर्ष 66 अंक 5

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अचौर्यव्रत और नैतिकता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	सहिष्णुता एवं समभाव	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	सुख लोलुपता का त्यागः साधना का मार्ग	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	13
	अतीत का सुधार : प्रतिक्रमण का आधार	-पं.रत्न श्री जयमुनिजी म.सा.	20
चिन्तन -	धर्म : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री	27
अंग्रेजी-स्तम्भ-	World's Problems and Jaina View-Point (2)	*-Prof. Sagarmal Jain*	34
	Āgāra-Sūtra	*-Dr. Priyadarshhana Jain*	47
प्रासङ्गिक -	उच्चार-पासवण की समस्या	-डॉ. जीवराज जैन	41
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (49)	-श्री धर्मचन्द जैन	50
	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	53
नारी-स्तम्भ-	संस्कारों का संरक्षण : भावी पीढ़ी का आधार	- श्रीमती सुशीला बोहरा	55
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (60)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	63
उपन्यास-	सुबह की धूप (3)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	69
संस्मरण-	आपको कैसे भूल सकते हैं?	-डॉ. दिलीप धींग	74
युवा-स्तम्भ-	समय का प्रबन्धन	-श्रीअभयकुमार जैन	76
बाल-स्तम्भ-	रहस्यमय राक्षस का आखेट	- श्री देवेन्द्र नाथ मोदी	79
विचार-	मौन का महत्त्व	- सौ. कमला सिंघवी	26
	First Step	*-Munendra Surana*	49
	How TV Affects Your Child	*-Sanjay Srisrimal Jain*	52
	मोह ही आत्म-कल्याण में बाधक	- संकलित	58
	बात पते की	- सुश्री मीनाक्षी जैन	78
गीत/कविता-	हमारे तारक सद्गुरु	- श्री मनमोहनचन्द बाफना	40
	महावीर समस्त विश्व की शान हैं	- श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म.सा.	68
	देना और लेना	- श्री कपिल जैन	75
प्रतियोगिता-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता (21)		85
संवाद-	समस्या-समाधान (23)		88
साहित्य समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	90
समाचार विविधा-	दीक्षा आमन्त्रण-पत्रिका		59
	समाचार-संकलन		92
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		113

सम्पादकीय

आचौर्यव्रत और नैतिकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

अचौर्य व्रत का महत्त्व मानवीय परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। पशु-पक्षियों के लिए चोरी की कोई अवधारणा नहीं है। वे जहाँ उन्हें भोजन मिलता है वहाँ ही उसे ग्रहण कर लेते हैं। उन्हें यह बोध नहीं होता कि कहाँ खाना चोरी के अन्तर्गत आयेगा और कहाँ नहीं। किन्तु मनुष्य चोरी की अवधारणा से परिचित है। मानव समाज में पारस्परिक व्यवस्था को बनाये रखने में जिन व्यवहारों को त्याज्य समझा गया है, उनमें चोरी भी एक है। चोरी से दूसरे के अधिकारों का हनन होता है तथा अपने मूल्यों का पतन। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। उसके द्वारा श्रम, मूल्य, मुद्रा, विनिमय, पारिश्रमिक आदि अनेक अवधारणाएँ विकसित की गई हैं जो मनुष्य को सही ढंग से जीने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इनसे दूसरों के अधिकारों की भी रक्षा होती है तथा अपनी स्वतंत्रता भी सुरक्षित रहती है।

चोरी को मानव-समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। चोर की इज्जत समाज की दृष्टि में कुछ नहीं होती। चोरों की दृष्टि में चोर का महत्त्व हो सकता है, किन्तु मानव समाज में चौर्यकर्म अत्यन्त हीन कर्म माना गया है। चोरों की दृष्टि में कई शातिर चोर होते हैं जो चोरी करते हैं, किन्तु कभी पकड़े नहीं जाते। ऐसे चोर परस्पर एक-दूसरे पर निगाह रखते हैं। उनका गिरोह भी होता है किन्तु उनका विश्वास परस्पर कब टूट जाये इसका कोई भरोसा नहीं होता। चोरी को मानव समाज में तथा सरकार के स्तर पर एक दण्डनीय अपराध स्वीकार किया गया है। अनेक चोर पुलिस के डण्डे खाते हैं और पकड़े जाने पर कारागृह में बन्द होते हैं। किन्तु फिर भी समाज से इस दुष्कर्म का उच्छेद दिखाई नहीं देता।

भगवान् महावीर ने चोरी को 'अदत्तादान' शब्द से परिभाषित किया है। जो मानव की नैतिकता एवं प्रामाणिकता को पुष्ट करता है। दूसरे के अधिकार की वस्तु को बिना अनुमति के ग्रहण कर लेना अदत्तादान है। यह शब्द

चोरी की सूक्ष्म व्याख्या करता है। जिस वस्तु पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं है, उसको तो हम ग्रहण कर सकते हैं। उदाहरणार्थ सूर्य के प्रकाश पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं है, अतः हम उसे सहज रूप में ग्रहण कर सकते हैं। इसी प्रकार वायु का सेवन करने में किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। किन्तु जहाँ रोटी, कपड़ा और मकान की बात है वहाँ हम उसे मूल्य चुका कर अथवा दूसरे की अनुमति लेकर ग्रहण कर सकते हैं। जैन साधु-साध्वी अपने पास फूटी कौड़ी भी नहीं रखते हैं, अतः वे अपनी आवश्यकता के अनुसार गृहस्थों से भोजन आदि ग्रहण करते हैं। इन्हें ग्रहण करने में भी अनेक नियमों और उपनियमों का पालन करते हैं। नियमों के कारण वे भूख होते हुए भी एवं भोजन मिलने पर भी कदाचित् उसे नहीं ले पाते हैं। वे अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को कम एवं नियमों को अधिक महत्त्व देते हैं। इसलिये सहज ही उनके जीवन में अदत्तादान व्रत का पालन हो जाता है। वे संयम यात्रा के लिए भिक्षावृत्ति अपनाते हैं। किन्तु गृहस्थ जीवन में मूल्य चुका कर वस्तु ग्रहण करने की व्यवस्था की गई है। कोई किसी को स्वेच्छा से भेंट देना चाहे एवं ग्रहीता उसे ग्रहण करे तो बात अलग है। अन्यथा उसे भोजन, वस्त्र, मकान आदि के लिए भी मूल्य चुकाना होता है। साधु-साध्वी तो प्रासुक जल उपलब्ध हो, किन्तु कोई देने वाला न हो तो भी उसे स्वयं ग्रहण नहीं करते हैं।

यह नैतिकता का तकाजा है कि मैं दूसरे के अधिकारों का हनन न करूँ तथा अपने लिए प्राप्तव्य वस्तु को श्रम, मूल्य आदि के आधार पर ईमानदारी से प्राप्त करूँ। गृहस्थ का अदत्तादान विरमण व्रत इसमें हमारी मदद करता है। किन्तु आज व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा इतनी अधिक बढ गई है कि वह नीति-अनीति को नहीं देखता। वस्तु-संग्रह की भी कोई सीमा नहीं रही, वह अपने सुख के लिए दूसरे के श्रम को भूल जाता है तथा सामाजिक नीति-नियमों को ताक में रखकर वस्तु-संग्रह में लगा रहता है।

जैन धर्म के अनुसार चोरी तो पाप है ही, चोर की चुराई हुई वस्तु को सस्ते मूल्य में खरीद लेना या चोर की सहायता करना भी अधर्म है एवं अनैतिक कर्म है। राज्य के नियमों को भी श्रावक के व्रत में स्थान दिया गया है। उन नियमों का उल्लघंन करके यदि हम धनार्जन करते हैं, तो यह अनुचित है। राज्य के

नियमों में स्थानीय चुंगी, वाणिज्यिक कर, वेट टैक्स, आयकर आदि सबका समावेश होता है। किन्तु ऐसे कम ही व्यापारी हैं जो पूर्णतया इन नियमों का पालन करते हैं। गलत मापतौल करके धन कमाने का भी गृहस्थ के लिए निषेध किया गया है। लेन-देन में गलत लिखने का भी निषेध है। इसका तात्पर्य यह है कि जैन धर्म में अर्जन, लेन-देन, व्यापार आदि में नैतिकता एवं प्रामाणिकता पर बल दिया गया है।

हेरा-फेरी करके धन कमाने की जो प्रवृत्ति बढी है वह चोरी का भंयकर रूप है। तस्करी, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, सट्टेबाजी भी अनैतिकता की परिधि में आते हैं। ये राज्य के नियमों के विरूद्ध हैं तथा मनुष्य की लालसा की अनैतिक पुष्टि करते हैं।

रिश्वत अथवा उत्कोच की अवधारणा प्राचीन है। यह व्यक्ति को प्रलोभित करती है तथा उत्कोच ग्रहीता इस प्रलोभन में सामान्य नियम कायदों को एक ओर रखकर रिश्वत दाता का कार्य सम्पन्न करता है। इस उत्कोच का जिसको एक बार रस लग गया उसे फिर इसकी आदत हो जाती है। उसे फिर उत्कोच के बिना सामान्य दैनिक कार्य सम्पन्न करना भी भारी लगता है। ऐसी स्थिति में सही कार्य कराने के लिए भी लोग रिश्वत देने लगते हैं। इसे आज के युग में सुविधा शुल्क के रूप में जाना जाता है। रिश्वत लेना कोई अधिकार नहीं है। यह मनुष्य की दोषपूर्ण प्रवृत्ति है, जिससे न्यायसंगत व्यवहार नहीं होता। किन्तु समाज में इस प्रकार के दोष उत्पन्न हो ही जाते हैं जो मनुष्य की लोभप्रवृत्ति एवं दूसरे की सुविधा के कारण जन्म लेते हैं। व्यापारी वर्ग भी अपने कार्य को सरलता से सम्पन्न कराने में रिश्वत को एक अच्छा माध्यम मानता है। सरकारी कर्मचारी भी इस सुविधा-शुल्क को प्राप्त किये बिना कार्य करने को तत्पर नहीं होते हैं। जिस बेईमानी में दोनों को लाभ होता है वह बेईमानी बेधड़क चलती रहती है। किन्तु जब एक को लाभ एवं दूसरे को हानि होती है तो वह बेईमानी लम्बे समय तक नहीं चलती है। फिर भ्रष्टाचार निरोधक कार्यालय में शिकायत होती है, एवं रिश्वत ग्रहीता पकड़ा जाता है।

कर चोरी को जैन समाज बुरा नहीं मानता। वह कहता है कि सरकारी नियम ही इतने कठोर हैं कि यदि व्यक्ति कर चोरी न करे तो कुछ भी कमा न

सकेगा। दूसरी बात, यदि सब व्यक्ति पूरा कर चुकाने लगें तो बाजार में वस्तुओं के दाम अधिक ऊँचे जा सकते हैं। सरकार को कर नहीं देने वाले लोग बाजार में कम कीमत पर वस्तु उपलब्ध कराते हैं। मूलतः यह राज्य विरुद्ध कार्य है जो पूर्णतया त्याज्य है।

चोरी के विभिन्न रूप हैं। उनमें कार्य की चोरी भी एक चोरी है। जिस कार्य को करने के लिए पारिश्रमिक लिया गया है। यदि उसे हम पूर्ण नहीं करते हैं तो यह भी एक प्रकार की चोरी ही है। चोरी का एक रूप लेखन में चोरी है। दूसरे के द्वारा लिखे हुए मौलिक लेखों एवं रचनाओं को अपने नाम से प्रकाशित करवाना एक चोरी है। गृहस्थों में ही नहीं साधु-साध्वियों में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति देखी जाती है। कोई यह कहे कि किसी लेखक को पैसा देकर हम उस कृति को अपने नाम से प्रकाशित करवायें तो इसमें क्या दोष है, यह तो कोई अदत्तादान नहीं है। किन्तु गहराई से विचार करने पर ज्ञात होगा कि यह भी एक प्रकार का दोष ही है। आजकल किसी शोध का भी पेटेन्ट होता है। उसे दूसरा कोई अपने नाम से प्रयोग नहीं कर सकता। लेखन में भी कॉपीराइट होता है। दूसरा उसकी नकल नहीं कर सकता। यदि करता है तो यह अपराध है।

चोरी के कितने ही रूप हों वे सब मनुष्य की विकृत चेतना के प्रतिबिम्ब हैं। वह अपने प्रति न्याय किये बिना जब दूसरे के अधिकारों का हनन करता है तो चोरी का दोष उत्पन्न होता है। उसमें बिना श्रम के वस्तु की प्राप्ति की भावना, लोभ की प्रवृत्ति, दूसरों को धोखा देने की लालसा, अपने कुत्सित संवेगों पर अनियन्त्रण आदि अनेक कारण हैं जो चोरी की प्रवृत्ति को जन्म देते हैं। प्रभु महावीर ने जो अदत्तादान का संदेश दिया है वह व्यक्ति को भीतर से निर्मल बनाता है तथा दूसरों के प्रति आदर भाव उत्पन्न करता है, उनके अधिकारों की रक्षा के भाव को सुरक्षित रखता है तथा संग्रह की भावना को उत्पन्न नहीं होने देता। इस प्रकार अदत्तादान विरमण-व्रत व्यक्ति को बाह्य रूप से ही नहीं, आभ्यन्तर स्तर पर भी नैतिक एवं धर्मनिष्ठ बनाता है। कबीर का यह वाक्य अदत्तादान व्रत के भावों को साकार रूप दे रहा है-

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जीव।
रूखी-सूखी खाय के ठण्डा पानी पीव।।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(अविनीत-विनीत के लक्षण)

अभिक्खणं कोही हवइ, पबंधं च पकुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूण मज्जइ॥7॥
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावगं॥8॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चइ॥9॥
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चइ।
नीयावत्ती अचवले, अमाई, अकुऊहले॥10॥
अप्पं च अहिक्खिइ, पबंधं च न कुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो भयइ, सुयं लद्धुं न मज्जइ॥11।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 11, गाथा 7-11

अविनीत भिक्षु के लक्षण- बार-बार क्रोधी होता है और (लम्बे समय तक) अविच्छिन्नरूप से क्रोध करता रहता है। मित्रता किये जाने पर भी (उसका) वमन (त्याग) कर देता है। श्रुतज्ञान को प्राप्त करके मद करता है॥7॥ कदाचित् आचार्यादि द्वारा हुई स्खलना पर (उनका) तिरस्कार करता है, मित्रों पर भी कोप करता है अतिप्रिय मित्र के भी एकान्त में अवगुणवाद करता है॥8॥ प्रकीर्णवादी-असम्बद्धभाषी हैं, द्रोह करने वाला है, स्तब्ध-अहंकारी है, आहार में लुब्ध (लोलुप) है, इन्द्रियनिग्रह नहीं करता, असंविभागी है तथा अप्रीतिकर है, (वह) अविनीत कहलाता है॥9॥

विनीत भिक्षु के लक्षण- अब पन्द्रह स्थानों से (साधक) सुविनीत कहलाता है। जो इस प्रकार है- गुरु से नीचा (अनुद्धत-नम्र) होकर रहने वाला, चपलता से रहित, माया (कपट) से रहित, कुतूहल रहित हो॥10॥ जो किसी की भी निन्दा या तिरस्कार नहीं करता तथा क्रोध को लम्बे समय तक बांधकर नहीं रखता। मैत्री करने वालों के साथ कृतज्ञ भाव रखता है, श्रुत (शास्त्रज्ञान) पाकर मद नहीं करता॥11॥

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मच्छियों का धंधा करने वाले व्यक्ति किन्हीं सेठजी के पास आकर कहें कि पचास हजार रुपये दे दो, कोई धंधा करना है। पाँच रुपया सैंकड़ा ब्याज दूँगा, ऊँचे से ऊँचा ब्याज दूँगा तो सेठजी उसको रुपया ब्याज पर देंगे या नहीं? सेठजी प्रत्यक्ष में पाप नहीं करेंगे, मच्छियों का व्यापार नहीं करेंगे, बन्दरगाह पर बकरों को नहीं पहुँचायेंगे, किन्तु ऋण लेने वाला यदि उस रकम से हिंसा का कार्य करता है तो ऋण देने वाला भी पाप का भागी बनता है, यह जानने की जरूरत है।

- भूमि, कोठी, जायदाद और धन-सम्पत्ति, ये सब आपके निज के नहीं हैं। आपका निज तो वस्तुतः ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी आत्मगुण है। आप निज को भूलकर, निज के आत्म-गुण को भूलकर, जो आपका अनिष्ट करने वाला है, उसको अपना (निज) समझ रहे हो। इस भूमि, जायदाद आदि से ज्यादा सोच आपको ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप का होना चाहिए, क्योंकि ये आपके निज-गुण हैं। एक अल्प बुद्धि वाला व्यक्ति भी जिसे अपने कुटुम्ब का ध्यान हो, खतरे की स्थिति पैदा हो जाए तो जिस जगह वह वर्षों से रह रहा है, उस स्थान को छोड़ने में देर नहीं करेगा। पर बड़े आश्चर्य और दुःख की बात है कि आप निज घर को छोड़कर सर्वस्व नाशक शत्रु के घर में बैठे कराल काल की चक्की में पिसे जा रहे हो। फिर भी महाविनाश से बचने के लिए आपको कोई चिन्ता नहीं है।

- कारण छोटा होता है, परन्तु उससे निर्मित होने वाला कार्य विशाल होता है, भव्य होता है। आपने देखा होगा कि वटवृक्ष का बीज कितना छोटा-सा होता है, किन्तु उसका विस्तार बहुत बड़ा हो जाता है, बीज के आकार से कोटि गुणा अधिक। इसके निर्माण का कारण वह छोटा सा बीज होता है। यदि बीज न हो तो मूल वृक्ष किससे पैदा हो? उसकी पत्तियाँ, शाखाएँ, प्रशाखाएँ, फूल, फल इत्यादि किससे उत्पन्न हों? यदि बीज ठीक स्थित में है और उसे अनुकूल संयोग प्राप्त होता रहता है, तो समय पाकर वह इतना विस्तार करता है कि दर्शक उसके विस्तार को देखकर चकित हो जाते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

सहिष्णुता एवं समभाव

आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सूरत में दिनांक 8 मार्च, 2009 को फरमाए गए संक्षिप्त प्रवचन को श्री जगदीश जी जैन ने लिपिबद्ध किया है।-सम्पादक

कभी गर्मी का प्रचण्ड रूप देखने को मिलता है, कभी सर्दी की ठिठुरन सताती है, तो कभी पावस का समय रहता है। तब हम प्रकृति को बदलने की बजाय, कोसने के बजाय अपने आपको बदलते हैं। गर्मी में शीतलता वाले स्थान की तलाश में रहते हैं। बारीक सूती वस्त्र पहनना पसन्द करते हैं। सर्दी आने पर गरम कपड़े बदन को सुहाते हैं। गर्मी में ठण्डे एवं शीतलता करने वाले पदार्थ लेते हैं तो सर्दी में गर्मागर्म भोजन एवं गर्म पदार्थ लेने की मानसिकता सहज बन जाती है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि अधिक गर्मी एवं सर्दी के समय हम प्रकृति को कोसते नहीं, अपितु अपने आपको बदलते हैं। इसी तरह शरीर भी एक सा नहीं- कोई काला, तो कोई गोरा, कोई लम्बा तो कोई ठिगना, कोई अंधा तो कोई लंगड़ा, कोई हृष्ट-पुष्ट तो कोई दुर्बल। ऐसी स्थिति में गम करने के बजाय हम अपने आपको बदलते हैं। कोई धनी है तो कोई निर्धन, परिस्थिति के अनुसार जीवन यापन करना सीख लेते हैं।

सड़कों पर जगह जगह झोपड़पट्टियों में रहने वालों की एवं आप सबकी स्थिति के नजारे देखने के अनेक बार प्रसंग आये हैं। शेखचिल्ली जिसके दोनों पैर नहीं, भीख मांग रहा है, फिर भी प्रसन्न है। उससे एक भाई ने पूछा- इतनी प्रसन्नता क्यों? जबकि तुम्हारे पैर नहीं है, लाचारी की हालत है। शेखचिल्ली ने उसी प्रसन्न मुद्रा में कहा- "श्रीमान् जी! भगवान् ने मुझे दो आँखे, कान, हाथ और यह शरीर सब कुछ दिया है, यदि केवल पैर नहीं दिये तो कोई बात नहीं। जो है उससे ही प्रसन्नता है। देखिये उसकी सन्तोष वृत्ति। दूसरी तरफ भी देखिए करोड़ों हैं, फिर अरबों का चिन्तन चल रहा है। जो कुछ मिला, उसमें सन्तोष नहीं, अकारण दुःखी बन रहे

हैं। देवकी का प्रसंग लीजिये-मात्र एक पुत्र को नहीं खिलाया इसी कारण आर्त्त कर रही है। संसार में लोभी, मायावी, क्रोधी, अहंकारी सभी हैं। अपने आपको वैसा मत बनाओ, यही सामायिक है। यही सामायिक का सुन्दर स्वरूप है।

माँ को देखो चार बच्चे हैं। एक कमाऊ है, दूसरा गमाऊ है, तीसरा पागल है, चौथा क्रोधी है। फिर भी वह सबको स्नेह दे रही है। एक सा भोजन खिला रही है, माँ की दृष्टि भेद वाली नहीं है, वह समान भाव रखती है।

पानी गर्मी में गर्म, सर्दी में ठण्डा, रेत भी इसी तरह गर्मी में गर्म व सर्दी में ठण्डी रहती है। कुत्ते का स्वभाव पिण्डली पकड़ने का है, गधा-दुलत्ती मारता है, यह उसका अपना स्वभाव है, लेकिन आप ऐसी प्रवृत्ति नहीं करते। यदि आप भी ऐसा करते हो तो यह सब विभाव है। सामायिक का अतरंग रूप चाहे घर में हो या बाहर, दुकान पर हो या धर्मस्थान में, सभी स्थानों पर एकसा रहे तो आप समझ लीजिये, सामायिक जीवन में उतर गई है, यदि ऐसा है तो सिद्ध बनने से कोई रोक नहीं सकेगा। दुःख कहीं नहीं है। यदि निर्धनता में दुःख होता तो पूनिया श्रावक को भी होता। हरिकेशी बल को कुरूपता का दुःख नहीं है, ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

आपने अखबार में पढ़ा अमुक स्थान पर दुर्घटना में 60 आदमी मर गये। आपमें से किस-किस को कितना-कितना दुःख होगा। दुःख अपना मानने में है, अपनी सोच में है। सोच को सम्यक् बनाने की आवश्यकता है। जो हर परिस्थिति में सम रहेगा, समता भाव रखेगा, सही मायने में वही सामायिक वाला होता है। आपकी ऐसी सोच, ऐसी दृष्टि बने। इन्हीं मंगल भावों के साथ.....।

ज्ञान

1. ज्ञान का बल होने से मनुष्य दुःख में धीरज से समय काट सकता है। ऐसे ज्ञान की प्राप्ति सत्संग ओर स्वाध्याय से होती है।
2. जिस ज्ञान में कषाय जनित मलिनता न हो, वही वास्तव में विशिष्ट ज्ञानी या विद्वान् कहलाता है।

-आचार्य श्री हस्ती

प्रवचन

सुख लोलुपता का त्याग : साधना का मार्ग

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा कल्पतरु गार्डन, कांदिवली, मुम्बई में दिनांक 13.09.2008 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

व्यक्तित्व का मोह अथवा अहंकृति हिंसा का मूल कारण है। अधिकार-लालसा से अकर्मण्यता पोषित होती है और हिंसात्मक प्रवृत्तियों को जन्म मिलता है। कल की उसी पंक्ति के विवेचन को आगे बढ़ाने का प्रयास गुरु कृपा से हो रहा है।

यह अहंकृति पैदा कैसे होती है? इन्सान चलते-चलते गुणों का अभिमान करता है, यही समस्त दोषों का मूल है। गुणों का अभिमान परदोष दर्शन से पोषित होता है। परदोष दर्शन अहंकार का पोषण करता है। भगवान् की वाणी ने हमें जगह-जगह पर चेताया है। दशवैकालिक सूत्र के दसवें अध्ययन की अठारहवीं उन्नीसवीं गाथा में जाति का मद नहीं, रूप का मद नहीं, लाभ का मद नहीं, श्रुत का मद नहीं करने का संदेश है।

उत्तराध्ययन सूत्र के इक्कीसवें अध्ययन में तेहरवीं गाथा ले लीजिये-

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजय-बंभयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिं इंदिए।।

यह गाथा समस्त प्राणियों के साथ दया एवं अनुकम्पा का व्यवहार करने की प्रेरणा कर रही है। क्षमा को धारण कर संयत एवं ब्रह्मचारी बनने की बात कह रही है। भिक्षु सावद्ययोग का परिवर्जन करता हुआ सुख लोलुपता का त्याग करता है एवं समाधि का अनुभव करता है। आप किसी भाग में चले जायें, भगवान् की वाणी सतत प्रेरणा देती है।

हम **"मित्ती मे सव्वभूएसु"** का नाद करते हैं, पर भगवान् महावीर के 2600 वें कल्याणक वर्ष पर जैन समाज को देखकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी माथा पकड़ कर रह गये कि मैं समाज

की बैठक में आया हूँ या संसद में! कितनी भयंकर लड़ाई हुई।

अभी आपके बीच डॉ. जीवराज जी जैन आए हुए हैं। जमशेदपुर में रहते हैं। वैज्ञानिक हैं। आपके विज्ञानपरक लेख जिनवाणी में आते रहते हैं। अण्डे में जीव है, पानी सजीव है या निर्जीव पता कैसे करें आदि। दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरापंथी मंदिरमार्गी के जितने भी पुस्तकालय हैं, उनमें उपलब्ध लेखों को आधार बनाकर कोई पी-एच्.डी करना चाहे उसके लिए आप मेहनत कर रहे हैं। बीना में बहुत बड़ी लाइब्रेरी है, कोबा में भी है। देश में एक करोड़ हस्तलिखित ग्रन्थ हैं, तीन लाख कोबा में है। साठ हजार बीना में। इनके भीतर में दर्द है। समाज का दर्द है।

आज जैनियों को आपस में टांग खिंचाई से फुर्सत नहीं मिलती। हर व्यक्ति की कार्य-प्रक्रिया में कुछ न कुछ अन्तर हो सकता है, पर इतना तो करो कि हम किसी की निन्दा तो नहीं करें। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी ने लिखा- "निन्दा वही कर सकता है जो कुछ नहीं करता।" स्वयं करने वालों को दूसरों को देखने की जरूरत क्यों पड़ेगी? परदोष दर्शन की भूमि पर गुणों का अभिमान पोषित करना हिंसा है। उससे आत्मिक गुणों की हानि होती है। गुणों का अभिमान ही हिंसा कराता है, अहंकार बढ़ाता है, पतन कराता है।

कर्म-प्रकृति में जाति, कुल, बल, रूप, लाभ, ऐश्वर्य, तप, श्रुत इस तरह दस मद कहे गए हैं। जाति-कुल का मद जन्म से है। माँ के कारण जाति, पिता से कुल। बल और रूप शरीर से सम्बद्ध हैं। लाभ और ऐश्वर्य बाहर की सामग्री से तो तप और श्रुत क्षयोपशम से सम्बन्धित हैं। इन मदों में से कोई भी मद करना ठीक नहीं है। चाहे पारिवारिक उपलब्धि हो या शारीरिक, साधनों की उपलब्धि हो या अन्य कोई अर्जित उपलब्धि हो, किसी भी तरह का मद गुणों को सीमित करता है और गुणों का सीमित होना दोष है। सीमित गुण अहंकार पैदा करता है। इस सीमित गुण पर असीमितता में आई रुकावट देखते हुए साधक को दोष निकालते जाना है। इसीलिए अब ध्यान आता है- तत्त्वार्थ सूत्र के सातवें अध्ययन के सूत्र का- **प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा**। हिंसा का सम्बन्ध प्रमाद पूर्वक मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति से है। प्रमाद का सम्बन्ध बाहर की

उपलब्धि से अपना मूल्यांकन करने से है। इसके पास साधन ज्यादा, उसके पास सामग्री ज्यादा, ऐसा मूल्यांकन प्रमाद का सूचक है। वस्तुतः बाहर की उपलब्धि कोई उपलब्धि नहीं है। साधक बनकर कोई बताने लगे। अमुक गाँव में मेरे इतने घर हो गये। घर किसके होते हैं? गौतममुनि जी महाराज के व्याख्यान में पढ़ने को मिला-

जोड़ तजि, जोड़ी तजि, किया जोड़ का त्याग।
तुलसी जोड़ी जगत से, कहाँ रहा वैराग?॥

संसार की चीजों का जोड़ छोड़ दिया, जूते की जोड़ी भी तज दी। 'जोड़' पति-पत्नी का सम्बन्ध भी छोड़ दिया। घरबार छोड़कर आ गये, पति-पत्नी का सम्बन्ध तोड़ दिया, फिर जगत से सम्बन्ध जोड़ लिया कि यह मेरा भक्त, यह मेरा घर, यह मेरा क्षेत्र तो उसका वैराग्य कहाँ रहा?

हमारा उपादान जगे, हम आगे बढ़ें। मुझे सेवा का लाभ मिले, प्रभु से सम्बन्ध बढ़ायें। जो धर्माचार्य-धर्मोपदेशक प्रभु के विश्वास के स्थान पर अपना विश्वास दिलाता है, वह घोर अनर्थ करता है। गुरु कौन होता है? जो भक्त को भगवान से जोड़े और खुद को बीच से हटा ले वह गुरु है। खुद का नाम रटाया, भगवान् का नाम भुलाया तो समझो वह गुरु के पतन का निमित्त बन सकता है।

वीतराग शासन में इन भावों का कितना सुन्दर विवेचन है। हर कदम पर शिष्य को समर्पित रहना है। गुरु के उपकार से शिष्य आगे बढ़ता है। समर्पण करने वाला आगे बढ़ जायेगा और गुरु अधिकार मान लेगा तो भक्त डिग जायेगा। अधिकार-लालसा से आपको ही नहीं सबको बचकर चलना है।

अहिंसा अणुव्रत की बात चल रही है। अधिकार की भावना मिट जायेगी तो व्यक्ति जागृतिपूर्वक काम कर सकता है। अन्यथा प्रमाद में हिंसा कर बैठता है। चित्त शान्त है तो सामर्थ्य का सदुपयोग है। लक्ष्य पर दृष्टि रखते हुए आवश्यक कार्य को पवित्र भावना से पूरी शक्ति लगाकर सही रीति से कर देने का नाम है- समिति। जूते खोलकर गया तो संवर हो सकता है। विवेकपूर्वक आसन उठाया, भण्डोपकरण रखे। अविवेक से लेना आस्रव है, विवेक से लेना संवर। जीव तभी आगे बढ़ सकता है जब

वह आस्रव से दूर रहे। घर में रहने वाले को घर के काम करने पड़ेंगे। लकड़ी के पीछे कोकरोच हैं, उन्हें कैसे हटाना? दूध को अग्नि पर रखकर बहन टी.वी. देखती है। कभी गैस बुझ जाय तो आग भी लग सकती है, दूध उफन सकता है, दूध के गिरने से लाल चींटियाँ खत्म हो सकती हैं? अणुव्रती सर्वथा हिंसा नहीं छोड़ सकता, फिर भी हिंसा में पाप मानता है, बचाव की भावना रखता है। अणुव्रती त्रस जीवों की विराधना से बचता है, सम्मूर्च्छिम जीवों की विराधना विवशता से होती है। मच्छर काटते हैं। मच्छरों के व्यवधान से व्रती बचता है, पर ऐसे साधनों का प्रयोग नहीं करता जिनसे मच्छरों की विराधना होती है। वह दवा नहीं छिड़केगा। व्रती हर कदम पर जागरूक रहता है। वह ऐसी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करता जो नोनवेज हैं, जिन पर लाल निशान लगा हुआ रहता है। बालों की चमक के लिए अण्डे का बना हुआ शैम्पू व्रती काम में नहीं लेता। आप एक-एक बात को समझ कर व्रती बनने की तैयारी करें, आगे बढ़ें। सुख-लोलुपता छोड़ने पर जीव आगे बढ़ सकता है। जब तक सुख-लोलुपता नहीं छूटेगी तब तक सम्यक्त्व नहीं आती और जब सम्यग् दृष्टि नहीं बन सकता तो व्रती बनना तो उसके बाद की प्रक्रिया है।

कल दुपहरी में बहुत सुन्दर बात आई। जब तक दूसरे के सुख को देखकर सुखी नहीं हुआ जायेगा तब तक व्यक्ति अहंकार से पोषित होता जायेगा। 29 वें अध्ययन की तीसरी पृच्छा के अनुसार धर्म की श्रद्धा साता की आसक्ति से अलग करती है। साता और आसाता दोनों खतरनाक नहीं खतरनाक है सुख-लोलुपता और असाता का भय। यह मोहनीय कर्म है। वेदनीय कर्म से डरने की आवश्यकता नहीं है। वेदनीय कर्म कुछ नहीं बिगाड़ता। सुख की लोलुपता अथवा सुख की दासता बिगाड़ती है। साता चौदहवें गुणस्थान तक रहती है। मोहनीय कर्म का उदय दसवें गुणस्थान तक रहता है। बिगाड़ने वाली है सुख की कामना। सुख की कामना रहती है तब सामने वाले में जीव है या नहीं, दिखता नहीं। उसने ऐसे कैसे बोल दिया? किसी का हो रहा सम्मान, हमें लगता है हमारा अपमान। हमारा कोई लेना-देना नहीं है। व्यक्ति जिस दिन दूसरे के सुख से सुखी हो जाय तो समझो आसक्ति टूट रही है, नहीं तो अहंकार का पोषण है और वह

हिंसा ही है।

आपको हिंसा से डर लगता है, हिंसा के कारण से डर नहीं लग रहा। भगवान् कहते हैं- कामनाओं को दूर करो। दशवैकालिक सूत्र के दूसरे अध्ययन में चेता दिया- औदारिक शरीर का पोषण कर लेना, किन्तु कार्मण शरीर का पोषण मत करना। शरीर को रोटी खिलाने में बाधा नहीं है, कामना की पूर्ति में बाधा है। आगम के हर वचन में अनन्तगम पर्यव की बात कही गई है। जिनके भीतर में शांति और आनन्द की खोज चल रही है वे सोचते हैं जड़ के पीछे दौड़कर कुछ नहीं मिला तो आज क्या पा लेंगे?

सोजत के पास सिरियारी है। सिरियारी के घाटों में जोधपुर की सेना के नायक भूधर जी ऊँटनी पर वार देखकर जग गये।

जय-जय हो भूधर गुरुवर की, उस शिष्यवर्ग सुखंकर की।
जो स्वयं तपस्वी पूरे थे, नहीं चेले रहे अधूरे थे,
तब शोभा थी सब मरूधर की, जय-जय हो भूधर गुरुवर की।।

यह जयगच्छ के आचार्य लालचन्द जी महाराज द्वारा रचित भजन है। भूधर जी महाराज कैसे साधक संत होंगे, वे पचोले-पचोले पारणा करते, आतापना लेते थे। पचपन साल की उम्र में दीक्षा लेकर कैसा काया का सार निकाला? बेले-बेले पारणा करने वाला आचार्य श्री धन्ना जी के शिष्य आचार्य श्री भूधर जी महाराज।

युद्ध के मैदान में डाकुओं का सामना चल रहा है। ऊँटनी की गर्दन लटकी देखी, वैराग्य जग गया। दीक्षा लेकर कैसी साधना की? वे कालू आनन्दपुर की नदी में आतापना ले रहे थे। एक किसान ने उन पर लट्ठ से प्रहार कर दिया। किसान का मन्तव्य था कि ये महाजनों के गुरु वर्षा नहीं हो इसलिए नदी में लेट जाते हैं। वर्षा नहीं होने से अनाज के भाव बढ़ेंगे और महाजनों को फायदा होगा। जब सुना कि लाठी मारने वाले को कढाह के नीचे दबा दिया गया है। भूधर जी महाराज ने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक उसे छोड़ा नहीं जायेगा, मेरे अन्न-जल का त्याग रहेगा।

आज कलियुग के जम्बू पूज्य श्री जयमल जी महाराज का जन्म दिन है। वे पूज्य भूधर जी महाराज के शिष्य थे। 22 साल की युवावय में उन्हें वैराग्य हो गया। पहला व्याख्यान सुना। क्या था व्याख्यान-

वो सेठ सुदर्शन जिनको, रानी ने कलंक लगाया
शूली पर चढ़कर जिसने, महामंत्र का ध्यान लगाया,
शूली का बना सिंहासन, सब लोग हुए सिरनामी,
हम भूल गये हैं जिनको, जरा याद करो कुर्बानी।।

सुदर्शन सेठ की उपासना कितनी बलवती थी। वासना को उपासना के सामने घुटने टेकने पड़े। 'दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं।' दानों में श्रेष्ठ अभय दान है, तपों में श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य तप है। सत्य है तो वही निर्बाध है। आज दो पैसे के लिए कितना झूठ बोला जाता है? आप कौन? भगवान् महावीर के उपासक। आदमी चाहे जितना झूठ बोल ले आखिर सत्य जग जाहिर होता ही है। जड़ के पीछे कैसे-कैसे विचार आते हैं, उससे कितना नुकसान होता है, वीतराग वाणी चेता रही है। मैं क्यों आत्म-गुणों की कब्र खोद रहा हूँ? एक दिन सब छोड़कर जाना पड़ेगा।

जयमल जी गौणा करने जा रहे हैं, गौणे का सामान लेने मेड़ता गये हैं। पिछले भव की साधना की हुई होगी, अतः वैराग्य आ गया। जम्बू को तो फिर भी घर आना पड़ा था, शादी करनी पड़ी। जयमल जी तो वैराग्य आने के बाद घर लौटे ही नहीं। जिसके घट से घर निकल चुका उनको घर से क्या करना? सारे परिवार वाले आ गये, जयमल जी को समझाया, पर वे अडिग रहे। दूज को दीक्षा हो गई। डेढ़ प्रहर में खड़े-खड़े प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लिया। 1765 का जन्म है, 1787 की मिंगसर बदी 2 की दीक्षा है, 1804 विजयादशमी को मेड़ता में आचार्य श्री भूधर जी महाराज का स्वर्गवास है। 1804 में पूज्य श्री जयमल जी महाराज ने और पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी महाराज ने आड़े आसन को त्याग दिया। दोनों महापुरुष साथ रहे। 1853 वैशाख शुक्ला 14 को 88 वर्ष की उम्र में एक महीने का संथारा आया। 49 साल आडा आसन नहीं किया। उनकी कैसी प्रतिभा थी, कैसी योग्यता थी। उनके द्वारा रचित बड़ी साधु-वन्दना भाव विभोर होकर बोली जाती है। कैसी साधु परम्परा रही, कैसे बीकानेर के दरवाजे खोले। भगवती सूत्र में आता है- जो आचार्य, उपाध्याय अग्लान भाव से संघ की वैयावृत्य करता है वह उसी भव में और उसी भव में नहीं तो एक

भव करके, दो भव करके अधिकतम पांचवे भव में अवश्य ही मोक्ष जाता है।

आचार्य श्री जयमल जी महाराज एकभवतारी थे। महापुरुषों को अपने घेरे में कभी न करें। महापुरुष जो भी बनते हैं वे घेरे को तोड़कर बनते हैं। हम उनके बीच में घेराबंदी करते हैं। इसलिए दूसरे महापुरुषों के गुण कीर्तन कुछ लोगों को अच्छे नहीं लगते हैं। वे गुणों में दोष देखते हुए खुद के भीतर में अवगुण पनपा लेते हैं। हमें दूसरों के सुख से सुखी होना है। दूसरों के गुण देखकर रोम-रोम में उल्लास छाना चाहिये। गुणदर्शन-गुण वर्णन का यही तरीका है। तभी हम अहिंसा महाव्रत के आराधक बने रह सकते हैं। पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज को आचार्य बना दिया तो भक्तों में खलबली मची। जोधपुर में पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज ने चद्दर खोली। ये भी आचार्य, वे भी आचार्य।

यह मरुधरा का वृत्तांत है। आप अधिकांश जो यहाँ बैठे हैं मरुधरा के निवासी हैं, भले ही व्यापार- व्यवसाय के कारण यहाँ रहते हैं। सारा उपकार पूज्य श्री भूधर जी का रहा। भूधर वंश की तेजस्विता का क्या कहें, उनके रत्नों में पूज्य रघुनाथ जी, पूज्य जयमल जी, पूज्य जेतसीजी, पूज्य कुशलोजी ये चार प्रमुख थे। यों भूधर जी महाराज के नौ शिष्य थे। सब महापुरुषों में साधना-आराधना की तेजस्विता थी। हम उनके बताये रास्ते पर चलें तो तेरी-मेरी न रहेगी, कलह-फसाद नहीं होगा। उनकी भावना को देखकर एक-दूसरा एक-दूसरे के गुणों पर प्रमुदित हो तभी हम आगे बढ़ सकते हैं। अहिंसा अणुव्रत की साधना तभी होगी जब माथा शान्त होगा। 'क्षम्' सामर्थ्य की धातु है। सामर्थ्यवान् क्षमा कर सकता है।

उस भाई ने लाठी का प्रहार कर दिया। खून की धारा बहती है। पहले उसे छोड़ा जाए। वह भाई छोड़ा गया। छूटते ही पूज्य श्री भूधर जी महाराज के चरणों में गिरता है और दीक्षित हो जाता है।

गुणानुवाद से हम अहिंसा भगवती की आराधना में चरण बढ़ा सकते हैं। एक अणुव्रत की आराधना अच्छी तरह से है तो दूसरे अणुव्रतों की साधना भी सहज हो सकेगी।

भक्ति विनय बहुमान संग, प्रभुवीर वाणी रमता चलूँ। ■

प्रवचन

अतीत का सुधार : प्रतिक्रमण का आधार

मधुरव्याख्यानी पं. रत्न श्री जयमुनि जी म.सा.

पंजाबी सन्त आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के शिष्य पं. रत्न श्री जयमुनि जी म.सा. द्वारा महिलाबाग स्थानक, जोधपुर में 15 मार्च,2009 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

''पडिक्मणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। पडिक्कमणेणं वयच्छिद्दाइं पिहेइ....''

प्रतिक्रमण के सम्बन्ध में कई दिनों से चर्चा चल रही है। प्रतिक्रमण बहुत बड़ा कार्य सम्पन्न करता है। यह षट् आवश्यकों में चौथा आवश्यक है। पहला आवश्यक है सामायिक, दूसरा चउवीसत्थव, तीसरा वन्दना और चौथा प्रतिक्रमण। गुजरे हुए समय में की गई क्रियाओं का, अतीत को खंगालने का काम प्रतिक्रमण करता है। यह भारतीय चिन्तन का उज्ज्वल पहलू है। यह पॉजीटिव थिंकिंग है। अतीत को छोड़ना, अतीत को झिंझोड़ना, अतीत से कुछ निकालना बहुत मायने की बात है। कई बार अतीत को छोड़ना भयावह भी हो जाता है। क्योंकि अतीत की यादें कुछ कड़वी तो कुछ मीठी होती हैं। अतीत की मीठी बातें याद आती हैं तो जिन्दगी में बहार आ जाती है और अतीत की कड़वी बातों से जीवन कटु हो जाता है। कड़वी बातें याद आती हैं तो दुश्मन का चेहरा आँखों के आगे आ जाता है। पुरानी बातों को याद करने से आदमी इतना लाल-पीला हो जाता है मानो आँखों से अंगारे बरसते हैं। अतीत को छोड़ना भी आसान नहीं है। अतीत को छोड़ना प्रतिक्रमण है। जो कुछ पाया है, जिन लोगों के साथ जैसा बर्ताव रहा उसको याद करो और जो मधुर यादें हैं उनको पास रखो, कटु यादें जो भी हैं उनको निकाल बाहर फेंको। यह बात एक व्यक्ति पर लागू होती है तो समाज पर भी लागू होती है। समाज का भी अतीत होता है। समाज के अतीत पर कई बार गर्व होता है तो कई बार ग्लानि भी होती है। हमारा सारा का सारा इतिहास भव्य रहा है ऐसा नहीं, हमारा इतिहास निकृष्ट भी रहा है।

हमारा वर्तमान अच्छाई और बुराई का पुञ्ज है। इसी तरह अतीत भी अच्छाइयों एवं बुराइयों का पुञ्ज रहा है। गाँधीजी ने एक आन्दोलन चलाया- सविनय अवज्ञा आन्दोलन। गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन की सारे भारत में तैयारी हो गई। गांधी जी का चिंतन था कि इस प्रकार के आन्दोलन से पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ हो जायेगा।

गाँधीजी हर काम अहिंसक पद्धति से करते थे। उनके आन्दोलन में प्रायः न तोड़फोड़ होती, न मारकाट होती, न पत्थर बाजी होती। वे कहते थे- लाठी-गोली नहीं चलेगी। बस, आन्दोलन में अंग्रेजों की बात नहीं मानेंगे। महात्मा गांधी के इस चिन्तन से काँग्रेस में जान आ गई। पूरे देश में जोश छा गया।

गाँधीजी का आन्दोलन शुरू हुआ उस दिन एक दुर्घटना हो गई। उत्तरप्रदेश के एक गाँव में कुछ आन्दोलनकारियों ने पुलिस थाने को आग लगा दी। आग में पुलिस वाले जल मरे। यह सन्देश गाँधीजी को मिला तो उन्होंने बिना किसी की सलाह लिए घोषणा कर दी कि आज से सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस लिया जाता है।

आन्दोलन के लिए देशवासियों में कितना उत्साह था वह सब धरा का धरा रह गया। काँग्रेसी भी कहने लगे क्या गाँधीजी पागल हो गये? एक गाँव के लोगों ने गलती कर दी तो क्या उससे सारा देश दुःख भोगेगा? गाँधीजी को पता था कि इस फैसले से बड़े-बड़े काँग्रेसी ही नहीं, देश के लोग भी नाराज होंगे। लोगों का तर्क होगा कि ऐसी छुटपुट घटनाएँ तो होती रहती हैं। उस घटना से आन्दोलन वापस लेना क्या उचित है? गांधीजी से कई लोगों ने सवाल पूछा तो उनका कहना था कि जब मुझे लगा कि मेरा फैसला गलत था तो मैंने उस फैसले को वापस ले लिया। देश अहिंसा के लिए तैयार नहीं था, इसलिए गाँधीजी ने फैसला वापस लिया, लेकिन इस तरह फैसला वापस लेना कितना मुश्किल होता है? इसे बोलते हैं प्रतिक्रमण।

अपनी भूलों का निराकरण करना प्रतिक्रमण है। भारत में हजारों साल पहले मानवता को चार भागों में बाँट दिया गया। चार वर्ग बना दिये गये। एक ब्राह्मण, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य और चौथा शूद्र। जब ये वर्ण बनाए गये थे

तब वर्ण बनाने वालों का लक्ष्य अपवित्र नहीं था। गीता में भी लिखा है कि चतुर्वर्ण गुण और कर्म के आधार पर बनाए गये हैं। ऋषभदेव भगवान् ने तीन वर्ण बनाए। भरत के आने पर चार वर्ण बन गये। उस व्यवस्था को जड़ बना दिया। जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि बनने लगे जो आगे चलकर एक अभिशाप बन गया। किन्तु यह ध्यान रखने योग्य बात है कि जिससे भी मानव जाति में विषमता पनपे उस व्यवस्था को बदल देना चाहिये। भले ही हमारे पुरखों ने चालू किया, किताबों में लिख दिया गया, तो भी उस व्यवस्था को छोड़ने की जरूरत है। क्योंकि आज उस व्यवस्था की उपयोगिता नहीं है। किन्तु धार्मिक आदमी इस तरह के निर्णय लेने में कमजोर होता है।

अतीत से जुड़ी हर बात वर्तमान को कमजोर कर सकती है। अतीत के सागर में मोती हैं तो दलदल भी है। आदमी मोतियों के लोभ में दलदल को छाती से कब तक चिपकाये रखेगा?

एक आदमी ने कहा- यह कुँआ मेरे दादा का बनाया हुआ है। कुँए का पानी खारा है तो भी दादा का बनाया हुआ है इसलिए खारा पानी होते हुए भी वह उसी पानी को पीता है। घर पर नल का पानी मीठा है, लेकिन दादा का बनाया कुँआ है इसलिए पानी तो उसी कुँए का पीना है। यह है अतीत की भूल को भूल नहीं मानकर उस पर चलते रहना। यह गर्व का विषय है क्या? इस पर चलते रहने से पूर्वजों का सम्मान नहीं होने वाला। यह तो पूर्वजों की भूल का अपमान है। ऐसी भूल का संशोधन होना चाहिये। यदि हम अतीत की भूलों का संशोधन करते हैं तो इससे हमारे पूर्वज गौरवान्वित होंगे, सोचेंगे हमारी भावी पीढ़ी ने हमारी लाज रख ली। यदि वे हमारी भूल में संशोधन नहीं करते तो हमें शर्मिन्दगी महसूस करनी पड़ती। संस्कृत के कवि भवभूति ने कहा-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यं।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धयः॥

कहा- जो भी पुराना है वह सारा-का-सारा अच्छा नहीं है। अतीत के बने नियम सारे के सारे गलत हैं ऐसा नहीं है और सारे के सारे नियम सही हैं ऐसा भी नहीं है। अतीत की भूलों को छोड़ देना प्रतिक्रमण है। आप गलत को कब छोडेंगे? जब आप गलत को गलत समझेंगे। कुछ व्यक्तिगत गलतियाँ हैं, कुछ

सामाजिक तो कुछ राष्ट्रीय गलतियाँ हैं।

भारत के इतिहास में चार वर्णों में मनुष्य जीता था। एक हावी हो गया, एक वर्ग पैरों के नीचे कुचला गया, रौंदा गया। बीच का तबका था उस पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। वह किसी की सुनता तो किसी को सुना भी देता था।

एक तालाब के किनारे तीन मेंढ़क थे। ऊपर वाला आवाज करता टरक-टम भई टरक टम। बीच वाला कहता- न खुशी, न गम। नीचे वाला बोलता- तुम्हारा क्या बिगड़ा मरे तो हम। समाज का एक वर्ग ऐसा है जिस पर किसी का ध्यान तक नहीं। वह तिरस्कार सहता है, अपमान सहता है। ऊपर वाले को चिन्ता नहीं। बीच वाले को कोई गुस्से से कहता है तो वह नीचे वाले को सुनाकर गुस्सा उतार देता है। पर जो सबसे नीचे दबा- पिछड़ा है वह किससे कहे? क्या कहे? एक छोटा-सा बच्चा रूआंसा होकर बैठ गया। पूछा-"तू उदास क्यों? यह रोनी सूरत क्यों बना रखी है?" वह बोला- "मैं घर में सबसे छोटा हूँ।" अरे, छोटा है तो अच्छा है, सबका प्यार जो मिलता है। उसने कहा- "नहीं नहीं जिसके भी मन में आती है वह थप्पड़ मार देता है।"

गाँधीजी की एक बात याद आ रही है। एक छोटा बच्चा उनके पास बैठा था। गाँधीजी ने बच्चे के गाल पर प्यार से धीरे-धीरे ही सही तमाचा मार दिया। बच्चे को भी पता नहीं क्या सूझी उसने भी धीरे से गाँधीजी के चपत लगा दी। उस वक्त अब्दुल गफ्फार खान जो छः फीट का जवान था, यह नज़ारा देख रहा था। खान ने गाँधीजी से कहा- आप मेरे भी धीरे से तमाचा मार दें। गाँधीजी हंस कर बोले- "मैं तेरे तमाचा लगा तो दूँगा, पर यदि बच्चे की तरह तूने वापस तमाचा जड़ दिया तो मेरा क्या हाल होगा?" सबसे दबे-पिछड़े वर्ग पर कितने जुर्म हुए, कितने लोग कुचले गये आपको सोचना होगा। आप अगर यह नहीं सोचते हैं और एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय करते रहे, बोलते रहे, पढ़ते रहे तो क्या जीवन बन सकेगा? आप जब तक यह नहीं सोचते कि हमें अतीत के पापों को छोड़ना है तब तक चाहे कितनी बार प्रतिक्रमण कर लो जीवन का निर्माण होने वाला नहीं है। अतीत की भूलों को हटायेंगे तभी आप वर्तमान में जीने की कोशिश कर सकते हैं।

आप आध्यात्मिकता में रहें, किन्तु दृष्टिकोण वैज्ञानिक होना

चाहिये। धर्म कहता है- जो था वह अच्छा था। जितने भी पुराने आचार्य हुए उन्होंने कुछ गलत नहीं किया होगा। हम पूर्वाचार्यों का पूर्वजों का सम्मान करें, पर उनकी बात चाहे उपयोगी है या नहीं आँख मूँद कर नहीं अपनाएँ।

जैन धर्म में भगवान् महावीर के एक हजार वर्ष के बाद दो हजार वर्ष तक समाज में आडम्बर चलता रहा। उस समय कितने आचार्य हुए होंगे। अनेक आचार्य हुए, लेखक और विद्वान हुए होंगे, जिन्होंने मन्दिर-मूर्तियाँ, आडम्बर, रथ यात्राएँ और न जाने कितनी-कितनी स्तुतियाँ की होंगी, क्या हम उन सबको स्वीकार कर लें। अगर सभी स्वीकार कर ली जाती तो कोई लोंकाशाह नहीं बन पाता। लोंकाशाह ने कहा- कुछ चीजें हैं जो हमें स्वीकार नहीं। कुछ लोग कहते हैं-अकेला क्या कर सकता है? किन्तु करने वाला है तो एक भी बहुत कुछ कर सकता है और नहीं करें तो बहुत से होकर भी कुछ नहीं कर सकते। होना चाहिये मन में डिटरमिनेशन।

अब जमाना आडम्बर का नहीं रहा। हमारा जीवन भी आडम्बरहीन होना चाहिये। हम त्याज्य को त्याज्य तो कहें। मैं वर्तमान को अतीत से ज्यादा पावन मानता हूँ। इतिहास के पत्ते पीले पड़ गये हैं, वर्तमान के पत्ते हरे हैं, ऊर्जावान हैं। पीले पत्ते झड़ेंगे तभी नई कोंपले आयेंगी। कुएँ का पानी नहीं निकाला जाएगा तो नया पानी नहीं आ पायेगा। यह बात जो पत्तों के लिए कही है, पानी के लिए है, हम संतों के लिए भी है-

बहता पानी निर्मला, पड़िया सो गंदा होय।
साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय॥

मैं विहार की बात नहीं कर रहा हूँ। जीवन बहता हुआ होना चाहिये। भजन की कुछ कड़ियों के माध्यम से कहना चाहूँगा कि सब लोग बिगड़ गये हैं ऐसा नहीं। हमारे बुजुर्ग भगवान के समान हैं, पर उन्हें भी गलत अतीत को भुलाना चाहिए।

समय जिसमें हम जीते, वही अच्छा जमाना है।
गये युग की स्तुति करके निरर्थक खेद पाना है॥
न मौलिकता थी कम पहले, न कम अध्यात्म है अब,
अहिंसा सत्य और संयम जो पहले थे वे हैं अब भी,
जो हैं नाराज इस युग से उन्हें भी तो मनाना है।

यह ललकार है, चुनौती है। हमने पहले गलतियाँ की होंगी तो क्या उन गलतियों का बोझ सिर पर उठाये फिरें? यह सम्प्रदायवाद का भेद क्या भविष्य में बंटवारा नहीं करायेगा? वर्तमान में नई सोच की जरूरत है। अतीत का जो भी अच्छा है उसे ले लेना चाहिये और जो अच्छा नहीं है उसे छोड़ देना चाहिये। **I do not read History because it has no future**। इतिहास का कोई भविष्य नहीं है। उस इतिहास को मत पढ़ो जिसका कोई भविष्य नहीं है। आपका आउटलुक आगे बढ़ना चाहिये।

लोग कहते हैं- आज भौतिकता का भयंकर दौर चल रहा है। भौतिकता पहले क्या कम थी? जिसमें ताकत थी वह खूब बटोरता था। पहले भी लूटमार होती थी। पहले भी लड़ाइयाँ लड़ी जाती थीं। लूट-मार और लड़ाइयाँ पहले से आज कुछ कम हुई हैं। आज सौ में से निब्बे बेईमान हैं। तो भी मेरा भारत महान्।

हम झूठा दंभ नहीं पाल सकते।
धर्म के स्थान ज्यादा है, धर्म का ज्ञान ज्यादा है,
मनुज जीवन की कीमत क्या है यह पहचान ज्यादा है।
है टलते जंग ज्यादातर हुआ मानव सयाना है।।

आप एक सर्वे करा लें कि आज स्थानक कम हैं या ज्यादा? मन्दिर ज्यादा हैं या कम हैं? शिविर ज्यादा लग रहे हैं या कम? स्वाध्यायी ज्यादा हैं या कम? आज तो छोटे-छोटे बच्चों को भक्तामर और प्रतिक्रमण याद है। आज मनुष्य जीवन की कीमत ज्यादा होने लगी है। आपने सुना होगा- एक बच्चा- प्रिंस बोरवेल में गिर गया तो उसे बचाने के लिए मानो पूरा देश उमड़ गया। बच्चे को बचाना है इस रूप में अहिंसा खुलकर देखी गई। अहिंसा का यह नया पहलू उजागर हो रहा है। लड़ाइयाँ पहले भी होती थीं, आज भी होती हैं, पर आज कहीं लड़ाई हो तो विश्व खड़ा हो जाता है उसे रोकने के लिए।

हैं पशुओं-पक्षियों पर भी जुल्म पहले से कमतर ही,
बोलने के सलीके भी हुए पहले से बेहतर भी।
सहानुभूति समता ने किया मन में ठिकाना है।।

पहले मानव अधिकारों के बारे में कानून नहीं थे, आज ग्निमल

राइट्स बन गये हैं। लोग पशुओं पर होने वाली क्रूरता को बचा रहे हैं।

साइन्स ने भी मनुजता को नई शैली दी जीने की
डेमोक्रेसी के कारण हुई, वेल्यू पसीने की
पुरानी पीढ़ी से ज्यादा नयों ने सत्य जाना है।

आज पचास साल का ब्यौरा ले लें। जब करोड़पति आदमी गर्मी में गर्मी का एवं सर्दी में सर्दी का अनुभव करता था, आज.....? मैं सुविधा का समर्थक नहीं हूँ, पर पहले गरीबों का मजदूरों का कोई अधिकार नहीं, आज पसीने की कदर की जाने लगी है।

न सब कुछ श्रेष्ठ था पहले, न सब कुछ दुष्ट है अब भी
अच्छाई और बुराई जो भी पहले पुष्ट है अब भी,
न कोसें आज के दिन को इसे भी तो सराहना है।।

अतीत को हम सदा नमन करते हैं, नमन करते रहेंगे। अतीत में हमारे आचार्य भूधर जी महाराज हुए जयमल जी महाराज हुए तो हमारे वहाँ आचार्य सोहनलाल जी महाराज हुए व्याख्यान वाचस्पति मदनलालजी महाराज हुए संयम सुमेरू मयाराम जी महाराज हुए तो संघशास्ता सुदर्शनलाल जी महाराज हुए। हम उनके ही भरोसे नहीं रहें। हमें भी कुछ संवारना चाहिये। हम भूतकाल की गलतियों को सुधारें। यही भगवान महावीर का मंगल संदेश है।

मौन का महत्त्व

सौ. कमला सिंघवी

आत्म-साधना में मौन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मौन समस्त साधनाओं की उर्वरा भूमि है। ध्यान, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग आदि सभी साधनाएँ मौन के सद्भाव में साधक को लक्ष्य तक शीघ्र पहुँचा सकती है। मौन से साधना में बल प्राप्त होता है एवं चित्त की बहिर्मुखी वृत्तियाँ अन्तर्मुखी बन जाती हैं। अन्तर्मुखी बनने पर ही आत्मिक शक्तियों का विकास व काषायिक प्रवृत्तियों का शमन होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में मौन का अत्यधिक महत्त्व है। मौन आत्मोन्नति का उच्चतम द्वार है। मौन मन को एकाग्र करने में सहायक होता है। मौन के साथ की गयी साधना अनेक गुणी फलदायिनी होती है। मौन से शक्ति का वर्धन होता है। मौन के साथ विवेक का प्रकाश होने पर मौन का फल लक्ष्य तक पहुँचाने में अधिक सहायक होता है।

-अध्यापिका, जैन पाठशाला, 'ज्ञान मन्दिर', भड़गाँव (महा.)

चिन्तन

धर्म : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री
(उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. के शिष्य)

धर्म वस्तुतः संवर और निर्जरा के रूप में उभयात्मक है। धर्म के विविध रूप हैं। इस विराट विश्व में धर्म ही एक ऐसा सर्वथा मौलिक तत्त्व है, जो प्राणिमात्र का प्रधान आधार बन सकता है। वस्तु-मात्र के स्वभाव को 'धर्म' कहा जाता है। आत्मा का स्वभाव शुद्धतम ज्योतिर्मय है। वह ज्ञान-दर्शन रूप आलोक से आलोकित है। यह आत्मा का धर्म है। धर्म का जीवन में संयम के रूप में आचरण हो, तभी धर्म अपना प्रभाव प्रकट करता है। धर्म का लक्षण आचार किं वा सच्चरित्र है। जिसमें जीव मात्र के प्रति करुणा की उत्कट भावना हो, वह धर्म है। सदाचार और अहिंसा को धर्म का लक्षण बताया गया है। वास्तव में संक्षेप और विस्तार इन दोनों ही शैलियों से धर्म तत्त्व के सन्दर्भ में गहन चिन्तन किया गया है।

अहिंसा अथवा सदाचार में धर्म का समग्र तत्त्व समा जाता है। विस्तार से समझना चाहें तो विविध अपेक्षाओं के माध्यम से धर्म का सम्पूर्ण स्वरूप समझा जा सकता है। धर्म का वर्गीकरण दो प्रकार से हुआ है- प्रथम श्रुत धर्म है और द्वितीय चारित्र धर्म है। श्रुत का अभिप्राय 'ज्ञान' है, जबकि चारित्र का आशय 'आचार' है। आचार के पूर्व विचार, क्रिया के पूर्व ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है, अनिवार्य है। जिस ग्राम में हमें जाना है, उस ओर बढ़ने से पूर्व उस ग्राम का मार्ग जान लेना अनिवार्य हो जाता है। जब तक हमें ग्राम में मार्ग का परिज्ञान नहीं होगा, तब तक हम इधर-उधर भटकते रहेंगे। परिणामतः लक्ष्य-बिन्दु तक नहीं पहुँच पायेंगे। इसलिये क्या आचार पालना, कैसी क्रिया करना, इसका सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिये। वस्तुतत्त्व का सम्यक् रूपेण ज्ञान करना तत्पश्चात् प्राप्त किये हुए ज्ञान का आचरण करना धर्म है। इस प्रकार दो चरणों में धर्म का समग्र-स्वरूप समाहित हो जाता है। यह ध्यान रखा जाय-एक चरण से नहीं चला जायेगा। एक चक्र से रथ नहीं चलेगा। एक मात्र ज्ञान द्वारा मुक्ति-

प्राप्ति कदापि संभव नहीं है। एक मात्र चारित्र द्वारा भी मुक्ति प्राप्त कर लेना संभव नहीं है। ज्ञान और क्रिया अथवा विद्या एवं आचरण इन दोनों के समीचीन समन्वय से मोक्ष होगा। इसी दृष्टि से धर्म का द्वि तत्त्वात्मक स्वरूप परिस्पष्ट किया गया है। विचारात्मक धर्म वास्तव में तत्त्व की सम्यक्-परीक्षा, विचारों में अनाग्रह, सहिष्णुता तथा प्रत्येक तत्त्व के प्रति सम्यक् विवेक है। आचारात्मक धर्म वस्तुतः आत्मा की निर्मलता एवं जीवन-व्यवहार में शुद्धता है। धर्म के चार द्वार भी हैं- क्षमा, संतोष, सरलता और विनय। इन चतुर्विध धर्मद्वार का जीवन में विशेष महत्त्व है। दान, शील, तप और भाव- यह चार प्रकार का धर्म है। इन में अन्तिम धर्म 'भाव' है। प्रकारान्तर रूप से ऐसा कहा जा सकता है कि दान,शील और तप भी तभी मुक्ति के मार्ग होते हैं, जब उनमें भाव होगा। भावना से शून्य दान, शील और तप भी स्वल्प रूप से फलप्रद होते हैं। इसीलिये इन तीनों को अन्त में भाव के साथ जोड़ा गया है। दान के साथ में दान देने की विशुद्ध भावना होगी, शील-पालन में भी निर्मल-भावना होगी और तप करने में भी शुद्ध भाव होगा तभी वे तीनों मुक्ति-प्राप्ति के कारणभूत होंगे। इसलिये यह कथन शत-प्रतिशत रूप से यथार्थपूर्ण है कि भाव शून्य आचरण कदापि सिद्धि प्रदायक नहीं होता।

धर्म के क्षेत्र में भाव की अतिशय उपयोगिता रही है। भाव एक कुंजी है, जिससे धर्म रूप द्वार उद्घाटित किया जाता है, खोला जाता है। भाव वस्तुतः एक औषधि है, जिसके माध्यम से भव रूपी रोग की चिकित्सा की जाती है। भाव एक ऐसी परम शक्ति है, जो प्रत्येक धर्म-क्रिया में और जीवन में अपना प्रभाव दिखाती है। धार्मिक और आध्यात्मिक-समुत्थान में भाव एक प्रमुख आधार है। भावना के स्थान पर 'अनुप्रेक्षा' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। जहाँ द्वादश विध तप का विस्तार से विचार हुआ है, वहाँ पर ध्यान तप के प्रकरण में 'धर्म ध्यान' की चतुर्विध-अनुप्रेक्षा प्रतिपादित हुई है। उस अनुप्रेक्षा का अभिप्राय 'भावना' से रहा है। एकत्वानुप्रेक्षा, अनित्यानुप्रेक्षा, अशरणानुप्रेक्षा और संसारानुप्रेक्षा ये धर्म ध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ हैं। इन अनुप्रेक्षाओं का धर्मध्यान के विषय में विशेष महत्त्व है। अनुप्रेक्षा की साधना में अध्यात्म साधक चिन्तन-मनन तक ही सीमित रहता है, किन्तु धर्म ध्यान की भूमिका में इन

अनुप्रेक्षाओं पर अपना मन केन्द्रित करता है। एकत्व भावना के ध्यान में साधनाशील साधक स्वयं को एक देखता है अर्थात् राग, द्वेष आदि कषाय से अपनी आत्मा को विमुक्त देखता है। पर्याय की अपेक्षा से अनित्य अनुभव करता है। अशरण अनुप्रेक्षा के द्वारा शुद्ध-भावों को ही एक मात्र शरण एवं त्राता अनुभव करता है। संसारानुप्रेक्षा में वह निश्चित रूपेण ममत्व-विसर्जन की विशिष्ट साधना करता है और यह धर्म प्रधान आराधना साधक को मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करती है। वह बहिर्जगत् से अन्तर्जगत् की ओर गतिशील होता है। किं बहुना आत्मा परमात्म भाव को प्रगट करने में तन्मय हो जाता है, पर भाव से स्वभाव में स्थिर और स्थित होता है।

इसी परिपार्श्व में यह ज्ञातव्य है कि साधक की वह क्रिया और विचारणा, जिनमें धर्म की प्रमुखता हो, तथा आर्त-रौद्र परिणाम भी न हो, धर्म-क्रिया में परिगणित होती है। सामान्य रूपेण उन्हें 'धर्म ध्यान' कहा जाता है, किन्तु योग की दृष्टि से धर्मध्यान का अभिप्राय कुछ और अधिक गम्भीर है। सामान्यतः धार्मिक-अनुचिन्तन और तात्त्विक-विचारणा को धर्मध्यान कहा जाता है, तथापि जो तपोयोगी साधक है, उसका धर्मध्यान तत्त्व-चिन्तन एवं तत्त्व-विचारणा से और भी गहरा होकर तत्त्व-साक्षात्कार तक पहुँच जाता है। ध्यान योगी साधक अपने उत्कृष्ट और निर्मल अध्यवसाय की प्रबलता से तत्त्वों के साक्षात्कार में प्रयासशील रहता है। प्रत्येक पदार्थ अनन्त पर्यायात्मक है, अनन्त धर्मात्मक हैं। ध्यान योगी साधक अपने ध्येय के लिये किसी भी एक अथवा अनेक गुणों, धर्मों और पर्यायों को ध्येय बना कर, उनका आलम्बन लेकर अपने चित्त को उन ध्येयों और आलम्बनों पर एकाग्र करता है, तब उसकी ध्यानयोग-साधना निश्चयतः सध पाती है। धर्मध्यान की साधना मोक्ष-प्राप्ति का परम्परा कारण है, प्रथम सोपान है। धर्मध्यान की साधना से वैराग्य की प्राप्ति होती है। मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक जागृति के लिये धर्मध्यान वस्तुतः विशेषतः उपयोगी है।

धर्म जन-जीवन का केन्द्र बिन्दु है। जन-जीवन की प्रधान-प्रेरणा है और वह अतिशय गूढ एवं व्यापक है। चेतन और अचेतन तथा व्यष्टि और समष्टि सभी के साथ धर्म का सम्बन्ध जुड़ा है। धर्म में 'जो है' और जैसा होना

चाहिये इन दोनों का अन्तर्भाव हो जाता है। सब के लिये अपने सहज स्वरूप में अवस्थित रहते हुए जो 'करणीय' है, उसको करना ही 'धर्म' है। सहज-स्वरूप अर्थात् आत्म-स्वरूप में स्थित रहना तथा आत्म-स्वरूप की प्राप्ति का प्रयास ये दोनों ही धर्म हैं। जो मानव के विकास में बाधक है, उसका संयम कर के जो ''जैसा होना चाहिये'' वैसा करना मानव का धर्म है। धर्म की यही भेद-रेखा मानव एवं पशु का भेदक तत्त्व है। इसी आधार से मानव में पशु और व्यक्ति के तत्त्व स्पष्टतः पहचाने जाते हैं। किं बहुना पशु और व्यक्ति में व्यावर्तन करने वाला 'धर्म' केवल प्रकृति मात्र ही नहीं अपितु प्रकृति का संयम और उसका उदात्तीकरण भी है। वह वस्तुतः प्राप्त वस्तु नहीं है, अपितु सम्पाद्य वस्तु है। अतएव उसका स्वरूप 'जो जैसा है' उसकी अभिव्यक्ति नहीं, अपितु 'जो जैसा होना चाहिये' उसकी अभिव्यक्ति है। धर्म यथार्थ अर्थ में 'अभ्युदय'तथा 'निःश्रेयस' की प्राप्ति का एकमात्र साधन है। अभ्युदय में लौकिक उन्नति और विकास का अन्तर्भाव है तथा 'निःश्रेयस' मोक्ष और पारमार्थिक कल्याण है। जिस सांसारिक 'अभ्युदय' से पारमार्थिक-कल्याण में बाधा पहुँचती है। उस अभ्युदय- का साधन 'धर्म' नहीं हो सकता है। जो धर्म अन्तर्विरोधों का जितना ही सम्यक् समाधान दे पाता है वह उतना ही व्यापक धर्म है। धर्म का मार्ग 'बहुजन हिताय' ही नहीं, अपितु सर्व जीव हिताय होता है। धर्म और अधर्म के अन्तर्विरोध में धर्म का निर्णायक मनुष्य का विशुद्ध अन्तःकरण है। पर ऐसा शुद्धतम अन्तःकरण केवल साक्षात् कृत धर्म का ही होता है। जिस कार्य में समष्टि का कल्याण निहित है और जो निःश्रेयस का प्रदाता है। वह कार्य अधर्म-मूलक नहीं होता है और आपततः दुःखप्रद प्रतीत भी नहीं होता है।

यह सत्य है कि जो अनुभूति काल में सुखकर है, वह केवल प्रेय है, परन्तु जो परिणाम में सुखकर है वही श्रेय है। श्रेय के लिये प्रेय का समर्थन अथवा श्रेय को ही प्रेय बना देना, वस्तुतः धर्म की सर्वोच्च-भूमिका है। अभ्युदय 'निःश्रेयस' के लिये ही है। निःश्रेयस-विरोधी अभ्युदय सर्वथा रूपेण परिहेय है। व्यक्ति के स्तर पर सर्वोच्च-अवस्था 'मोक्ष' है। सर्व धर्म उसी के लिये है। मोक्ष-प्राप्ति अंगी धर्म है और शेष सर्व अंग धर्म है। अंग भी अंगी के लिये छोड़े

जा सकते हैं, परन्तु धर्मानूकुल अभ्युदय की साधना निःश्रेयस अथवा मोक्ष का हेतु ही होती है इस दृष्टिकोण से अंग और अंगी का अन्तविरोध वस्तुतः कदापि नहीं होता है। केवल आपाततः प्रतीत भर होता है। साक्षात्कृत धर्मा ही इस अविरुद्ध स्थिति को स्पष्टरीत्या समझता है। अतएव उसी का आप्तवाक्य धर्म के लिये प्रमाण है। इतना सा कथन ज्ञातव्य है कि जो धारण किया जाय अथवा जो धारण करे, वह धर्म है। प्रत्येक वस्तु अपने धर्म को धारण करती है तथा धर्म वस्तु को धारण करते हैं। अग्नि में दाहकत्व है, पावक दाहकत्व धर्म को धारण किये हुए है। परन्तु यदि वह्नि में से दाहकत्व धर्म निकल जाए तो ऐसी स्थिति में अग्नि ही नहीं रहेगी। अतएव दाहकत्व धर्म अग्नि को धारण किये हुए है। अग्नि को अग्नि बनाए हुए है। अग्नि का अग्नि बने रहने का प्रयास भी धर्म है। इसी प्रकार मानव का मानव बना रहना एवं बने रहने का प्रयास ही वास्तविक धर्म है। मानवत्व मानव को बनाये हुए है और मानव मानवत्व धारण किये हुए हैं। ये दोनों ही धर्म के रूप हैं। जीव का स्वरूप स्थिति के लिये प्रयास ही धर्माचरण है तथा स्वरूप-स्थिति ही धर्म है। स्व-धर्म का परिपालन ही वस्तुतः मानव-मात्र को अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि प्रदान करने में सर्वदा एवं सर्वथा सक्षम है।

इसी परिप्रेक्ष्य में यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि श्रेयस की साधना ही धर्म है। साधनात्मक पक्ष ही चरम एवं परम रूप तक पहुँच कर सिद्धि बन जाता है। श्रेयस का आशय "आत्मा का सर्वतो भावेन विकास है, चैतन्य का निर्द्वन्द्व प्रकाश है। चैतन्य सर्वविध उपाधियों से सम्पूर्णतः मुक्त हो, चैतन्य स्वरूप हो जाए, उसका नाम धर्म है, श्रेयस है। वास्तविकता यह है कि श्रेयस की साधना भी चैतन्य की आराधनामयी साधना है। इस अपेक्षा से वह श्रेयस भी है। उसके दो-तीन, चार-दश इस प्रकार अनेक अपेक्षाओं से अनेक रूप हैं। पर वह सब विस्तार मात्र है। संक्षेप में आत्म-भाव में रमण करना ही धर्म है। ज्ञानमय और चारित्रमय आत्मा ही धर्म है। सत्य का संदर्शन होता है, तभी सत्य का ज्ञान हो जाता है। जहाँ सत्य का ज्ञान है, वहाँ उसका स्वीकरण हो सकता है। इस अपेक्षा के आधार से धर्म के तीन रूप बन जाते हैं और वे तीन रूप ज्ञान, दर्शन और

चारित्र हैं। जो चारित्र रूप धर्म है वह तितिक्षा योग की साधना है। यह श्रमण को सहनशील, परम-सहिष्णु, समतादर्शी और अभय बनाती है, साथ ही साथ उस की आत्मिक और चारित्रिक समुन्नति भी करती है। इतना ही नहीं, वह श्रमण के चारित्रिक समुत्कर्ष का साधन भी बनती है और वह उसके अध्यात्म-विकास का मार्ग है।

जो श्रमण धर्म है किं वा चारित्र धर्म है, उसका वर्गीकरण दश प्रकार से हुआ है- क्षमा, मुक्ति, आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, संयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य- ये तभी धर्म हो सकते हैं, जब इनका आचरण उत्कृष्ट भावों से किया जाता है। सत्य, संयम आदि जितने भी आत्मशुद्धि और इन्द्रिय-निग्रह के प्रकार हैं, वे वास्तव में धर्म हैं। आत्मा को परम-निर्मल बनाने का जो साधन है, वह धर्म है अथवा जिस साधना से मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह धर्म है, मोक्ष-प्राप्ति का जो भी उपाय है, वह धर्म है। यह स्पष्टतः समझ लेना चाहिये कि धर्म का जो भी स्वरूप है, वह मूलतः एक है। ज्ञातव्य है कि उक्त भेदों में सर्वाधिक प्रयोजकता रत्नत्रयी अर्थात् ज्ञान दर्शन और चारित्र की है। इस त्रयात्मक श्रेयोमार्ग अर्थात् मोक्ष मार्ग की आराधना करने वाला ही मोक्षगामी है। ज्ञान-दर्शन और चारित्र का त्रिवेणी-संगम प्राणिमात्र में होता है। परन्तु उससे साध्य सिद्ध नहीं हो पाता है। ये तीनों यथार्थ और अयथार्थ दोनों प्रकार के होते हैं। श्रेयस की साधना यथार्थ ज्ञान, यथार्थ दर्शन और यथार्थ चारित्र से होती है। साधना की दृष्टि से सम्यग्दर्शन का स्थान प्रथम है, सम्यक्ज्ञान का स्थान द्वितीय है और सम्यक् चारित्र का स्थान तृतीय है। दर्शन के बिना ज्ञान, ज्ञान के बिना चारित्र और चारित्र के बिना कर्म-मोक्ष तथा कर्म-मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं होता है। जब ये तीनों पूर्ण होते हैं। तभी साध्य सधता है।

धर्म में मानव को आत्मनियन्त्रण, मनोनिग्रह, देहदमन और संयम अवश्य करना होता है। कोई चाहे कि मैं धन से अथवा अपने प्रभाव से, सत्ता एवं बल से धर्म को खरीद लूँ, अन्य जन से धर्म करवाकर अपना कल्याण कर लूँ। धन की भाँति धर्म को छीन लूँतो इन उपायों से धर्म नहीं हो सकता। वास्तविकता यह है कि धर्म की कहीं खेती नहीं होती है। कहीं दुकान नहीं लगी

है, कहीं पर उपलब्ध भी नहीं है, जहाँ जाकर पैसा देकर अथवा शक्ति-प्रदर्शन कर उसे प्राप्त किया जा सके। धर्म वस्तुतः वैराग्य और श्रद्धा से उत्पन्न होता है। धर्म को उत्पन्न करने के लिये वैराग्य रूपी दृष्टि की नितान्त रूपेण आवश्यकता होती है। विनय किं वा विनम्रता धर्म रूपी महावृक्ष का मूल है और उसका अन्तिम फल 'मोक्ष' है। धर्म कल्पवृक्ष है। धर्म से असंकल्प्य और अचिन्त्य फल की प्राप्ति होती है। जो धर्म रूपी कल्पवृक्ष हैं, चिन्तामणि है, वह भौतिक कल्पवृक्ष एवं चिन्तामणि से बढ़कर है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि धर्म तत्त्व का केन्द्र बिन्दु ''स्व स्वरूपोलब्धि है। स्व आत्मा की सम्पूर्णतः स्वतन्त्रता एवं पूर्ण शुद्धि धर्म का ध्येय है। धर्म का अभिप्राय केवल चेतना का जागरण नहीं है, अपितु चेतना का ऊर्ध्वारोहण भी है। इसका प्रधान कारण यह है कि आत्मा स्वभावतः ऊर्ध्वगमन-स्वभावी है। सचमुच में धर्म जीवन का वह विज्ञान है, जो जीवन के प्रच्छन्न-रहस्य को खोजता है, खोलता है। स्वस्थ-जीवन, संतुलित अन्तर्मन और आत्मिक शक्तियों को अधिकाधिक विकसित करता है। संक्षेप में 'धर्म' साधना की वह विशिष्ट पद्धति है, जिसमें आचार की पवित्रता, ध्यान की दिव्यता और तप की भव्यता है। धर्म तत्त्व का एक मात्र यही परिलक्ष्य है कि मनोविकारों पर विजय-वैजयन्ती फहरा कर आध्यात्मिक समुत्क्रान्ति करना है। चित्त की वृत्तियाँ जन-जन को इतस्ततः भटकाती है और धर्म-साधना चित्त-वृत्तियों की उच्छृंखलता को नियन्त्रित कर देती हैं। वह उन वृत्तियों को परिष्कृत करती है, परिमार्जित भी कर देती है। जब धर्म आचरित होता है तब विवेक का तृतीय नेत्र भी समुद्घाटित हो जाता है, जिससे विकार एवं वासना विनष्ट हो जाती है। उस साधक का जीवन पवित्र एवं ज्योतिर्मय हो जाता है। यह स्मरण रखना होगा कि धर्मवाणी का विलास नहीं है और न कमनीय कल्पनाओं की गगन चुम्बी उड़ान है, अपितु यह जीवन जीने का भाष्य है। धर्म कोई वर्णनात्मक अथवा विवरणात्मक विषय नहीं है। अपितु कहा जा सकता है कि धर्म आत्मिक-साम्राज्य को सम्प्राप्त करने का पावन पथ है। अनास्था के घनीभूत-अन्धकार में धर्म एक ऐसा ज्योति स्तम्भ है, जो हमारे जीवन को प्रकाशमान कर देता है।

Research Paper

World's Problems and Jaina View-Point*(2)

Prof. Sagarmal Jain

Problem of Economic inequality and Consumer Culture

Economic inequality and vast differences in the mode of consumption are the two curses of our age. These disturb our social harmony and cause class-conflicts and wars. Among the causes of economic inequality, the will for possession, occupation or hoarding are the prime. Accumulation of wealth on the one side and the lust of worldly enjoyment of the other, are jointly responsible for the emergence of present-day materialistic consumer culture. A tremendous advancement of the means of worldly enjoyment and the amenities of life has made us crazy for them. Even at the cost of health and wealth, we are madly chasing them. The Vast differences in material possession as well as in the modes of consumption have divided the human race into two categories of 'Haves' and 'Have nots'. At the dawn of human history also, undoubtedly, these classes were existent but never before, the vices of jealousy and hatred were as alarming as these are today. In the past generally these classes were cooperative to each other while at present they are in conflicting mood. Not only disproportionate distribution of wealth, but luxurious life which rich people are leading these days, is the main cause for jealousy and hatred in the hearts of the poor.

Though wealth plays an important role in our life and it is considered as one of the four purusarthas i.e. the pursuits of life, yet it cannot be maintained as the sole end of life. Jainas, all the time, consider wealth as a means to lead a life and not a destination. In Uttaradhyana sutra it has been

*This Paper was presented in National Seminar on 'Relevance of Jaina way of life' at India International,Delhi on 6th-7th Feb. 2009.

rightly observed "that no one who is unaware of treasurer of one's own protect one-self by wealth[15]. But it does not mean that jaina acaryas do not realise the importance of wealth in life. Acarya Amrtacandra maintains that the property or wealth is an external vitality of man. One who deprives a person of his wealth commits violence. Jainas accept the utility of wealth, the only thing which they want to say is that wealth is always a means and it should not be considered as an end. No doubt wealth is considered as a means by a materialist and spiritualist as well, the only difference is that for materialist it is means to lead a luxurious life while for spiritualist, as well as Jainas, it is a means to the welfare of human society and not for one's own enjoyment. The accumulation of wealth in itself is not an evil but it is the attachment towards its hording and lust for its enjoyment, makes it an evil. If we want to save the humanity from class-conflicts, we will have to accept self imposed limitaion of our possessions and modes of consumption. That is why Lord Mahavira has propounded the vow of complete non-possession for monks and nuns and vow of limitation of possession for laities. Secondly, to have a check on our luxurious life and modes of consumption, he prescribed the vow of limitation in consumption. The property and wealth should be used for the welfare of humanity and to serve the needy, he prescribed the vow of charity named as Atithi samvibhaga. It shows that charity is not an obligation towords the monks and weaker sections of society but through charity we give them what is their right. In Jainism it is the pious duty of a house-holder to fix a limit to his possessions as well as for his consumption and to use his extra money for the service of mankind. It is through the observation of these vows that we can restore peace and harmony in human society and eradicate economic inequality and class conflicts.

Problem of Conflicts in Ideologies and Faiths

Jainism holds that reality is complex. It can be looked

at and understood from various viewpoints or angles. For example, we can have hundreds of photographs of tree from different angles. Though all of them give a true picture of it from a certain angle, yet they differ from each other. Not only this but neither each of them, nor the whole of them can give us a complete picture of that tree. They, individually as well as jointly, will give only a partial picture of it. So is the case with human knowledge and understanding also. We can have only a partial and relative picture of reality. We can know and describe the reality only from a certain angle or viewpoint. Though every angle or viewpoint can claim that it gives a true picture of reality, yet it gives only a partial and relative picture of reality. In fact, we cannot challenge its validity or truth-value, but at the same time we must not forget that it is only a partial truth or one-sided view. One, who knows only partial truth or has a one-sided picture of reality, has no right to discard the views of his opponents as totally false. We must accept that the views of our opponents may also be true from some other angles. The Jaina-theory of Anekantavada emphasises that all the approaches to understand the reality give partial but true picture of reality, and due to their truth-value from a certain angle we should have regard for other's ideologies and faiths. The Anekantavada forbids to be dogmatic and one-sided in our approach. It preaches us a broader outlook and open mindedness, which is more essential to solve the conflicts taking place due to the differences in ideologies and faiths. Prof. T.G.Kalghatgi rightly observes: "The spirit of Anekanta is very much necessary in society, specially in the present days, when conflicting ideologies are trying to assert supermacy aggressively. Anekanta brings the spirit of intellectual and social tolerance.

For the present-day society what is awfully needed, is the virtue of tolerance. The virtue of tolerance i.e. regard for others ideologies and faiths have been maintained in Jainism from the very beginning. Mahavira mentions in the Sutrakrtanga, 'those who praise their own faiths and

ideologies and blame those of their opponents and thus distort the truth will remain confined to the cycle of birth and death[17]. Jaina philosophers have always maintained that all the judgments are true by their own viewpoints, but they are false so far as they refute totally other's view-points. Here I would like to quote verses from works of Haribhadra (8th century A.D.) and Hemacandra (12th century A.D.), which are the best examples of religious tolerance in Jainism. In Lokatattvanirnaya Haribhadra says: "I bear no bias towards Lord Mahavira and no disregard to the Kapila and other saints and thinkers, whatsoever is rational and logical ought to be accepted[18]. Hemcandra in his Mahadeostotra says" "I bow to all those who have overcome attachments and hatred, which are the cause of worldly existence, be they Brahma, Visnu, Siva or Jina[19]. Thus, Jaina saints have tried all the times to maintain the harmony in different religious-faiths and tried to avoid religious conflicts.

The basic problems of present society are mental tensions, violence and conflicts of ideologies and faiths. Jainism had tried to solve these problems of mankind through the three basic tenets of non-attachment or non-possessiveness (Aparigraha), non-violence (Ahimsa) and non-absolutism (Anekanta). If mankind observes these three principles, peace and harmony can certainly be established in the world.

Problem of the Preservation of Ecological Equilibrium

The world has been facing a number of problems such as mental tensions, war and violence, ideological conflicts, economic inequality, political subjugation and class conflicts not only today but from its remote/past. Though some of these have assumed at alarming proportion today, yet no doubt the most crucial problem of our age is, or for coming generation would be, that of ecological dis-balance. Only a half century back we could not even think of it. But today every one is aware of the fact that ecological dis-balance is directly related of the very survival of human

race. It indicates lack of equilibrium or dis-balance of nature and pollution of air, water, etc. It is concerned not only with human beings and their-environment, but animal life and plant-life as well.

Jainism presents various solutions of this ecological problem through its theory of non-violence, Jainas hold that not only human and animal being, but earth, water, air, fire and vegetable kingdom are also sentient and living beings. For Jainas to pollute, to disturb, to hurt and to destroy them means commit the violence against them, which is a sinful act. Thus their firm belief in the doctrine that earth, water, air, fire and vegetables are sentient, paves the way for the protection of ecological balance. Their every religious activity starts with seeking forgiveness and repentance for disturbing or hurting earth, water, air and vegetation. Jainacaryas had made various restrictions of the use of water, air and green vegetables, not only for monks and nuns but for laities also. Jainas have laid more emphasis on the protection of wild-life and plants. According to them hunting is one of the seven serious offences or vices. It is prohibited for every Jaina whether a monk or a laity. Prohibitions for hunting and meat-eating are the fundamental conditions for being a Jaina. The similarity between plant-life and human life is beautifully explained in Ãcaraṅgasūtra. To hurt the plant life is as sinful act as to hurt human life. In Jainism monks are not allowed to eat raw-vegetables and to drink un-boiled water. They cannot enter the river or tank for bathing. Not only this, there are restrictions, for monks, on crossing the river on their way of tours. These rules are prevalent and observed even today. The Jaina monks and nuns are allowed to drink only boiled water or lifeless water. They can eat only ripe fruits, if their seeds are taken out. Not only monks, but in Jaina community some householders are also observing these rules. Monks and nuns of some of the Jaina sects, place a peace of cloth on their mouths to check the air pollution. Jaina monks are not allowed to pluck even a leaf or a flower from a tree. Not only this, while walking they always remain

conscious that no insect or greenery is trampled under their feet. They use very soft brushes to avoid the violence of smallest living beings. In short, Jaina monks and nuns are over conscious about the pollution of air, water etc.

So far as Jaina house-holders are concerned they take such vows, as to use a limited and little quantity of water and vegetables for their daily use. For a Jaina, water is more precious than ghee or butter. To cut forest or to dry the tanks or ponds are considered very serious offence for an house holder. As per rule Jaina house-holders are not permitted to run such type of large scale industries which pollute air and water and lead to the violence of plant-life and animal-kingdom. The industries which produce smoke in large quantity are also prohibited by Jainacaryas. The types of these industries are termed as 'maharambha' greatest sin and larger violence. It is considered as one of the causes for hellish life. Thus Jainas take into consideration not only the violence of small creatures but even earth, water, air, etc. also. The fifteen types of industries and bussiness, prohibited for the house holder are mainly concerned with, ecological dis-balance, pollution of environment and violence of living beings. Jainacaryas permitted agriculture for house-holders, but the use of pesticides in the agriculture is not agreeable to them, because it not only kills the insects but pollutes the atomosphere as well as our food items also. To use pesticides in agriculture is against their theory of non-violence. Thus we can conclude that Jainas were well aware of the problem of ecological dis-balance and they made certain restrictions to avoid the same and to maintain ecological equilibrium, for it is based on their supreme principle of non-violence.

References:

15. Uttaradhyayan, 4/5
16. Vaishali Institute Research Bulletin, No. 4,p.31.
17. Sutrakrtahga, 1/1/2/23.
18. Lokatattvanirnaya, Haribhadra, 3.8
19. Mahadevastotra, Hemcandra, 44

-Director Prachya Vidya Peeth, Shajapur (M.P.)

कविता

हमारे तारक सद्गुरु

श्री मनमोहनचन्द्र बाफना-कानपुर

रे मन, स्व को देख,
कौन, कौन है घेरे,
काम, क्रोध, मोह, राग, द्वेष के लुटेरे,
लोभ, परिग्रह के घेरे में बंधे,
यही हैं इनके चेले,
इसलिए सुप्त है, जीवन में धर्म शक्ति,
प्रसुप्त है आत्म-शक्ति
अनन्त-अनन्त गुणों की आध्यात्मिक हरियाली को कर दिया नष्ट,
इन मोह, ममता के टिड्डी दलों से,
बंजर हो रही मन भूमि, पड़ी है व्यर्थ,
इनकी कुसंगति से ही तू हुआ भ्रमित,
चेत हे साधक,
भावना की भूमि में, काया के हल से, तप एवं सत्संग से,
आत्म भूमि को जोत,
दर्शन, ज्ञान, चारित्र के बीजों को बोकर अन्तरंग कर,
क्रिया के खाद को दे दे कर,
प्रमाद को त्याग, परे हट जा उससे, अप्रमादी बन,
आगम वाणी, समता व क्षमा की नीर वर्षा करने वाले,
सद्गुरु पूज्य प्रवर से,
इतनी शक्ति पा, सबल पा, अब तो संभल जा मन,
मन में भक्ति की लगा कर बाड़ी
आत्मिक आनन्द की फसल उगा,
मौन, ध्यान, साधना, जप से गुणों के पुष्प लगा,
स्वाध्याय बाड़ से निरन्तर उसकी देखभाल करता चल,
फिर देखो कैसी महकती है, सौरभ से, सुरभित होती है,
अकथनीय, अलौकिक
ध्यान के शुद्ध उपजाऊ बयार से,

(शेषांश पृ. 116 पर)

प्रासङ्गिक

उच्चार-पासवण की समस्या

डॉ. जीवराज जैन

आधुनिक युग में साधु-साध्वियों की जीवन-चर्या में एक प्रमुख समस्या उच्चार-पासवण(शौच-निवृत्त्यादि) की है। डॉ. जीवराज जैन ने अपने ढंग से कुछ समाधान सुझाए हैं। यदि उपयुक्त एवं व्यवहारिक लगे तो उपादेय हैं।- **सम्पादक**

1. प्रस्तावना व समस्या-

अनर्थजा हिंसा- सिंगापुर आदि देशों में घूम कर आए जैनियों को हमारे समाज की उच्चार पासवण की विधि कतई रास नहीं आ रही है। वे बराबर रट लगाते हैं कि हमें क्षेत्र,काल, भाव के अनुसार 'फ्लश' सिस्टम को अपनाना चाहिए। कुछ लोग तो साधु-समाज से भी इसकी सिफारिश करते रहते हैं। हालांकि पूरा साधु-समाज या यों कहिये कि पूरा जैन समाज 'फ्लश' सिस्टम में महा-हिंसा मानता है। फिर भी कुछेक साधुओं ने तो द्रव्य,क्षेत्र, काल, भाव में 'काल' का सहारा लेकर इसको अपना भी लिया है तथा इसे शिथिलाचार की सूची या संज्ञा से हटा भी दिया है। कुछ ने केवल 'महानगरों' के लिए सीमित रखा तो कइयों ने छोटे-छोटे शहरों के लिए भी, यानी जहाँ 'फ्लश' उपलब्ध है, वहाँ उसका उपयोग करना शुरू कर दिया है।

संगठित प्रयास का अभाव- इस सब ऊहापोह में तथाकथित 'शुद्ध' आचरण बरतने वाले साधु-साध्वीजी अभी इस 'महा-हिंसा' से बच रहे हैं। इसमें ऐसा जरूर लगता है कि जैन समाज की रचनात्मकता कुंठित हो गई है। बजाय कोई अन्य विकल्प या समाधान पर चिन्तन और शोध करने, वे 'शोध-कार्य' के श्रम से जी चुराते रहे हैं। वे इसे अपने अर्थार्जन के कार्य क्षेत्र से कोसों दूर रहने के कारण, इससे कोई सरोकार नहीं रखना चाहते हैं। इससे तो वे अपनी उदासीनता व भीरूता का परिचय दे रहे हैं।

'काल' का सहारा लेकर, जिन साधुओं ने 'फ्लश-सिस्टम' को अपना लिया है, शायद उन्होंने जल्दबाजी में न तो समाज को उचित ढंग से प्रेरित किया और न उसमें अपने विवेक को महाहिंसा से बचने में लगाया है।

विवेक की कमी- सभी एकमत हैं कि फ्लश में हो रहे सचित्त पानी के उपयोग से

तथा फिर नाली द्वारा सीवेज में होने वाली हिंसा तो 'महा-हिंसा' की श्रेणी में आती है। इसको अनर्थजा हिंसा भी कह सकते हैं। अतः इसके प्रति आँख मूँद कर संमाज के जो घटक खुश हैं, उन्होंने तो एक साधारण विवेक द्वारा इस विकल्प पर भी ध्यान नहीं दिया है कि कम से कम 'फ्लश' वगैरह में काम आने वाले पानी की मात्रा ही कैसे अल्पतम की जाये। ज्ञात नहीं एकेन्द्रिय जीवों के प्रति करुणा की मात्रा क्यों कम हो गई?

सार्वजनिक गंदगी- यह सही है बड़े शहरों में लघुनीत और बड़े नीत के लिए साधु-संत शहर से बाहर नहीं जा पाते हैं। इसके लिए बालू मिट्टी जमा करके जो स्थानकों में व्यवस्था की जाती है, उससे नगरपालिकाएँ तथा अन्य समाज के लोग सहमत नहीं हो पाते है। वे इसको गंदगी व बदबू फैलाने वाली व्यवस्था समझ कर अमान्य करार देते हैं। समाज में जैनियों के प्रति घृणा व विरोध का वातावरण तैयार होने का मौका मिल जाता है। कुछ ही सक्षम लोग अपने पड़ौसियों को शांत रख पाते हैं।

समाधान के विकल्प- ऐसी परिस्थिति में क्यों नहीं हम समुचित समाधान के लिए बेहतर विकल्प ढूंढने का सघन प्रयास शुरू करें। क्यों हम आधुनिक युग में भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ बन कर बैठे रहें। कम से कम जो समाज 'फ्लश' शौचालय में होने वाली हिंसा से बचने की या महाव्रती साधु-समाज को बचाने की जिम्मेदारी समझता है, वह शीघ्र आगे आकर इस दिशा में अपने संसाधन लगा कर विकल्प ढूंढे। संकल्प मजबूत हो, तो सफलता अवश्य मिलेगी।

2. विकल्पों की सीमाएँ-

इस समस्या के समाधान के लिए मोटे तौर पर निम्नलिखित तरीके ध्यान में आते हैं। हमें किसी भी विकल्प पर विचार करने के पहले यह दृष्टिगत रखना होगा कि मलमूत्र विन्यास में या परठने में:

(1) हम अपनी नई विधि में किसी भी 'महा-हिंसा' को न जोड़ें।

(2) कोई हिंसा जुड़ती है, तो बिल्कुल अल्प हिंसा हो। अनर्थजा हिंसा से बिल्कुल बचें।

(3) तरीका व्यावहारिक व सुगम हो तथा अधिक खर्चीला न हो। समाज सहर्ष स्वीकार कर सके।

(4) उसमें दुर्गन्ध का समुचित निवारण हो।

(5) इसका प्रबंधन जीवोत्पत्ति का कारण न बने।

3. सुखाने की 'भौतिक अभिक्रिया'–

गीले या तरल पदार्थों **(Excreta)** को जितना जल्दी से जल्दी हो सके, सुखाकर सड़ने से बचाया जाय और दुर्गंध मिटाई जाय। इसके लिए–

(अ) सौर–ऊर्जा का भरपूर उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि वह अचित्त मानी गई है।

(ब) इसके साथ–साथ भौतिक–मिश्रण बनाने की विधि का भी उपयोग किया जा सकता है, जो ऊर्जा के भंडारण का काम करे तथा दुर्गंध को मिटाने में सहयोग दे। उदाहरण स्वरूप– बालू मिट्टी, गोबर और गोमूत्र।

उपर्युक्त दोनों का उपयोग कई तरह से हो सकता है। पाठकगण अपना सुझाव व सोच, स्थानीय स्तर पर प्रयोग करने में काम ले सकते हैं। यहाँ पर एक मानवीय बुजुर्ग श्रावक का नाम ध्यान में आता है। वे हैं श्रीमान् भरत भाई शाह, अहमदाबाद। मन में प्रगाढ़ उत्साह होने के कारण उन्होंने कुछ प्रयोग व्यक्तिगत स्तर पर किये भी। लेकिन यह काम योजनाबद्ध तरीके से संस्थागत रूप से हो, तभी वांछित सफलता मिल सकती है।

4. एक मोटा सुझाव इस प्रकार हो सकता है–

प्रयोगशाला–

(1) एक 3'x 3', 20 mm मोटाई की लोहे की चद्दर (प्लेट) ली जाय, जिस पर खाँचे इस प्रकार कटे हों कि तरल पदार्थ स्वतः बह कर ऊपर से नीचे चला जाय। (स्केच देखिये)

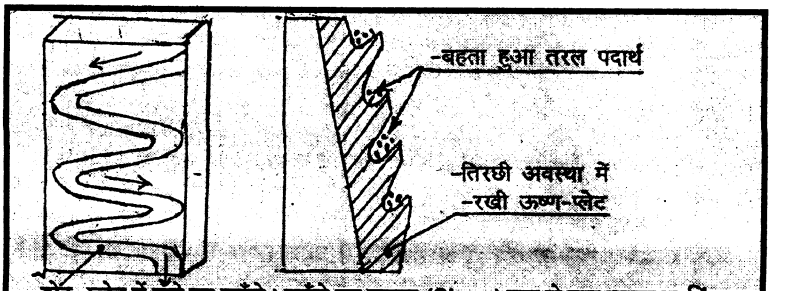

होट–प्लेट में कटे हुए खाँचे। खाँचे का ढलान (Slope) कम से कम रखना चाहिए। (पेशाब परठ कर सुखाना)

यहाँ लोहे की प्लेट को काले रंग से रंगा जा सकता है। यह प्लेट ताप ऊर्जा

का भंडारण करती है। जब परठने पर तरल पदार्थ बह कर नीचे आता है, तो काफी गर्म हो जाता है तथा इसको पूर्व में गर्म की हुई बालू के ढेर में गिरने दिया जाता है। यह बालू पास में रखी एक अन्य प्लेट पर स्पचूला से बिखेर दी जाती है। या पूर्व-गर्म की हुई बालू स्वयं एक समतल होट प्लेट पर ही गर्म हो रही होती है। इस विधि से तरल मूत्र इतना गर्म हो जाता है कि पर्याप्त बालू के साथ मिलने पर शीघ्र सूख जाता है।

(2) अर्द्ध-ठोस मल के लिए समतल होट-प्लेट उपयोग में ली जाय। उस ठोस को पूर्व गर्म की हुई बालू के साथ मिलाया जाता है और फिर उसको उस प्लेट पर स्पचूला (या एक कंगूरे वाले लोह खुरपे) से पतली चद्दर की तरह फैला **(Spread)** दिया जाय। यहाँ पर भी दो होट-प्लेट रखनी होती है। एक गर्म बालू के लिये और दूसरी बालू-मिश्रित ठोस को फैलाने के लिए।

ये दोनों प्लेटें, बालू व खुरपे, छत पर ही रखे जा सकते हैं। बारिश के मौसम के सिवाय, ये उपकरण हर मौसम में बहुत कारगर सिद्ध होंगे।

5. सुखाने का सिद्धान्त-

उपर्युक्त विधि में जो सिद्धांत अपनाया गया है, उसके खास प्रभावी बिन्दु ताप, नमी, वायुवेग और सतह का क्षेत्रफल है। इस विधि को अधिक उन्नत और प्रभावी बनाने के लिए निम्नोक्त उपाय अपनाये जा सकते हैं -

(1) उत्तम ताप-सुचालकता के लिए लोह प्लेट का उपयोग।

(2) शीघ्र सुखाने के लिए पिंड का अधिक से अधिक विस्तृत सतही क्षेत्रफल। इसके लिए गीले पिंड को पतली से पतली चद्दर के रूप में फैलाना।

(3) सूखे चूरे का मिश्रणः कुछ ऐसे पदार्थ मिलाना, जो निरापद हों। जैसे बालू मिट्टी मिला कर गर्म मिश्रण तैयार करना। इससे सतह के क्षेत्रफल के साथ-साथ ताप-ऊर्जा के अवशोषण की मात्रा बढ़ जाती है।

(4) इन तीनों सिद्धान्तों के अलावा, यदि एक धमनी (लोहार वाली) का प्रयोग कर सकें तो हवा के वेग से सूखने का समय आशातीत रूप से कम हो सकता है।

(5) सौर ऊर्जा को संकेन्द्रित करने से सूखने की गति तीव्र हो जायेगी। इसके लिए सौर-दर्पण (नतोदर)का उपयोग करने से होट-प्लेट व उसके ऊपर

रखे पिंड ('भार') को शीघ्र सुखाने में मदद मिल सकती है।

6. रासायनिक अभिक्रिया–

ये तरीके गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि हर ऋतु में कारगर रहेंगे। लेकिन समाज को आगे बढ़कर इनको उपयुक्त प्रौद्योगिकी द्वारा विकसित करना होगा।

निर्गंधीकरण–

(1) पेशाब में निरापद रसायनों को मिलाकर, उनकी दुर्गंध, खासकर मिथेन गैस को हटाना। इससे बदबू हट जायेगी, जिससे वातावरण बदबूदार होने से बचेगा।

(2) उसी प्रकार गीले ठोस पदार्थ में भी ऐसे रसायन मिलाना, जिससे उनकी बदबू पैदा करने वाली प्रक्रिया बंद हो जाये। गंधहीन मल को परठने में किसी को दिक्कत नहीं होगी।

7. क्या करना होगा?

(1) शायद ऐसे रसायन हवाई जहाजों के शौचालय में या अंतरिक्ष यान के शौचालय में प्रयुक्त हो रहे हैं। जरूरत है, उन कम्पनियों व संस्थानों से संपर्क करके, इनकी सूचना इकट्ठी करके जैन समाज को देना।

(2) कॉलेज व विश्वविद्यालयों में कार्यरत रसायन शास्त्र के प्रोफेसरों से संबंध साधकर, उनको यह कार्य एक प्रोजेक्ट के रूप में देना।

(3) ऐसी व्यावसायिक संस्था या पेशेवर लोगों को यह योजना सौंपना, जो इनमें विशेषज्ञता व रुचि रखते हों।

8. ग्रामीण स्तर पर कुछ अन्य सुझाव–

(1) उपर्युक्त विधियों में जो भी प्रयोग सुझाये गये हैं, उनको सबसे पहले गीली गोबर और गोमूत्र पर प्रयुक्त किया जाय। इससे प्रयोगकर्त्ता को घृणा नहीं होगी। कोई भी व्यक्ति गोबर और गोमूत्र के ऊपर प्रयोग करने से हिचकिचायेगा नहीं। बाद में यही विकसित विधि, मानव मल–मूत्र पर लागू कर सकेंगे। वास्तव में उद्देश्य है एक सुगम और माननीय 'मानक' तैयार करने का तथा ऐसे औजार व विधियाँ विकसित करना जो 'साधकों' के संदर्भ में बिल्कुल व्यावहारिक और निरापद हो सके।

(2) ये सब प्रयोग संस्थागत स्तर पर किये जायें। जिससे उनके आंकड़े

(Data) सर्वसुलभ हो और 'काइजन' **(Kaizen)** के सहारे उनमें विधिवत् उन्नयन किया जा सके।

(3) गोशालाएँ इन प्रयोगों के लिए अति उपयुक्त होंगी। उनसे संबंध स्थापित किये जायें। जलगाँव, मद्रास आदि कई शहरों में तो जैन लोग भी गोशालाएँ चलाते हैं। अतः थोड़ा संकल्प बढ़ाया जाये तथा स्वप्रेरणा को महत्त्व दिया जाये तो अगले 5-6 महीने में ही सकारात्मक निष्कर्ष आने शुरू हो सकते हैं।

(4) 'गोशाला' वालों से तो निवेदन है कि मानव के ठोस व तरल पदार्थ को गोबर में मिलाकर यह सुनिश्चित करें कि इनको कितनी मात्रा में मिलाने से 'बदबू' दूर हो जाती है? सुखाने व रसायन मिलाने के प्रयोग तो बाद में द्वितीय व तृतीय स्तर पर लें। सबसे पहले मानव मूत्र और गोमूत्र के मिश्रण पर ध्यान दें। इसमें बहुत सरल व व्यावहारिक उपाय छुपा हुआ है।

(5) यह अवश्य है कि उपर्युक्त वर्णित हर विधि की अपनी-अपनी सीमाएँ **(Limitations)** हैं। उनको अभी आडे नहीं आने देना चाहिए। मौसम वगैरह के प्रभाव का बाद में मूल्यांकन किया जायेगा। अभी आवश्यकता है हर प्रकार के प्रयोग के परिणाम को प्रकाशित कर आपस में सूचना बांटने की।

9. चुनौती-अहम् प्रश्न उठता है कि क्या समृद्ध, संगठित समाज भी इस महत्त्वपूर्ण शोध में शरीक होने में तत्परता दिखा सकेगा? यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह निर्भर करता है हमारी दूरदृष्टि पर। इस समस्या का निकट भविष्य में कैसा विकराल रूप आयेगा, इसको ठीक से समझ पाने की हमारी क्षमता पर। अन्यथा विवेक क्षीण करके हम फ्लश-सिस्टम को इजाजत देते रहेंगे।

मेरा अंतिम सुझाव है कि जो संघ व संस्था आगे आये, वे इस पत्रिका या अन्य किसी मंच के माध्यम से समाज को अपनी भागीदारी से सूचित अवश्य करावें। अभी कोशिश यह होनी चाहिए कि अपनी प्रणाली व अभिक्रिया के तथा उसमें प्रयुक्त औजारों के मानक/मापदण्ड स्थापित करें, जिससे उनको और अधिक कुशल व व्यावहारिक बनाया जा सके।

-Kamani Centre, 2nd Floor, Bistapur, Jamshedpur-831001

10 मई 2009
जिनवाणी 47

ĀGĀRA-SŪTRA

Dr. Priyadarshana Jain

TEXT	TRANSLATION
Tassa	-For that soul (in bondage)
Uttarīkaraṇeṇam	-To evolve spiritually
Pāyacchitta- karaṇeṇam	-To expiate
Visohi karaṇeṇam	-To purify
Visalli karaṇeṇam	-To remove the thorns of delusions
Pāvāṇam	-Sins
Kammāṇam	-*Karmas*
Nigghāyaṇaṭṭhāe	-To annihilate
ṭhāmi	-I do
Kāussaggam	-The *Kāyotsarga*
Annattha	-Other than these
Ūsasīeṇam	-Inhaling/breathing in
Nīsasieṇam	-Exhaling
Khāsieṇam	-Coughing
Chīeṇam	-Sneezing
Jambhāieṇam	-Yawning
Uddueṇam	-Swallowing/belching
Vāyanisaggeṇam	-Removal of gas
Bhamalie	-Giddiness
Pittamucchāe	-Bile, unconsciousnes
Suhumehim anga-saňcālehim	-Subtle body movement
Suhumehim khela-saňcālehim	-Subtle movement of cough etc
Suhumehim diṭṭhi-saňcālehim	-Subtle movement of sight
Evamāiehim āgārehim	-These are exceptions
Abhaggo avirāhio	-Unobstructed
Hujja me kāussago	-May my *Kāyotsarga* be,
Jāva Arihantā ṇam	-Until *Arihanta*
Bhagavantāṇam	-*Bhagavanta*

Namukkāreṇam	-Are venerated
Na pāremi	-It remains unfinished
Tāva kāyam	-Until then from the body
ṭhaṇeṇam	-Will remain steady physically
Moṇeṇam	-Verbally
Jjhāṇeṇam	-Mentally
Appāṇam	-Myself
Vosirāmi	-I detach.

Through this ***Sūtra*** the aspirant pledges to remain steady in ***Kāyotsarga*** for spiritual upliftment, for expiation of the sins, for purity of the self, to make the soul free from all conditioning and to annihilate all ***karmas,*** the soul exercises to focus on the self, through the self. The involuntary actions like coughing, sneezing, yawning, inhaling, exhaling, giddiness, un-consciousness, movement of gas, bile, cough, etc take place in the body and these are kept as exceptions. The aspirant pledges to remain steady mentally, verbally and physically until he recites ***namo Arihantāṇam*** during the period he vows to refrain from all sins.

Kāyotsarga means giving up the attachment of the body so as to come face to face with the self, which is eternal and real. The body is ephemeral and subject to decay and death. The soul is the essence in this ephemeral body and can be realized by concentration, and for concentration steadiness of the body, mind and speech are a pre-requisite. Even for a person who is spiritually evolved, involuntary actions take place in the physical body and these cannot be stopped forcibly nor it is advisable to do so, but for one who vows to remain steady these subtle bodily movements are kept as exceptions and then the vow of ***Kāyotsarga*** is taken for a fixed interval. Certain extreme conditions like fire, snakebites etc are kept as exception.

Kāyotsarga is done in ***Padmāsana*** or in other posture; herein the eyes are either closed or concentrated on the tip of

the nose with a steady physical posture. During ***Kāyotsarga*** the ***Sūtras*** of expiation or veneration as the case may be are silently recited without any lip movement and once they are completed thoughtfully the aspirant recites "***namo Arihantāṇam***" and completes his ***Kāyotsarga***. The ***Kāyotsarga*** is done with complete awareness and thoughtfulness. The essence of scriptural study is meditation and that of meditation is detachment i.e. ***Kāyotsarga***. Once the aspirant realizes that he is the eternal, pure soul and not the ephemeral mundane body, his attitude towards the worldly things and people changes, he practises equanimity and detachment in all adversities and prosperities. Thus the purpose of ***Kāyotsarga*** is spiritual upliftment, expiation of the past sins, purity of the self and to free it from all conditioning. In other words for spiritual upliftment, expiation i.e. ***prāyaścitta*** is important and for expiation purity of the inner self is a pre-requisite. Purity of the self cannot be achieved by giving up the sinful activities and it is only through ***Kāyotsarga*** that one can give up all the sinful activities completely. Thus ***Kāyotsarga*** plays an important role for the purification of the self, beginning with awareness, passing through detachment and culminating in self-realization and then emancipation.

FIRST STEP

-Munendra Surana

1. If the first button of a shirt is wrongly put, all the rest are surely crooked. so always be careful on your first step. Rest will come correct automatically.
2. Just 3 steps to end your tension CTRL+ALT+DEL-
   (i) Control yourself.
   (ii) Look four alternative solutions.
   (iii) Delete the situation.

-Surana Ki Badi Pol, Nagaur (Raj.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 49)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(औदारिक काय योग)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– औदारिक काय योग के साथ अन्य कौन-कौन से योग हो सकते हैं?

समाधान– औदारिक काय योग के साथ चार मन के, चार वचन के ये आठ योग पाये जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना चाहिये कि एक जीव में एक समय में मन के चार योगों में से कोई एक योग तथा वचन के चार योगों में से कोई एक योग ही मिलता है। अनेक जीवों की अपेक्षा अथवा एक ही जीव में अलग-अलग समयों की अपेक्षा से औदारिक काय योग के साथ मन-वचन के कुल 8 योग मिलते हैं।

जिज्ञासा– औदारिक, औदारिक मिश्र काय योग में संयम के सात भेदों में से कौन-कौन से भेद मिल सकते हैं?

समाधान– औदारिक काय योग में गुणस्थान 1 से 14 होते हैं, अतः सातों ही संयम के भेद (असंयम, संयमासंयम, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात संयम) मिलते हैं। किन्तु औदारिक मिश्र काय योग में परिहार विशुद्धि व सूक्ष्मसम्पराय इन दो भेदों को छोड़कर शेष पाँच भेद ही मिलते हैं।

जिज्ञासा– औदारिक मिश्रकाय योग में परिहार विशुद्धि एवं सूक्ष्म सम्पराय ये दो संयम के भेद क्यों नहीं मिलते?

समाधान– औदारिक मिश्र काय योग 1 से 6 गुणस्थान (तीसरा छोड़कर) तथा 13 वाँ गुणस्थान इन छह गुणस्थानों में ही पाया जाता है। जबकि सूक्ष्म सम्पराय संयम दसवें गुणस्थानवर्ती जीवों में ही

मिलता है। अतः औदारिक मिश्र काय योग में सूक्ष्म सम्पराय संयम नहीं मिलता। अब रही बात परिहार विशुद्धि संयम की। यद्यपि परिहार विशुद्धि संयम छठे-सातवें इन दो गुणस्थानों में होता है, किन्तु परिहार विशुद्धि के धारक संयमियों की यह विशेषता होती है कि वे किसी भी प्रकार की लब्धि का प्रयोग नहीं करते। उनका अधिकांश समय अप्रमत्त अवस्था में व्यतीत होता है। लब्धि का प्रयोग संभव नहीं हो पाने से परिहार विशुद्धि चारित्र में औदारिक मिश्रकाय होता ही नहीं है।

जिज्ञासा- औदारिक तथा औदारिकमिश्र काययोग में कौन-कौन सी समकित पायी जाती है?

समाधान- औदारिक काययोग में उपशम, क्षयोपशम, वेदक, क्षायिक, सास्वादन, मिश्र एवं मिथ्यात्व- ये सातों ही प्रकार की समकित पायी जाती है। जबकि औदारिक मिश्र काययोग में मिश्र समकित नहीं पायी जाती, क्योंकि मिश्र समकित तीसरे मिश्र गुणस्थान में ही होती है। मिश्र गुणस्थान की यह विशेषता है कि उसमें किसी भी प्रकार की लब्धि का प्रयोग नहीं होता तथा इस गुणस्थान में जन्म-मरण नहीं होने से यह गुणस्थान अपर्याप्त अवस्था में भी नहीं होता।

जिज्ञासा- औदारिक मिश्र काय योग में आगामी भव का आयुष्य बन्ध हो सकता है अथवा नहीं?

समाधान- कर्मग्रन्थादि व्याख्या ग्रन्थों के मत से औदारिक मिश्रकाय योग मनुष्य-तिर्यञ्चों में अपान्तराल गति व उत्पत्ति के प्रथम समय को छोड़कर शेष सम्पूर्ण अपर्याप्त अवस्था में माना है। अतः अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले मनुष्य तिर्यञ्च आगामी भव का आयुष्य बन्ध भी आहार, शरीर, इन्द्रिय इन तीन पर्याप्तियों के पूर्ण होने पर वर्तमान आयु का एक तिहाई भाग शेष रहने पर प्रायः कर लेते हैं।

सिद्धान्त के मतानुसार उत्पत्ति समय से लेकर शरीर पर्याप्ति तक

औदारिकमिश्र काययोग होता है। शरीर पर्याप्ति के बाद मनुष्य तिर्यञ्चों में औदारिक काययोग प्रारंभ हो जाता है। यह नियम है कि इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण हुए बिना आयुष्य नहीं बन्धता, अतः अपर्याप्त अवस्था भावी औदारिक मिश्र काय योग में आयुष्य बन्ध की संभावना नहीं लगती है।

पर्याप्त अवस्था भावी औदारिक मिश्र में सिद्धान्तानुसार आयुष्य बन्ध छठे गुणस्थान तक हो सकता है, किन्तु कर्मग्रन्थादि के मतानुसार पर्याप्त अवस्था में छठे गुणस्थान तक औदारिक मिश्रकाय योग होता ही नहीं है, अतः आयु बन्ध का प्रश्न ही नहीं उठता। 13 वें गुणस्थानवर्ती औदारिक मिश्र काय योग में आयुष्य का बन्ध स्वभावतः ही नहीं होता है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रार-अ.भा.श्री.जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

HOW TV AFFECTS YOUR CHILD

1. Most children plug into the world of televison long before they enter school: 70% of child-care centers use TV during a typical day. In a year, the average child spends 900 hours in school and nearly 1,023 hours in front of a TV.
2. According to the American Academy Pediatrics (AAP), kids in the United States watch about 4 hours of TV a day- even though the AAP guidelines say children older than 2 should watch no more than 1 to 2 hours a day of quality programming.
3. Research has shown that children who consistently spend more than 4 hours per day watching TV are more likely to be overweight.
4. Kids who view violent events, such as a kidnapping or murder, are also more likely to believe that the world is scary and that something bad will happen to them.

-Collected By : Sanjay Srisrimal Jain, Hubli (Karnataka)

तत्त्वबोध

जिज्ञासा-समाधान

जिज्ञासा– 'जत्थ जलं तत्थ वणं' इस आधार से नारियल के पानी को क्या अनन्तकाय कहा जा सकता है?

समाधान– प्रज्ञापना सूत्र पद 1.– जीव प्रज्ञापना में प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकाय के आठवें भेद वलय में 'णालिएरी' से नारियल का कथन हुआ है। दक्षिण भारत में 'एरनील' भी बोला जाता है जो प्राकृत भाषा के दो अक्षरों को आगे-पीछे रखने से बना हुआ प्रतीत होता है।

भगवती शतक 22 के प्रथम वर्ग में इन्हीं वलय की चर्चा हुई है। वहाँ 'ताल' से 'णालिएरीणं' तक के मूल, कंद, स्कंध, त्वचा एवं शाखा तक में देवों की उत्पत्ति का निषेध कर तीन लेश्याएँ कही है। अन्तिम 5– प्रवाल, पत्र, पुष्प, फल और बीजों में चार लेश्या सहित देवों की उत्पत्ति कही गई है। गति, आगति आदि के अधिकार से स्पष्ट ही है कि देवता अनन्तकाय में उत्पन्न नहीं होते हैं। अतः नारियल के पत्र-पुष्प-फल व बीज प्रत्येक काय हैं, अनन्तकाय नहीं।

'सव्वो वि किसलओ खलु उग्गममाणे अणंतओ भणिओ'– का अभिप्राय प्रवाल –कोंपल के प्रारम्भ काल (मात्र अन्तर्मुहूर्त) में अनन्त जीव होना है तदनन्तर वह प्रत्येक जीव वाली हो जाती है। (अनन्तकायिक पत्र में अनन्तकाय वाली)

कोई भी पानी जो कि अप्काय के अन्तर्गत जाता है, अनन्तकाय हो ही नहीं सकता। निगोदिया को छोड़ सर्व जीव के भेद (563-4=559) प्रत्येक ही होते हैं। उनमें सारे जीवों का जोड़ भी असंख्यात ही होता है, अनन्त नहीं। यदि नारियल के पानी को फल के पूर्व भूमिका रूप वनस्पति कायिक माना जाए, तब भी वह अनन्तकायिक नहीं हो सकता और यदि उसे अप्कायिक माना जाए तब भी वह अनन्तकायिक नहीं हो सकता।

दिसाणुवाई की टीका (प्रज्ञापना पद 3) में 'जत्थ जलं तत्थ वणं' का उल्लेख आया। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय

ये चार त्रस और वनस्पति-कुल पाँच वहाँ ही अधिक है, जहाँ जल अधिक है। वनस्पति में सर्वाधिक जीव होने से समुच्चय जीव, पानी और ये 5 कुल 7 बोलों की अल्पबहुत्व दिशा की अपेक्षा समान है। यदि अपेक्षा नहीं समझी तो भ्रान्ति पनप सकती है।

प्रत्येक पानी में इन सात बोलों को माना जाए तब तो पानी पीने वाला कोई भी शाकाहारी नहीं हो सकता। आचारांग 1/1/3 में 'अदुवा अदिन्नादाणं' तो कहा है- संचित्त जल सेवी को' पर वनस्पति भक्षक या मांस भक्षक तो नहीं कहा। यदि 'जत्थ जलं तत्थ वणं' का अर्थ प्रत्येक पानी में वनस्पति किया जाएगा तो सचित्त जल का त्याग किये बिना किसी के भी हरी का त्याग हो ही नहीं सकेगा। आज भी अनेकानेक जैन श्रमणोपासक सचित्त जल का त्याग किये बिना जमीकंद (अनन्तकाय) के त्यागी हैं, फिर तो उसे दुष्प्रत्याख्यान (दुःपच्चक्खान) कहना होगा, जबकि ऐसा नहीं है।

विवेचन में स्पष्ट है कि अशाश्वत जल-तत्काल की वर्षा, नदी-नाले का पानी और राजगृह नगर के वैभार पर्वत पर उष्ण पानी का द्रह आदि में निगोद के जीवों की नियमा नहीं है अर्थात् 'जत्थ जलं तत्थ वणं' का नियम शाश्वत जल के स्थलों पर लगता है। इन सबका सार-

1. नारियल का पानी अप्काय स्वरूप माना जाता है जो असंख्यात जीवों का पिण्ड है।
2. सामान्य रूप से उसमें अनन्तकायिक जीवों का सद्भाव नहीं है। कई दिनों से किसी बर्तनादि में पड़े होने से अन्य जलों में लीलण-फूलणवत् उसमें भी अनन्तकायिक जीव उत्पन्न हो सकते हैं।
3. सचित्त जल के त्यागी को नमक, चीनी, ग्लूकोज आदि शस्त्र की परिणति के बिना नारियल का पानी नहीं पीना चाहिये।
4. जमीकन्द आदि अनन्तकाय के त्यागी के नारियल के पानी का त्याग नहीं होता है।
5. सामान्य पानी से वनस्पति मिश्रित पानी विशेष होने से तिविहार में इस पानी को नहीं पिया जा सकता।

नारी-स्तम्भ

संस्कारों का संरक्षण : भावी पीढ़ी का आधार

श्रीमती सुशीला बोहरा

वर्तमान की ज्वलन्त समस्या है- हम क्या सोच रहे हैं और भावी पीढ़ी कहाँ जा रही है ? क्या कहीं दोनों में सेतुबन्ध है, जिससे दोनों के आचरण की पटरी पर समाज की गाड़ी सुरक्षित चल सके? अभी समय है, गाड़ी पटरी से नीचे उतरने से पूर्व ब्रेक लगाने से स्थिति नियन्त्रण में रह सकती है। लेकिन इसका सेहरा कौन पहनेगा? उत्तर स्पष्ट है माता के संस्कार एवं घर के संस्कार वह कमाल कर सकते हैं जो सिनेमा पटल या टी.वी. नहीं कर पाये हैं।

भारतीय संस्कृति हमें कई पीढ़ियों के त्याग, तप एवं साधना से विरासत के रूप में प्राप्त हुई है। लेकिन इसकी मजबूत दीवारें भौतिकता के झोंकों से हिलने लगी हैं। चारों ओर सम्पत्ति का वर्चस्व दिखाई दे रहा है, इन्द्रिय-पोषण का माहौल गरमा रहा है, भौतिक समृद्धि अपने पाँव पसार रही है, मर्यादाएँ टूटने लगी हैं। यहाँ तक कि माता-पिता भी अपनी सुख-सुविधा के लिये जन्म लेने से पूर्व ही भ्रूण(बच्चे) को यमलोक भेजने में नहीं हिचकिचा रहे हैं। कहाँ गया ममतामयी मां का प्यार एवं दुलार? कहाँ गई बच्चों के लिए देवी-देव से मनौती मांगने वाली अश्रुमिश्रित आँखें? लड़की गर्भ में क्या आ गयी मानो साक्षात् मौत आ गई। झटपट सोनोग्राफी हुई। लड़की का पता चला और येन-केन प्रकारेण डॉक्टरों की मदद से सरकारी कानून तथा प्रकृति को धत्ता बता कर दुनिया में आने से पूर्व ही उसे विदा कर देते हैं। ऐसा बच्चा अगर किसी तरह बच भी गया तो इस भावना के छांव तले क्या कभी वह अपना हो सकेगा?

इस घृणित कार्य ने हमारी सामाजिक-व्यवस्था को ही झकझोर दिया है। जनसंख्या के आँकड़े बता रहे हैं कि 1000 लड़कों के अनुपात में भारत में 923 लड़कियाँ हैं और कहीं तो 850, 750 और 575 भी हैं। यदि लड़के-लड़कियों का अनुपात इतना बिगड़ रहा है तो युवा लड़कों को शादी के लिये लड़कियाँ कहाँ से मिलेंगी। ऐसी स्थिति में क्या सामाजिक सम्बन्धों की पवित्रता जीवित रह सकेगी? फिर अपहरण और बलात्कार जैसी घटनाएँ आम हो

जायेंगी। तब न बचेगी माता-पिताओं की इज्जत और न रहेगी लड़कियों की आबरू।

इस समस्या के निराकरण हेतु लड़के लड़कियों की बीच विभेद की दीवार तोड़कर ममतामयी माँ को नई शक्ति के रूप में उभरकर अपना पौरुष दिखाकर भ्रूण हत्या जैसे घिनौने कार्य को रोकना होगा। चाहे सामाजिक दबाव में आकर पुरुष इसके लिये प्रेरित करें तब भी भ्रूण हत्या के खून से अपने हाथ को लाल न करने का संकल्प डटकर दोहराना होगा तथा गर्भकाल से ही बच्चे को इस प्रकार संस्कारित करना होगा, जिससे ऐसे घृणित कार्य करने का भाव ही उसमें नहीं उठे। इसके लिये मां को अपने खान-पान, रहन-सहन, व्यवहार-आदतों आदि पर संयम रखना होगा।

टॉलस्टाय के पास एक महिला अपने बिगड़े हुए बच्चे को सुधारने का नुस्खा लेने गई। टॉलस्टाय ने उस संभ्रान्त महिला से पूछा कि बच्चा कितना बड़ा है? मां ने कहा वह पाँच साल का है, बड़ा गुसैल है, झगड़ालु तथा जिद्दी है। किसी का कहा नहीं मानता। टॉलस्टाय ने मां को बड़े प्रेम में उत्तर देते हुए कहा- "बहिन! तुमने बहुत देर कर दी। अगर होनहार बच्चा चाहिये था तो उसके गर्भ में आने से ही तुमको सावधान हो जाना चाहिये था।" सती मदालसा का उदाहरण इस तथ्य को पुष्ट करता है। उसके छः पुत्र क्रमशः एक-एक कर सभी साधु बन गये, राजा बहुत चिंतित हो गये। महारानी से कहा देवानुप्रिये! हमारा राज्य कौन सम्भालेगा? महारानी को अपने द्वारा दिये गये संस्कारों पर विश्वास था। महारानी ने विनय भाव से उत्तर दिया "आपका अब होने वाला पुत्र तेजस्वी एवं योग्य राजा बनेगा" एक मां बच्चे के पेट में होने पर ही यह घोषणा किस आधार पर कर सकती है। स्पष्ट है उसे अपने द्वारा दिये गये संस्कारों पर विश्वास है। और हुआ भी ऐसा ही, उसका सातवां पुत्र बड़ा योग्य एवं प्रजावत्सल राजा बना। कहने का आशय यही है कि योग्य एवं अयोग्य संतान के किये अधिकांशतः माँ ही उत्तरदायी है।

इतिहास साक्षी है कि अभिमन्यु ने गर्भ में ही माता-पिता की बात से युद्ध में चक्रव्यूह में जाने का तरीका सीख लिया था, लेकिन मात्र द्रौपदी के नींद आने से वह पूरी बात सुन नहीं सका, इसलिये पिता अर्जुन द्वारा बताये हुए

चक्रव्यूह से बाहर निकलने का तरीका नहीं जान सका। कहने का आशय यही है कि माता जैसा देखती, सोचती एवं करती है उसका प्रभाव गर्भस्थ भ्रूण पर पड़ता है। गन्दे साहित्य पढ़ने वाली, डरावनी और मारकाट की फिल्में देखने वाली, टी.वी. के पर्दे पर संस्कारहीन सीरियल देखने वाली माँ अपने बच्चे को अप्रत्यक्ष रूप से वैसे ही संस्कार दे रही है। 'कसौटी', 'सास भी कभी बहू थी' सीरियल देखने वाली मां अपने गर्भस्थ बच्चे को क्या सिखा रही है? जिनमें न पतिव्रत धर्म की पवित्रता दर्शायी गई और न चरित्रवान पति का व्यक्तित्व। जब सीरियल प्रारम्भ हुए थे, तब लगा शायद यह भारतीय परम्पराओं को पुष्ट करने वाला होगा, लेकिन ज्यों-ज्यों सीरियल आगे बढ़ने लगा उसको अधिक लंबा करने की आकांक्षा में पाश्चात्य-सामाजिक जीवन को परोसना प्रारम्भ कर दिया। अच्छी बातें तो शायद प्रभाव डाले या नहीं, लेकिन कामुकता के संस्कारों का प्रभाव बच्चों या बड़ों पर भी पड़े बिना नहीं रहता।

जो माताएँ संयम से रहती हैं उनके बच्चे भी अधिक संयमी होते हैं। यह कहा जाता है कि हनुमान इसलिये अधिक बलशाली हुए कि गर्भवती होने के बाद नौ माह तक माता ने ब्रह्मचर्य का पालन किया तथा धार्मिक अनुष्ठान में ही सारा समय बिताया।

अंगशास्त्रों में ज्ञाताधर्मकथा में मेघकुमार का वर्णन आता है उनकी माता ने गर्भकाल के समय संयमी जीवन बिताया, जिसके संस्कारों से संचित मेघकुमार ने भर यौवन में दीक्षा अंगीकार कर ली। जैन परम्परा में गर्भवती मां को छज्जीवणी (दशवैकालिक का चौथा अध्याय) सुनाने की परम्परा है इसके पीछे शायद यही राज है कि पेट में ही बच्चा जीवाजीव का ज्ञान प्राप्त कर सके। कल्पसूत्र में तीर्थंकर माताओं द्वारा 14 स्वप्न देखकर जागृत होने तथा अपने शयन कक्ष से पति के शयन कक्ष में जाकर स्वप्न के बारे में पृच्छा करना इस बात का साक्षी है कि भारतीय परम्पराओं में संयमित जीवन जीने को प्रधानता दी जाती थी। हमारी परम्परा में डबल बैड का प्रचलन नहीं था। यह तो हमने पश्चिम की नकल से सीखा है।

भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक परम्पराओं में संयमित एवं नियमित जीवन शैली को पुष्ट करने की विधि है। यहाँ तन की सुन्दरता को नहीं मन की

सुन्दरता को श्रेष्ठ माना जाता रहा है। कवि इन्दीवर ने ठीक ही कहा है-

मानव का मन यदि सुन्दर है तो,
इसकी जरूरत कुछ भी नहीं।
ये शान और शौकत कुछ भी नहीं,
ये नाज और नजाकत कुछ भी नहीं।
मानव का मन यदि सुन्दर है तो,
इसकी जरूरत कुछ भी नहीं।

इन श्रेष्ठता के संस्कारों की नींव माँ की ममतामयी गोद और कोख है। अतएव संस्कारित बच्चे पैदा हों इसके लिये पहले माँ को स्वयं संस्कारित बनना होगा। तभी तेजस्वी सन्तान पैदा होगी। मारवाड़ी में कहावत है- ''घड़ा जैसी ठीकरी और मां जैसी डीकरी'' यानी बेटी वैसी ही होगी जैसी माँ होगी। मटकी का टुकड़ा वैसा ही होगा जैसी मटकी होगी। अतएव हमें अपने अनुपम दायित्व की रक्षा त्याग की छाँव में करनी होगी। झाडियाँ कहीं भी पैदा हो सकती हैं, लेकिन सुन्दर गुलाब को पनपने के लिये उचित सारसंभाल, खाद व पानी की आवश्यकता होगी।

-संयोजक, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

मोह ही आत्म-कल्याण में बाधक

दार्शनिक मतभेदों के बावजूद न केवल वैदिक अपितु बौद्ध तथा जैन जैसे श्रमण परम्परा के दर्शन भी इस विषय में एकमत हैं कि मोह ही समस्त अनर्थ का मूल है। मोह से रागद्वेष उत्पन्न होता है और रागद्वेष से आसक्ति उत्पन्न होती है। यह आसक्ति ही बन्धन का मूल है। अनासक्त भाव से किये गये कर्म बन्धन का कारण नहीं बनते हैं।

स्थिर बुद्धि से फल के प्रति अनासक्त रहते हुए तथा सफलता अथवा विफलता में समान बुद्धि रखते हुए कर्म करना चाहिये, यह बात समझ में आ जाने पर भी न तो बुद्धि स्थिर रहती है, न फल की आसक्ति छूट पाती है और न मन की समता ही बनी रहती है, तो समझना चाहिये इसका कारण है मोह। जब तक मोह है जब तक राग-द्वेष है, जब तक मोह है तब तक फलासक्ति है और जब तक फलासक्ति है तब तक न समता बनी रह सकती है न बुद्धि स्थिर रह सकती है। इस सारे अनर्थ की जड़ मोह है।

-'जीवन दर्पण' से संकलित

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

पीपाड़ शहर (राजस्थान) में

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** की आज्ञा से एवं परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.,** मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय **श्री गौतममुनि जी म.सा.** आदि ठाणा 4 एवं साध्वी प्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की नेश्रायवर्तिनी महासती **श्री इन्दुबालाजी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में

मुमुक्षु श्री जितेन्द्र कोठारी

एवं

मुमुक्षु बहिन सुश्री सिन्धु कवाड़

की भागवती दीक्षा

वि.सं. 2066 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, गुरुवार दिनांक 28 मई 2009 को

अग्राङ्कित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

दीक्षा-स्थल

श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट)

पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

आयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

मुमुक्षु भाई

श्री जितेन्द्र कोठारी : परिचय

जन्मतिथि– 23 दिसम्बर 1985

जन्मस्थान– निमाज (जिला–पाली)

व्यावहारिक शिक्षा– बी.कॉम (प्रथम वर्ष)

पारिवारिक परिचय

दादा–दादी : श्री कनकमलजी–स्व. श्रीमती आयचुकी देवीजी कोठारी, निमाज

पिता–माता : श्री कुशलराजजी–स्व.श्रीमती उगमकंवरजी कोठारी,निमाज

भाई–भाभी : श्री पदमचन्दजी–श्रीमती सरिताजी कोठारी, निमाज

भाई : श्री महावीरजी कोठारी, निमाज

बहिन–बहिनोई: श्रीमती सरोजजी–श्री नेमीचन्द जी लोढ़ा, ब्यावर

श्रीमती चन्द्रकान्ताजी–श्री रमेशचन्दजी ओस्तवाल, ब्यावर

श्रीमती सरलाजी–श्री नरेशजी कुम्भट, विजयनगर

श्रीमती सन्तोषजी–श्री किशोरजी कटारिया,रेणुगुण्टा/बिलाड़ा

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र (20 अध्ययन), सुखविपाकसूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र,

आगम वाचनी : अन्तगडसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, समवायांगसूत्र कल्पसूत्र, स्थानांगसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र (कतिपय अध्ययन)।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, पाँच समिति-तीन गुप्ति, संज्ञा, उपयोग, पाँचदेव, जयन्ती बाई के प्रश्न, रूपी-अरूपी, विरहद्वार, असंयती भव्य द्रव्य, श्वासोच्छ्वास, गति-आगति, कर्मप्रकृति, लघुदण्डक, जीवधड़ा, नवतत्त्व, ज्ञानलब्धि, 98 बोल, 32 बोल, 102 बोल का बासठिया, 47 बोल, 50 बोल, 800 बोल की बंधी, गुणस्थानस्वरूप, जीवपज्जवा, द्रव्येन्द्रियपद, गमा का थोकड़ा, कर्मग्रन्थ भाग 1 व 2

स्तोत्र : भक्तामर, कल्याणमन्दिर, महावीराष्टक, चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्र, रत्नाकर पच्चीसी, उवस्सग्गहरं स्तोत्र, पुच्छिस्सुणं।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड की प्रथम से अष्टम कक्षा उत्तीर्ण।

पयुर्षण सेवा : चार वर्ष

वैराग्यावधि : दो वर्ष

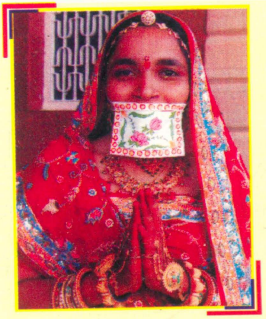

मुमुक्षु बहिन

सुश्री सिन्धु कवाड़ : परिचय

जन्मतिथि– 20 अगस्त 1987

जन्मस्थान– जोधपुर (राज.)

निवास स्थान– पीपाड़ शहर/आवड़ी–चेन्नई

व्यावहारिक शिक्षा– सी.सैकण्डरी (होमसाइंस डिप्लोमा)

पारिवारिक परिचय

दादा–दादी : श्री रामलाल जी–श्रीमती मोहनीदेवी जी कवाड़, पीपाड़ शहर

पिता–माता : श्री गौतमचन्द जी–श्रीमती शोभादेवी जी कवाड़, आवड़ी–चेन्नई

बड़े पिता–माता : श्री झूमरलालजी–स्व.श्रीमती इचरजकंवरजी कवाड़,आवड़ी,चेन्नई
श्री शान्तिलालजी श्रीमती मैनादेवीजी कवाड़, पीपाड़ शहर
श्री रतनलालजी–श्रीमती पारसदेवी जी कवाड़, पीपाड़ शहर
श्री अमृतलाल जी–श्रीमती प्रेमलता जी कवाड़, आवड़ी, चेन्नई

भाई : श्री धीरज जी कवाड़, आवड़ी–चेन्नई

बहिन–बहिनोई : श्रीमती बिन्दुजी–श्री राजेशकुमारजी कर्नावट,रायपेठा, चेन्नई, अरटिया

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, सुखविपाकसूत्र, नन्दीसूत्र, कप्पवडंसिया, पुप्फचूलिया, अणुत्तरोववाइसूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, आचारांगसूत्र (2 अध्ययन)।

आगम वाचनी : अन्तगडसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, समवायांगसूत्र, कल्पसूत्र, स्थानांगसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, पाँच समिति-तीन गुप्ति, संज्ञा, उपयोग, पाँचदेव, जयन्तीबाई के प्रश्न, रूपी-अरूपी, विरहद्वार, असंयती भव्य द्रव्य, श्वासोच्छ्वास, गति-आगति, कर्मप्रकृति, लघुदण्डक, जीवधड़ा, नवतत्त्व, ज्ञानलब्धि, 98 बोल, 32 बोल, 102 बोल का बांसठिया, 47 बोल, 50 बोल, 800 बोल की बंधी, गुणस्थानस्वरूप, जीवपज्जवा, अजीवपज्जवा, द्रव्येन्द्रियपद, गमा का थोकड़ा, 24 ठाणा, संजय नियण्ठा, कर्मग्रन्थ भाग 1 से 4 तक।

स्तोत्र : भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र,महावीराष्टक,रत्नाकर पच्चीसी उवस्सग्गहर स्तोत्र, वज्रपंजर स्तोत्र, पुच्छिस्सुणं इत्यादि।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, राजस्थानी, तमिल।

अन्य : अ.भा.श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड की प्रथम से अष्टम कक्षा उत्तीर्ण।

पयुर्षण सेवा : एक वर्ष

वैराग्यावधि : तीन वर्ष

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

वि.सं. 2066 ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया, बुधवार, 27 मई 2009

शोभायात्रा : प्रातः 8.30 बजे वीर परिवारों के निवास स्थानों से प्रस्थान। प्रमुख मार्गों से होती हुई परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में पहुँचकर उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण।

अभिनन्दन समारोह : वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का - सायं 8.00 बजे से स्थान-ओसवाल वाटिका, पीपाड़ शहर

वि.सं. 2066 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, गुरुवार 28 मई 2009

अभिनिष्क्रमण यात्रा : प्रातः6.45 बजे वीर परिवारों के निवास स्थानों से प्रस्थान कर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा पाठ : प्रातः 8.30 बजे लगभग
परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

विनीत

सुमेरसिंह बोथरा-अध्यक्ष, **ज्ञानेन्द्र बाफना**-कार्याध्यक्ष, **नवरतन डागा**-महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मोफतराज मुणोत-स्वागताध्यक्ष **हस्तीमल बोहरा**-अध्यक्ष
सुमतिचन्द मेहता-मंत्री **सुभाषचन्द कटारिया**-कोषाध्यक्ष

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ शहर

निवेदक

कनकमल कुशलराज पदमचन्द महावीरचन्द कोठारी-निमाज

रामलाल झूमरलाल शान्तिलाल रतनलाल अमृतलाल गौतमचन्द धीरज कवाड़

पीपाड़ शहर /आवड़ी-चेन्नई

सम्पर्क सूत्र :
सुमतिचन्द मेहता
सदर बाजार, पो. पीपाड़ शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.),
फोन : 02930-233069, 94144-62729

धारावाहिक (क्रमशः 60)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- आठों पत्नियों द्वारा दीक्षा को क्षणिक विचार कहकर जब जम्बूकुमार को सचेत किया गया तो प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा कि मैं सभी कष्टों को, विघ्नों को और प्रतिकूलताओं को संयम-पालन में प्रबल सहायक मानकर प्रसन्न रहूँगा। संयम-जीवन में एकान्त दुःख नहीं है। विषय-भोगों की कामना का त्याग कर देने से उसमें एक प्रकार का अनिर्वचनीय आत्मिक आनन्द उद्भूत होता है। भला ऐसी सुखमय अवस्था से कौन मुमुक्षु भयभीत होगा? कायरों को वह दुःखदायक भले ही मालूम हो, पर नरवीर पुरुष उसे सुखरूप मानते हैं। अब आगे.....

प्रिये! इन तुच्छ भोगों के लिए यह दुर्लभ मानवभव वृथा न खोओ। यह अवसर बहुत समय के अनन्तर, तीव्रतर पुण्य के उदय से हाथ आया है। इसे खो देने से फिर चिरकाल तक पश्चात्ताप की अग्नि में जलना पड़ेगा। ठीक ही कहा है-

यदि कथमपि नश्येद् भोगलेशेन नृत्वम्,
पुनरपि तदवाप्तिर्दुःखता देहिनां स्यात्।
इति हतविषयाशा धर्मकृत्ये यतध्वं,
यदि भवमृतिमुक्ते मुक्तिसौख्येऽस्ति वाञ्छा॥

अर्थात् यदि किसी भी प्रकार तुच्छ कामभोगों में फंस कर मनुष्य जन्म को समाप्त कर दिया तो फिर मानव-भव की प्राप्ति होना अत्यन्त ही कठिन है। अतएव इस अचूक अवसर को पाकर विषयों की कामना का त्याग करो और धर्म कृत्य करने में प्रयत्नशील बनो। यदि तुम जन्म-मरण से रहित मुक्ति का सुख पाना चाहते हो।

प्रिये! अतएव मेरा कहना मानो। तुम स्वयं कहती थी कि आर्य ललनाएं अपने पति का अनुसरण करती हैं। तब तुम्हें मेरा अनुसरण करना चाहिए। पर यह समझ करके नहीं कि मैं दीक्षा लेता हूँ इसीलिए तुम्हें दीक्षा

लेनी चाहिए। दीक्षा को ही वास्तविक सुख का साधन समझ करके, भोगों को भयंकर भुजंग समझ करके, अनन्त आत्मिक आनन्द को प्राप्त करने हेतु, जन्म-जरा-मरण के दुःखों से मुक्त होने के उद्देश्य से तुम्हें दीक्षित होकर धर्म-साधना में तत्पर होना चाहिए। धर्म के सिवाय संसार में और कोई समर्थ नहीं है। धर्म ही आराध्य है। धर्म ही हमारे जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए। हमारा जीवन केवल धर्म की ही आराधना के लिए होना चाहिए। हमारे प्रत्येक व्यवहार में धर्म का ही लक्ष्य होना चाहिए। यदि हम सम्पूर्ण दृढ़ता के साथ धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म भी संसार के भीषण दुःखों से हमारी रक्षा करेगा। अतः ऐसा प्रयत्न करो कि फिर से जन्म-मरण का प्रसंग उपस्थित न हो और यह जन्म ही हमारा अन्तिम जन्म हो।

जम्बूकुमार के उद्‌बोधन में इतना प्रभाव था कि उनकी पत्नियाँ उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकीं। अतएव जैसा होना स्वाभाविक था वही हुआ। जम्बूकुमार के वैराग्यमय उपदेश का उनके हृदय पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उनके उपदेश रूपी सूर्य से उनकी पत्नियों के हृदय में रहा हुआ मोह रूपी अन्धकार विनष्ट हो गया। जम्बूकुमार के हृदय-निर्झर से जो धर्मामृत से परिपूर्ण धारा प्रवाहित हुई उसमें स्नान करके उनकी पत्नियों का पाप-पंक धुल गया। अब आठों पत्नियाँ उच्च भावनाओं के स्वर्ग में विहार करने लगीं। उनके आन्तरिक नेत्रों पर अब तक मोह का जो पर्दा पड़ा हुआ था, वह दूर हो गया। उनके सामने एक नूतन प्रकाश चमकने लगा। हृदय में एक प्रकार का अभूतपूर्व आह्लाद उदित हो गया। वे विरक्ति की गोद में क्रीड़ा करने लगीं।

उन आठों में जो उम्र में सबसे बड़ी थी वह इस प्रकार कहने लगी-"प्राणनाथ! आप धन्य हैं। आपका निश्चय धन्य है। आपका जीवन धन्य है। आपके विचार धन्य हैं। आप संसार-सागर से स्वयं तिरने वाले हैं और दूसरों को तारने वाले हैं। स्वामिन्! आपके सत्संग से हम पापिनियों का भी उद्धार हो गया है। हम मोह के जाल में जकड़ी हुई थीं। मोह-पिशाच ने हमें उन्मत्त बना दिया था। हमारा हेयोपादेय का विवेक मलीन हो रहा था। विषयों की वासना ने हमारे हृदयों में घोर अज्ञान-अन्धकार का

साम्राज्य फैला रखा था। हम अपने कर्त्तव्य को, अपने कल्याणपथ को और मानव-जीवन के असली मूल्य को समझने में असमर्थ थीं। अमृत को छोड़कर विष ग्रहण करना चाहती थीं। सुख की अभिलाषा से दुःखों के दुर्गम मार्ग पर आगे बढ़ी चली जा रही थीं। नाथ! आपने हमें बचा लिया है। आपने हमें आज नया आलोक दिखाया है। नरक के बदले स्वर्ग प्रदान करने वाले आप ही हैं। संसार-सागर में हमारी नैया डूब रही थी। आपने उसे आज सकुशल तट पर पहुँचा दिया है।

पाणिग्रहण करते समय आपने हमारी रक्षा का वचन दिया था। अब हमारी समझ में आ रहा है कि आपने उस वचन का भलीभांति पालन किया है। यदि आप हमारी प्रेरणा को स्वीकार कर लेते तो उससे हमारी सच्ची रक्षा नहीं हो सकती थी, सच्ची रक्षा का मार्ग एक मात्र धर्म की आराधना है और आपने वही मार्ग बताकर हमारी रक्षा की है।

जीवनाधार! हमने जोश में आकर, तुच्छ और जघन्य स्वार्थ से प्रेरित होकर बहुत-सी अकथनीय बातें आपसे कह दी हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप क्षमा के सागर हैं, अतएव उस उद्दण्डता के लिए अवश्य क्षमा करेंगे। प्रभो! आप जैसे स्वामी को पाकर हम कृतार्थ हुई हैं। हमारा जीवन भी आज धन्य हो गया है। हम सब आपका अनुसरण करने में ही अब अपना सच्चा कल्याण समझती हैं। सुख का एक मात्र यही उपाय है। अतएव अब विलम्ब न कीजिए। संयम धारण करने की तैयारी कीजिए। आपकी ये दासियाँ भी इस मंगलमय कृत्य के लिए सर्वथा प्रस्तुत हैं।''

जम्बूकुमार के परिवार के लिए आज का प्रभात अत्यन्त महत्त्व का था। अतएव प्रभात होते ही उनके माता-पिता अन्य दिनों की अपेक्षा जल्दी उठे। वास्तव में आज रात उन्हें सुख की नींद नहीं आई थी। उनका एक मात्र पुत्र जम्बूकुमार आज सूर्योदय होते ही गृहस्थवेश त्याग कर संयम धारण करेगा, इसी विचार में उन्होंने रात्रि व्यतीत की थी। उन्हें एक प्रकार की निराशा सता रही थी। निराशा में कुछ आशा थी तो यही कि शायद नवागत वधुएँ जम्बूकुमार के चित्त को संसार की ओर आकृष्ट कर लें। अतएव वे आज जल्दी बिछौने से उठे और उठते ही जम्बूकुमार के शयनागार की ओर बढ़े। पर वहाँ जाकर उन्होंने जो कुछ देखा उससे उनका

दिल बैठ-सा गया। जम्बूकुमार की मुख-मुद्रा पर वही वैराग्य खेल रहा है। वही शान्त और गम्भीर चेहरा है। उसमें सांसारिक अनुराग के लिए कहीं कोई अवकाश नहीं नज़र आता। उन्हें यह निश्चय करने में जरा भी विलम्ब न लगा कि जम्बूकुमार अपने निश्चय पर दृढ़ हैं। वधुओं की करामात ने उनके हृदय पर जरा भी प्रभाव नहीं डाला है। उनके सभी प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए।

इसके पश्चात् जम्बूकुमार के पिता बोले-"बेटा! उठो हाथ-मुँह धोओ। नित्य कृत्यों को करो। नौकर-चाकर सोने की झारी लेकर खड़े थे। स्नान आदि करो। वस्त्र पहनो। उसके बाद बाजार चलकर वाणिज्य-कर्म में मेरा हाथ बटाओ।"

जम्बूकुमार ने उत्तर दिया- "पिताजी, मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। इसी कारण संयम धारण करने में मुझे इतना विलम्ब हुआ है। मैं व्यापार करने के लिए उद्यत हूँ, परन्तु इस बार ऐसा व्यापार करना चाहता हूँ जिससे अन्त में टोटा न पड़े। सांसारिक व्यापार में अनादिकाल से लगा रहा फिर भी अभी तक परम अर्थ की प्राप्ति नहीं हुई। सांसारिक व्यापार से जड़ अर्थ की प्राप्ति हो सकती है, पर उससे आत्मा का किंचित् भी लाभ नहीं होता। इस जीवन में ऐसा व्यापार करूँगा कि उससे परम-अर्थ की अर्थात् आत्मिक धन की प्राप्ति होगी। सांसारिक व्यापार से उपार्जन किया हुआ अर्थ अन्त में नष्ट हो जाता है और नाश के समय तीव्र संताप दे जाता है। इतना ही नहीं उस अर्थ की बदौलत भविष्य में अनेक अनर्थ उत्पन्न होते हैं। आप ही सोचिए ऐसे अनर्थ के मूल अर्थ का उपार्जन करने में इस श्रेष्ठ मानव-जीवन की पूँजी क्यों लगाई जाय? तुच्छ व्यापार और विनाशशील अर्थ के लिए इस उत्तम पूँजी को लगाना विवेकशीलता नहीं है। इससे तो ऐसे अर्थ का उपार्जन करना चाहिए जो सदा अपने पास रहे, जो नाश का पात्र न हो और जिसके कारण भविष्य में अनर्थ-परम्परा न भुगतनी पड़े। मैं ऐसे हीं अर्थ-परमार्थ का उपार्जन करने को उद्यत हो चुका हूँ। आपकी आज्ञा भी मुझे प्राप्त हो चुकी है।

पिताजी, अनादि काल से सांसारिक व्यापार करते-करते इस जीवन ने नाना गतियों में अपनी दुर्दशा कराई है। चौरासी लाख योनियों के

चक्कर न मालूम कितनी बार काटे हैं। इस व्यापार से अभी तक कार्य की सिद्धि नहीं हुई। अतएव फिर व्यापार करने की आवश्यकता पड़ रही है। यह तो 'अंधे पीसे कुत्ते खाएं' वाली कहावत को चरितार्थ करता है। अतएव अब इससे छुटकारा पाना चाहिए।

तात! जगत् में धर्म ही सार है। धर्म ही परमार्थ है। धर्म से समस्त सुखों की प्राप्ति होती है। स्वर्ग और मोक्ष के सुख धर्म के बिना कदापि प्राप्त नहीं हो सकते। कहा भी है :-

यदि नरकनिपातस्त्यक्तुमत्यन्तमिष्टः
त्रिदशपतिमहर्द्धिं प्राप्तुमेकान्ततो वा।
यदि चरमपुमर्थः प्रार्थनीयस्तदानीं,
किमपरमभिधेयं नाम धर्मं विद्यताम्।।

भावार्थ- यदि तुम नरक में गिरने से बचना चाहते हो और यदि इन्द्र की महान् ऋद्धि को प्राप्त करने की इच्छा है, इसके अतिरिक्त यदि अन्तिम पुरुषार्थ अर्थात् मोक्ष की अभिलाषा रखते हो तो धर्म की साधना करो। धर्म के सिवाय अन्य वस्तु मोक्ष प्रदान करने में समर्थ नहीं है।

पिताजी! श्री सुधर्मा स्वामी ने कहा है और यह अनुभव से भी सिद्ध हो सकता है कि संसार के सब सम्बन्ध क्षणिक हैं और स्वार्थ से प्रेरित हैं। हरे-भरे वृक्ष पर पक्षी आकर बसेरा लेते हैं, उस पर चह-चहाते हैं और उसे मुखरित कर देते हैं, पर जब वृक्ष सूख जाता है तब पक्षी उसे बिल्कुल त्याग देते हैं। ठीक यही अवस्था संसार के सब प्राणियों की है। यहाँ सर्वत्र नेह का पसारा है। सर्वत्र कल्पनाओं का स्वच्छन्द राज्य है। वास्तविकता का कहीं नाम-निशान नहीं है। अतएव सारा संसार सारशून्य प्रतीत होता है। इसमें मुझे अणुमात्र भी अनुराग नहीं रह गया है। संसार के वास्तविक स्वरूप को मैंने अच्छी तरह समझ लिया है, खूब देख लिया है, फिर मैं इसमें किस प्रकार रह सकता हूँ? जो सच्चा जौहरी है, रत्नों का कुशल परीक्षक है, वह जान बूझकर सच्चे रत्नों को छोड़कर झूठे रत्न क्यों लेगा?

पिताजी! यदि मानव जीवन रूप यह अवसर बारम्बार मिलता होता तो लापरवाही भी की जा सकती थी, पर यह तो बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। जब तीव्र पुण्य के उदय से यह प्राप्त हो गया है तब इसे वृथा

खो देना कहाँ तक उचित है? जैसे कौवा उड़ाने के लिए बहुमूल्य रत्न को फेंक देना अविवेक है उसी प्रकार सांसारिक विषयों के लिए मानव भव गंवा देना भी भयंकर अविवेक है। यह अविवेक जान-बूझकर क्यों किया जाए?

पिताजी! मैं आपसे भी विनय-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आप अब मेरे पथ में रुकावट न डालिए और यदि आपको कोई खास अड़चन न हो तो आप भी इसी पथ का अनुसरण कीजिए। (क्रमशः)

महावीर समस्त विश्व की शान हैं

श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म.सा.

(1)

महावीर मानव थे
पर हमने उन्हें भगवान् बना दिया,
उनके उपदेशों को जीवन में उतारना था
पर हमने शास्त्रों में सजा दिया।
उनकी तस्वीर मन मन्दिर में सजानी थी
पर पत्थरों के मन्दिरों में बिठा दिया,
उनका जीवन अनुकरणीय था,
पर हमने केवल वंदनीय बना दिया।।

(2)

अहिंसा के पुजारी
हम महावीर की संतान हैं,
जैन पद्धति पर चल रहा
आज विश्व का विज्ञान है।
ये धर्म ही नहीं संस्कार है
जिस पर हम सबको अभिमान है,
चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर
समस्त विश्व की शान हैं।।

(3)

धरती माता की आँखों से,धारा बहती है नीर की।
बोली धरती माता जरूरत है, आज फिर महावीर की।।

-श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, उदयपुर-313001(राज.)

उपन्यास (3)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- गाँव से आए बंशीकाका की किशनलाल और उसकी पत्नी शान्ति ने बहुत आवभगत की। बंशीकाका जाने लगे तो शान्ति ने इंग्लैण्ड रहने वाले अपने बड़े पुत्र विश्वास की शादी में आने का न्यौता दे दिया। बंशीकाका के जाने के बाद किशनलाल ने शान्ति से कहा कि इसके लड़के अच्छे नहीं निकले इसलिए टूट सा गया है। किन्तु अपने बच्चों के संस्कार अच्छे हैं, वे कभी भी अपने माता-पिता के विरुद्ध कार्य नहीं करेंगे। यह बात चल ही रही थी कि फोन की घंटी बजी और विश्वास ने अपने पिता को फोन पर बताया कि उसने इंग्लैण्ड में शादी कर ली है। अब आगे...

विश्वास के टेलीफोन ने किशनलाल के मन को इतना अधिक उद्वेलित कर दिया कि उसे अपनी सारी आकांक्षाओं के महल बालू की दीवार की तरह गिरते हुए नज़र आने लगे। उसका अन्तस् एक अजीब सी बेचैनी से भर गया, तो वह सोफे पर से उठा, और कमरे में ही इधर से उधर घूमने लगा। इस पर भी उसे चैन न मिला तो एक लम्बी सी सांस खींचता हुआ वह फिर धम्म से सोफे पर जा बैठा।

किशनलाल की इस विकट मनःस्थिति को शान्ति काफी देर से देख रही थी। जब उसे पति की बेचैनी देखते-देखते स्वयं चैन नहीं पड़ा, तो वह पति के निकट पहुँचकर धीमे से बोली- 'आखिर इतने परेशान क्यों हो रहे हैं आप!''

'तुम नहीं समझती शान्ति! मैं लोगों को कौन सा मुँह दिखलाऊँगा अब! धनपतराय क्या सोचेगा? कब से आशा लगाए बैठा है बेचारा।'

'बड़े बाबू आ गये हैं सरकार!'-मोतीराम ने कोठी के मुख्य दरवाजे से विश्वास को प्रवेश करते देखकर किशनलाल को बतलाया।

विश्वास ने कमरे में ज्यों ही प्रवेश किया, त्यों ही दाँतों को चबाता हुआ किशनलाल बोला-'विश्वास! मैंने स्पप्न में भी नहीं सोचा था कि तुम अपने खानदान की इज्जत को अपनी घिनौनी हरकतों से चौराहे पर नीलाम कर दोगे।'

'पिताजी!

''मत कहो मुझे पिताजी! आज के बाद न तुम मेरे पुत्र हो, न मैं तेरा पिता

हूँ। चले जाओ इस घर से और जीते जी मुझे अपना यह मनहूस चेहरा यहाँ आकर मत दिखलाना।''

''लेकिन पिताजी! आप कुछ सोचिये भी तो। मैंने ऐसा क्या जुर्म कर दिया है, जो आप मुझे घर से बाहर निकल जाने के लिए कह रहे हैं।''

''तुमने क्या किया है? यह मुझसे पूछ रहे हो? आज मैं समाज में मुँह दिखलाने लायक भी नहीं रहा। अब तक मैं लोगों की बातें बनाया करता था। अब लोग मेरी बातें बनायेंगे। अभी तक, लोगों को मैंने ही बातें सुनाई हैं। अब मुझे सबकी सुननी पड़ेगी।''

''ओ हो! आप तो जरा सी बात को पकड़कर रह गये हैं। आप पढ़े-लिखे हैं। समाज में और राष्ट्र में हो रहे परिवर्तनों से भली-भाँति परिचित हैं। तमाम सभाओं में भी युग के अनुरूप समाज को ढालने का सन्देश आप सैकड़ों बार दे चुके हैं। दहेज और प्रदर्शन का अन्त करने के लिए युवकों को आगे आने हेतु आपने अनेक बार उन्हें प्रेरित किया है। किन्तु आज, मैंने आपके विचारों को मूर्त रूप दे दिया, तो आप मुझे अपना पुत्र मानने से ही विमुख हो गये।....माँ! तुम क्यों चुप हो?''

''यह क्या कहेगी? जो कुछ कहना है, मैं कह रहा हूँ। तुम्हीं बताओ, मैंने यह कब कहा था कि समाज में परिवर्तन का बिगुल तुम बजा देना। काश! तुमने इस बाजारू लड़की को अपनाने से पहिले, मेरी भी राय ले ली होती। क्या कमी थी इस घर के लिये लड़कियों की? एक से बढ़कर एक सम्बन्ध आ रहे थे। मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था। सेठ धनपतराय स्वयं, अपनी बेटी के लिये तीन बार यहाँ आया है। अब मैं क्या कहूँगा उसको? क्या उन्हें यही कहूँगा कि मेरा बेटा, इंग्लैण्ड से ही अनजानी लड़की को ब्याह कर ले आया है।''

'वर्षों बाद घर आया बेटा अभी भीतर कदम ही नहीं रख पाया कि हाथ धोकर पीछे पड़ गये आप। क्या हो गया अगर विश्वास ने अपनी पसन्द का विवाह कर लिया। लड़की पढ़ी-लिखी है, सुन्दर है, अपनी ही जाति की है। तुमने अपने बेटे की पढ़ाई में जिस तरह पैसा खर्च किया है, वैसे ही इस बेचारी के पिता ने भी इसकी पढ़ाई में पैसा लगाया होगा।'-शान्ति विश्वास के समीप खिसकती हुई बोली।

'इसका कोई पिता होता, तो अपनी लड़की पर अंकुश न लगाता? मनमाने ढंग से दूसरों पर डोरे डालती नहीं फिरती।'

'पिताजी!'

'मुझे मत सिखला!' मैं सब समझता हूँ। मैंने अपने सिर के बाल धूप में सफेद नहीं किये हैं।

'आप नहीं जानते तभी तो मनमानी और ऊटपटांग बातें कहते चले जा रहे हैं।'

'अरे छोड़िये भी! जो हो गया, सो ठीक है। हमें घर आये बहू-बेटे का सम्मान करना चाहिए।' शान्ति ने शान्तिपूर्ण शब्दों में कहा।

'इनका सम्मान, और इस घर में? हर्गिज नहीं हो सकता। मेरे लिये विश्वास मर चुका है।'

'आप पिता हैं न! इसलिए यह बात कह रहे हैं। काश! आपके हृदय में मातृत्व की भावना होती, तो इस तरह की बात मुँह से कभी भी नहीं निकालते।'

'असली जड़ तो तुम हो। तुम्हारे ही लाड़-प्यार ने इसे इतना बिगाड़ रखा है। फल मुझे भुगतना पड़ रहा है। मैं, यह हर्गिज सहन नहीं कर सकता। जाओ! हट जाओ मेरी नजरों से। मैं तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखना चाहता।'

विश्वास ने एक लम्बी सी सांस खींचते हुए, द्वार पर ही खड़ी अपनी पत्नी मीनाक्षी को देखा, फिर बेबसी भरे स्वर में बोला- 'माँ।'

शान्ति को समझ में नही आ रहा था कि वह क्या करे? वह विश्वास की ओर अपनी लाचारी भरी निगाहों से देखती भर रह गई।

माँ की बेबस निगाहों को देखकर विश्वास ने धीरे से शान्ति के चरण छुए, और कहा- 'मैं जा रहा हूँ माँ!'

विवश शान्ति की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। 'मीनाक्षी! ये मेरे माता-पिता हैं। प्रणाम करो इन्हें। पता नहीं, इनसे फिर मिलना हो या न हो?'

मीनाक्षी, छलछला आई आँखे लिये विश्वास की ओर बढ़ी, और उसके पास पहुँचकर बोली- 'मेरे लिये, क्यों इतना कष्ट उठा रहे हैं आप! प्लीज! अपने पिताजी के सपनों को चूर न करो। मैं अपनी माँ के पास लौट जाऊँगी। शायद, यही लिखा था मेरी जिन्दगी में।'

''नहीं मीनाक्षी! मेरा निर्णय, लोहे की लकीर जैसा होता है। लन्दन में, सौ आदमियों के सामने मैंने तुम्हारा हाथ थामा है। और न्यायाधीश के समक्ष शपथ लेकर तुम्हें अपनी पत्नी घोषित किया है। फिर मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूँ?

धनपतराय के दिखाये सब्ज बागों ने पिताजी की आँखों पर एक पर्दा डाल रखा है। काश! इन्होंने धनपत के हृदय में गहराई तक उतरकर उसे देखा होता। आओ! अब यहाँसे चलें।''

विश्वास ने मीनाक्षी का हाथ थामा, और बाहर निकल गया।

विश्वास को बाहर निकलता देख, शान्ति चिल्लाई- 'बेटा! आखिर तुम लोग कहाँ जाओगे?'

'धरती माँ की गोद बहुत लम्बी-चौड़ी है माँ! कहाँ जायेंगे, इसकी चिन्ता तुम मत करो।' विश्वास ने जबाव दिया, और दोनों बाहर निकल गये।

कमरे में एकदम निस्तब्धता छा गई।

खिड़की के पास बुत बना खड़ा किशनलाल, अपने बहू-बेटे को घर से बाहर जाता देखकर, ताकता भर रह गया।

आँखों से टप-टप आँसू छलकाती शान्ति, कभी दरवाजे की ओर देखती, तो कभी अपने पति की ओर। आखिर, जब उसके धैर्य की सीमा टूट गई, तब वह अपने पति के पास आकर बोली-'आखिर, बहू-बेटे को घर से निकालकर तुम्हें क्या मिला? कितनी मनौतियों के बाद भगवान की कृपा से यह पुत्र मिला था। पर आपने एक ही झटके में, माँ की ममता से उसे अलग कर दिया।'

'तुमको किसने रोक रखा है। यदि इतनी ही ममता उससे है, तो चली जाओ उस विश्वासघाती के पीछे-पीछे।'

'सारी उम्र तो इस घर में आप के साथ गुजारी है। आज उसके साथ कैसे चली जाती? अब बुढ़ापे में अपना घर छोड़ती? आप क्या हैं, मैं अब पहिचान पाई हूँ। कहाँ गये आपके वे नारे? आपके वे सिद्धान्त, जिनके बल पर समाज में आपने अपनी नाक ऊँची उठा रखी है। मुझे नहीं मालूम था कि आप शेर की खाल ओढ़कर, शेर होने का नाटक खेल रहे हैं।'

'शान्ति! बन्द करो यह बकवास। तुम नहीं जानती, विश्वास की इस मूर्खता से हमें कितना भारी नुकसान हुआ है? तुम अभी भावनाओं में बहकर बहक रही हो। अच्छा होगा, तुम अपने कमरे में जाकर कुछ देर आराम कर लो।'

'आराम और मैं? क्या कह रहे हैं आप! जिसे नौ महीने पेट में रखा, आज वह सड़क पर भूखा-प्यासा घूम रहा है। और मैं आराम करूँ? नहीं,नहीं।

मैं पागल हो जाऊँगी। मैं मर जाऊँगी, मेरे विश्वास को ले आओ, ले आओ उसे।'

शान्ति यकायक जोर से चीख मार कर जमीन पर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

किशनलाल, दौड़कर उसे उठाते हुए चिल्लाए-'मोती! पानी लेकर आओ जल्दी से।'

मोती दौड़ा-दौड़ा पानी ले आया। किशनलाल ने कुछ छीटें, शान्ति के मुँह पर मारे तो उसने आँखे खोल दीं।

'विश्वास! कहाँ है मेरा विश्वास!' चारों ओर देखती हुई वह बोली।

'तुम समझती क्यों नहीं हो शान्ति! जो पुत्र अपने माता-पिता की भावना का सम्मान न करे, क्या वह पुत्र कहलाने का अधिकारी है? विश्वास चला गया तो क्या हुआ आलोक तो है, दीपक है और आरती भी है।'

'इन सबका भी क्या ठिकाना ? आज, विश्वास जिस तरह चला गया, उसी तरह, कल के दिन आलोक जा सकता है, और परसों दीपक भी। आरती तो कुछ दिनों की मेहमान है इस घर में। फिर मैं तो रह गई न अकेली की अकेली। आपने विश्वास की भावनाओं को चोट पहुँचाकर अच्छा नहीं किया है।'

'ओ हो! तुम भी बहुत जिद्दी होती जा रही हो शान्ति। चार-पाँच दिनों में उसकी अक्ल ठिकाने आ जायेगी, तो स्वयं ही घर चला आयेगा।'

'मैं जानती हूँ, वह अब नहीं आयेगा। आपने जो शब्द उसे कहे हैं, वे शब्द कोई मुझे भी कह दे, तो मैं भी उस घर में पैर नहीं रखूँगी। आप स्वयं जाकर ले आइये उसे।'

'ठीक है। मैं ही जाकर ले आता हूँ उसे। अब तो उठो। चलो! मोती!'- किशनलाल ने आवाज दी।

'जी सरकार!'

'इनका जरा ध्यान रखना। मैं पता लगाकर आता हूँ कि विश्वास कहाँ गया है?''

'अच्छा सरकार।'

किशनलाल ने एक तिरछी नजर शान्ति पर डाली, और कमरे से बाहर निकल गया। (क्रमशः)

संस्मरण

आपको कैसे भूल सकते हैं?

डॉ. दिलीप धींग

25-26 फरवरी 1996 को लाडनूं (राजस्थान) में गणाधिपति तुलसी के सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत लेखक संगोष्ठी में मैं सबसे कम उम्र का रचनाकार था। वहाँ अल्पाहार के लिए हम लेखकगण कैण्टीन में गये। नाश्ते में कचौरी भी थी। परोसने वाले से मैंने पूछा- "कचौरी में प्याज तो नहीं है?" उसने कहा- "प्याज तो है।" मैंने कचोरी लेने से मना कर दिया।

मुझसे थोड़ी दूरी पर पीछे की ओर कानपुर (उ.प्र.) से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'जयतु हिन्दू विश्व' के सम्पादक विजय प्रकाश त्रिपाठी उनकी धर्मपत्नी के साथ बैठे थे। मेरे द्वारा प्याज की कचौरी अस्वीकार कर देने का दृश्य त्रिपाठी दम्पती ने देखा, लेकिन इसका मुझे कुछ पता नहीं था।

24-25 दिसम्बर 1998 को हिसार (हरियाणा) में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत लेखक संगोष्ठी में भी मैंने भाग लिया। वहाँ भी त्रिपाठी जी आये थे। उन्हें अभिवादन कर मैंने पूछा- "पहचाना?"

वे बोले- "आपको कैसे भूल सकते हैं? आपके निमित्त से तो हमारे परिवार में एकता हो गई।"

मैंने साश्चर्य पूछा- "क्यों, ऐसा क्या हुआ?"

उन्होंने बताया- "फरवरी-96 में लाडनूं में आयोजित संगोष्ठी में जब हम रचनाकार बंधु जलपान के लिए कैण्टीन में गये थे, तब आपने प्याज वाली कचौरी अस्वीकार कर दी थी।" मैंने कहा- "हाँ।"

उस समय यह घटना देखकर उनकी पत्नी ने उनसे कहा था- "ये भैया छोटी-सी उम्र में भी प्याज छोड़ सकते हैं तो हम क्यों नहीं छोड़ सकते?"

त्रिपाठी जी ने बताया कि उनके घर में प्याज-लहसुन का उपयोग होने से उनकी माँ उनसे अलग रहती और अलग भोजन बनाती थी। लाडनूं से लौटने पर उन्होंने उनके घर में प्याज-लहसुन निषिद्ध कर दिया। फलस्वरूप उनकी माताजी उनके साथ रहने लग गई। एक ही रसोईघर में सबका भोजन बनने लग गया। उन्होंने कहा- "छोटे-से त्याग से हमें बड़ी खुशी मिल गई।" यह सुखद संवाद सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई।

बड़े-बुजुर्गों की भावनाओं का समादर करना तथा उनके व्रत-नियमों के

समुचित अनुपालन में सहभागी बनना परिवार के प्रत्येक सदस्य का पुनीत कर्त्तव्य है।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

देना और लेना

श्री कपिल जैन

यदि जीवन में देना चाहते हो तो,
दूसरों को प्रसन्नता, खुशी, सुख दो।
यदि लेना चाहते हो तो,
सद्गुण, माता-पिता-गुरुजन का आशीष लो।
यदि लिखना चाहते हो तो,
सदाचार-सच्चाई-भाई चारे के रास्ते पर चलने की प्रेरणा लिखो।
यदि मारना ही चाहते हो तो,
मन के गन्दे, कुटिल विचारों को मारो।
यदि देखना चाहते हो तो,
अपने अवगुण-बुराइयों को देखो।
यदि किसी को जीतना चाहते हो तो।
अपने मन-सुकर्म-वचन से पाँचों इन्द्रियों को जीतो।
यदि अपने पास रखना चाहते हो तो,
सादा जीवन उच्च विचार रखो।
यदि करना ही चाहते हो तो,
लाचार, असहाय, दीन-हीन मानव की सेवा करो।
यदि बोलना चाहते हो तो,
सत्य-मधुर वचन बोलो।
यदि लडना चाहते हो तो,
भ्रष्टाचार, दुराचार, कामाचार, पापाचार से लड़ो।
यदि रखना चाहते हो तो,
कम और गम खाओ।
यदि लाना चाहते हो तो,
मन-मस्तिष्क में सद्विचार लाओ।
यदि सोचना हो तो,
सदा सकारात्मक सोचो।

-A 192, अम्बेडकर नगर, इटारणा फाटक के पास, अलवर (राज.)

युवा-स्तम्भ

समय का प्रबन्धन

श्री अभयकुमार जैन

संसार में ऐसी शायद ही कोई वस्तु हो जिसकी प्राप्ति मनुष्य के लिए असंभव हो। प्रयत्न और पुरुषार्थ से सभी कुछ पाया जा सकता है। लेकिन एक ऐसी भी वस्तु है जिसे एक बार खोने के बाद पुनः कहीं नहीं पाया जा सकता है और वह है 'समय'। एक बार हाथ से निकला हुआ समय और कहे हुए शब्द कभी वापस नहीं बुलाए जा सकते।

समय का सदुपयोग करना जीवन का निर्माण करना है और दुरुपयोग करना जीवन को नष्ट करना है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह प्रति क्षण घंटे, दिन, महीनों, वर्षों के रूप में निरन्तर विलीन होता रहता है।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनकी महानता का आधार एक ही है कि उन्होंने समय का पूरा-पूरा उपयोग किया। सुप्रसिद्ध विचारक फ्रेंकलिन ने एक बार जीवन और समय को लेकर बड़ी ही मार्मिक एवं सटीक टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि "क्या तुम्हें जीवन से प्रेम है? यदि हाँ, तो समय बर्बाद मत करो क्योंकि जीवन समय से बना है और समय पर ही इसे मिट जाना है।" यह सुविचार हमें बताता है कि समय बहुत मूल्यवान है उसकी कद्र करनी चाहिए। कुछ विद्वान् समय को सोना कहते हैं कुछ इसे सोने से भी अधिक मूल्यवान बताते हैं।

विद्वान् चाणक्य ने कहा है कि "जीवन का एक क्षण करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से अधिक मूल्यवान है। यह पता इस तथ्य से चलता है कि मनुष्य जीवन का बीता हुआ क्षण करोड़ों मुद्राएँ देकर भी वापस नहीं मिलता है, अतः समय बेहद मूल्यवान है।"

समय का महत्त्व बताते हुए प्रभु महावीर स्वामी ने कहा है- "खणं जाणाहि पंडिए" हे! पण्डित! क्षण को जानो।

व्यक्ति चाहे तो अपना जीवन एक ही दिन में बदल सकता है। एक ही दिन में वह चिंता से मुक्त हो सकता है। बस उसे निर्णय मात्र लेना है कि उसे तत्काल चिंतामुक्त होना है। श्रीमती शील्ड्स अपने जीवन से दुःखी होकर

आत्महत्या करने की सोच रही थी। इसी बीच उसने एक लेख पढ़ा जिसमें एक वाक्य "समझदार के लिए हर सुबह नई जिंदगी लेकर आती है।" उसके दिमाग में बैठ गया उसने टाइप कर अपनी कार में शीशे पर चिपका दिया और हर दिन चिंताओं को छोड़ नए उत्साह से अपने व्यवसाय पर निकल जाती थी। थोड़े ही दिनों में उसका जीवन आनन्दमय व सुखमय हो गया। यह सब खेल विचारों का है।

प्रबन्ध विशेषज्ञ पीटर ड्रकर का मत था कि प्रबंधकों की प्रथम समस्या समय प्रबंधन है। वैसे वर्तमान युग में 'समय-प्रबंधन' शब्द चर्चित है। इस विषय पर नित्य नये-नये कोर्स निकल रहे हैं, प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। इसके अन्तर्गत निम्न बिंदुओं का समावेश किया जा सकता है-

लक्ष्य आपूर्ति, नियोजन प्राथमिकता, कार्य निर्धारण, आज का महत्त्व, काम टालने की आदत, समयबद्धता, समय की बर्बादी, समय की बचत, कार्य करने की कला, एकाग्रता, सृजनात्मकता, श्रेष्ठता, व्यवस्था-सुधार, कार्य करने के तौर तरीके, आत्म-प्रबंधन, निर्णय-दक्षता, तनाव-प्रबंधन, आत्मावलोकन एवं मूल्यांकन।

समय प्रबंधन के बारे में कुछ विद्वानों के विचार-

समय प्रबंधन के बारे में पीटर ड्रकर का कहना है "जो समय को सावधानीपूर्वक प्यार करते हैं वे दूसरों से अलग दिखाई देते हैं।"

महात्मा गांधी का कहना है "जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ समय कमाए हुए धन के बराबर होता है।"

जार्ज बनार्ड शा के अनुसार-"समय न मिलने के कारण कार्य पूर्ण न करने वाले व्यक्ति वास्तव में आलसी हैं।"

पीटर ड्रकर ने समय प्रबंधन में चार बातें और बताई।

1. यदि कोई कार्य अनुपयोगी है तो उसे छोड़ दीजिए।
2. कोई कार्य विलम्ब से किए जाने योग्य है तो उसे बाद में कीजिए।
3. कोई कार्य कम महत्त्वपूर्ण है तो उसे अधीनस्थ को प्रत्यायोजित कर दीजिए।
4. जो महत्त्वपूर्ण है, उसे पहले कीजिए।

किंतु यहाँ यह बात भी ध्यान रखें कि किसी कार्य विशेष को जो

तत्काल आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण नहीं है उसे टालते ही न जायें। एक सीमा होनी चाहिए। एक सप्ताह के भीतर चाहे आपको अपनी दिनचर्या में कुछ परिवर्तन करना पड़े, किंतु जो भी कार्य टलते आ रहे हैं उनका निष्पादन अवश्य करें।

एक महत्त्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि आपके किसी प्रबंधक, अधिकारी या किसी सम्माननीय व्यक्ति द्वारा कोई कार्य आदेशित है तो उसे तत्काल करने का अभ्यास डालना चाहिए ताकि सामने वाली की भावना को पूर्ण सम्मान मिले तथा उसकी निगाहों में आपकी तस्वीर अच्छी अंकित हो।

महात्मा गांधी ने कहा है- "कार्य की अधिकता नहीं, कार्य की अनियमितता ही आदमी को मार डालती है।" अतः कार्यों को उनकी महत्ता के अनुसार सम्पन्न करते जायें। कार्य को देखकर मानसिक दबाव या तनाव न होने दें। एक-एक कार्य को उसकी उपयोगिता, आवश्यकता तथा वक्त की नजाकत को देखते हुए करते जायें, निश्चित ही कामयाबी आपके कदम चूमेगी।

प्रतिदिन आप अपने जो कार्य करने हैं उनकी सूची बना लें तथा बिन्दुओं एवं शीर्षकों में विभाजित कर लें। आज अभी क्या करना है विचार करें तथा बिना किसी विवाद में समय खर्च किए कार्य शुरू कर दें। कार्य को टालें नहीं।

-'तृप्ति' बंदा रोड़, भवानीमण्डी-326502 (राज0)

बात पते की

सुश्री मीनाक्षी जैन

1. आदमी की दुर्भावना उसके दुश्मन की बजाय उसे ही अधिक दुःख देती है।
2. किसी कार्य को करने की इच्छा हो तो ताकत स्वयं आ जाती है।
3. धैर्य, धर्म, पत्नी एवं मित्र की परीक्षा आपत्तिकाल में होती है।
4. अच्छे लोग आस-पास ही होते हैं, लेकिन वे प्रदर्शन नहीं करते हैं, इसलिए मिलते नहीं।
5. अनुशासन, क्रमबद्धता आपसी सहयोग और विवेक से किए गए कार्य का प्रतिफल हमेशा हमारे पक्ष में होता है।
6. आप श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं- व्यक्तित्व के आकर्षण से, विकारों के प्रतिकर्षण से, व्यवहार के प्रभाव से, कार्यशैली के प्रेरण से, सद्गुण की विशिष्टता से एवं विचारों की उपयोगिता से।

-सुराणों की पोल, नागौर (राज.)

बाल स्तम्भ

रहस्यमय राक्षस का आखेट

श्री देवेन्द्र नाथ मोदी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जून 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार की बात है। द्वारिका नरेश श्रीकृष्ण महाराज के साथ श्री बलराम और सात्यकि आखेट पर गए। श्रीकृष्ण महाराज नहीं चाहते थे कि बिना वजह निरपराध वन्य प्राणियों की हत्या हो। परिमाणस्वरूप तीनों योद्धा दिनभर जंगल में भटकते रहे, किन्तु उन्हें कोई शिकार नहीं मिला। अचानक तेज तूफानी हवाएँ चलने लगीं। कुछ ही देर में मूसलाधार बरसात शुरु हो गई। इस कारण मची भगदड़ में उनके सेवक और सैनिक बिछुड़ गए। बलराम, श्रीकृष्ण महाराज और सात्यकि ही बचे रह गए। उन्हें स्वयं की अपनी सुरक्षा के लिए कोई ठिकाना ढूँढना पड़ा।

उन्हें एक बड़े पेड़ का आश्रय ग्रहण करना पड़ा। वे उस पर चढ़ गए। देर रात बीते मौसम शान्त हुआ। अंधियारी रात में राह खोजना व जंगल में भटकना उचित नहीं जानकर उन्होंने पेड़ के नीचे ही रात्रि विश्राम करना उचित समझा।

जंगल हिंसक जीव-जन्तुओं से भरा हुआ था। इसलिए वे तीनों निश्चिन्त होकर नहीं सोये। उस समय रात के तीन प्रहर शेष थे, उन्होंने तय किया कि बारी-बारी से एक व्यक्ति पहरा देगा तथा शेष दो विश्राम करेंगे। प्रथम प्रहर में सात्यकि, द्वितीय प्रहर में बलराम और तृतीय प्रहर में श्रीकृष्ण महाराज द्वारा पहरा दिए जाने की बात तय हुई।

सबसे पहले सात्यकि पहरे पर खड़ा हुआ। पेड़ के नीचे, भूमि पर एक और श्रीकृष्ण महाराज व बलराम विश्राम करने लगे। दिन भर की भाग-दौड़ से वे बहुत थके हुए थे इस कारण लेटते ही उन्हें नींद आ गई। अचानक एक राक्षस प्रकट हुआ तथा बोला "सात्यकि! मैं तुम्हें किसी प्रकार का खतरा नहीं पहुँचाऊँगा मगर मेरी एक शर्त तुम्हें माननी होगी। मुझे तेज भूख लगी है। यदि तुम मुझे इन दोनों योद्धाओं का भक्षण कर लेने दो मैं तुम्हें जीवित छोड़ दूँगा। यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे तो मैं तुमको भी खा जाऊँगा।"

उसका प्रस्ताव सुनकर सात्यकि का क्रोधित होना स्वाभाविक था। उसने कहा- "अरे दुष्ट राक्षस! तुमने यह कैसे मान लिया कि मैं तुम्हारे इस निम्न कोटि के प्रस्ताव को स्वीकार कर लूँगा।" यह कहते हुए सात्यकि ने अपनी तलवार खींच ली और बिना प्रतीक्षा किये राक्षस पर जोरदार प्रहार किया। आश्चर्य, उस पर तलवार के वार का कोई असर नहीं हुआ। इसके बाद एक नई बात अवश्य देखने को मिली। क्रोधित सात्यकि के वार के बाद उस राक्षस का आकार और बल दोनों बढ़ गए। पहले की अपेक्षा उसने और भी अधिक भयानक रूप धारण कर लिया तथा तीव्रता से अट्टहास करता हुआ सात्यकि पर झपटा।

सात्यकि पर्याप्त रूप से सावधान था, मगर राक्षस का प्रहार अत्यन्त शक्तिशाली था। इस कारण वह ठीक से सम्भल नहीं पाया। वह उछलकर दूर जा गिरा। सात्यकि समझ गया था कि यह राक्षस बहुत प्रभावशाली है।

उधर राक्षस दूर खड़ा हँस रहा था। उसकी हँसी से तीव्र क्रोध से आवेशित सात्यकि ने राक्षस पर पुनः जबरदस्त तरीके से वार किया। मगर अफसोस, सात्यकि के इस तीव्र वार का भी राक्षस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फलस्वरूप सात्यकि का क्रोध चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। इधर सात्यकि का क्रोध बढ़ रहा था और उधर राक्षस के आकार और बल में वृद्धि होती जा रही थी। यह अजूबा सात्यकि के समझ में नहीं आ रहा था।

इसके बाद उन दोनों में मल्लयुद्ध प्रारम्भ हो गया। कई बार राक्षस द्वारा सात्यकि को उठाकर पटकने से सात्यकि को कई गहरी चोटें आईं। सात्यकि उस पर जितना क्रोध कर रहा था, राक्षस का आकार व शक्ति उतने

ही अधिक बढ़ते जा रहे थे।

मल्लयुद्ध करते-करते न जाने कब एक प्रहर रात बीत गई। अचानक राक्षस गायब हो गया। सात्यकि भी लड़ते हुए बुरी तरह से पस्त हो चुका था। उसे नींद भी आ रही थी इसीलिए उसने पहरे के लिए बलराम को जगाया और स्वयं सो गया।

बलराम पूरी सन्नद्धता से पहरा दे रहे थे। इतने में वह राक्षस पुनः प्रकट हुआ। उसने वही प्रस्ताव बलराम को भी दिया जो उसने सात्यकि को दिया था। वह बोला "यदि तुम मुझे इन दोनों योद्धाओं का भक्षण कर लेने दो तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ सकता हूँ।"

बलराम अतुल योद्धा एवं बलशाली थे। उन जैसे वीर पुरुष के लिए इस तरह का कायरतापूर्ण प्रस्ताव अशोभनीय था। प्रस्ताव सुनकर उन्हें बहुत क्रोध आया। क्रोधित हो उन्होंने अपनी गदा संभाल ली। राक्षस को ललकारते हुए बोले "अरे मूर्ख राक्षस! लगता है, किसी वीर व्यक्ति से तुम्हारा वास्ता नहीं पड़ा। तुम्हें यह प्रस्ताव देते हुए तनिक भी संकोच न हुआ? यह तुमने कैसे मान लिया कि मेरी जान बचाने के लिए मैं तुम्हें इनका भक्षण करने दूँगा? यदि तुम्हारे में हिम्मत है तो पहले तुम मुझे परास्त करो।"

यह सुनकर राक्षस ने जोरदार उपेक्षापूर्ण अट्टहास करते बलराम का मजाक उड़ाया। राक्षस के इस प्रमाद पर बलराम को बहुत गुस्सा आया। क्रोधित हो बलराम ने गदा से राक्षस पर भरपूर वार किया।

राक्षस इस वार को बचा गया उसके साथ ही राक्षस का बल और आकार पहले की तुलना में बहुत अधिक बढ़ गया। इस कारण बलराम का क्रोध अग्नि में घृत की आहुति के समान भभक उठा। राक्षस को पराभूत करने के उद्देश्य से उन्होंने उस पर मुष्टि प्रहार किया। लेकिन बलराम को ऐसा लगा, जैसे उन्होंने किसी पहाड़ पर मुष्टि प्रहार किया हो।

बलराम मल्ल युद्ध में अद्वितीय योद्धा थे। इसके बाद उन दोनों में मल्लयुद्ध प्रारम्भ हो गया। राक्षस का पलड़ा भारी रहा, जब भी वह बलराम को धरती पर पटकता तो उनकी हड्डियाँ चटक जाती। उधर जब बलराम राक्षस को पटकते तो उसका कुछ भी न बिगड़ता। यह देख बलराम का क्रोध निरन्तर बढ़ता ही गया। इसके साथ ही राक्षस के आकार व बल में भी

अपेक्षित वृद्धि होती रही।

इस तरह राक्षस से लड़ते हुए बलराम को भी एक प्रहर हो गया। न राक्षस ने और न ही बलराम ने हार मानी। बलराम मन ही मन यह अवश्य जान गए कि आज किसी बलशाली राक्षस से पाला पड़ा है। बलराम लड़ते-लड़ते थक गए और विश्राम की इच्छा करने लगे। मन में यह इच्छा जागते ही राक्षस गायब हो गया। इसी दौरान पहरे का दूसरा प्रहर भी बीत गया।

श्रीकृष्ण महाराज को जगाने की जरूरत नहीं पड़ी। वे स्वयं जाग गए। बलराम आशंकित थे कि राक्षस वहीं पर छिपा हुआ है। वे नहीं चाहते थे कि अनुज श्रीकृष्ण का पाला उस बलशाली राक्षस से पड़े। आखिर बड़ा भाई, छोटे भाई को खतरे में कैसे डाल सकता है? इसीलिए वह श्रीकृष्ण को पहरे पर नहीं आने देना चाहते थे। यह सोचकर उन्होंने कहा- "कृष्ण, तुम बहुत थके हुए हो, सो जाओ। तुम्हारे हिस्से का पहरा मैं दे दूँगा।"

भला श्रीकृष्ण उस प्रस्ताव को कैसे मान लेते? वैसे भी उनसे कुछ छिपा हुआ न था, वे बोले- "दाऊ, यह कैसे हो सकता है? मैं दो प्रहर सो चुका हूँ। अब आप सो जाइए और मुझे मेरे कर्त्तव्य का निर्वाह करने दीजिए। वैसे ही आप मुझसे बड़े हैं। आपकी सेवा करना मेरा धर्म है। भला यह कैसे संभव है। कि मेरे हिस्से का सेवा कार्य आप करें। इस तरह तो मैं पाप का भागी बन जाऊँगा।

बलराम मन ही मन आश्वस्त थे कि यदि कृष्ण से राक्षस भिड़ेगा तो वह सुदर्शन चक्र की भेंट चढ़ जाएगा। यह सोचकर वह सोने चले गए। उनकी जगह श्रीकृष्ण महाराज पहरे पर आ गए। समय व्यतीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण महाराज बाँसुरी निकाल कर उसे बजाने लगे। अचानक वही राक्षस फिर प्रकट हुआ। भयानक अट्टहास कर बोला- "कृष्ण! यदि तुम मुझे इन दोनों योद्धाओं का भक्षण कर लेने दो तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ सकता हूँ।"

मजाक उड़ाते हुए श्रीकृष्ण हँस कर बोले- "अरे वाह! सचमुच तुम तो बहुत दयालु हो। यदि मैं तुम्हें इन दोनों का भक्षण न करने दूँ तब तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे?

क्या सचमुच तुम मुझे मार ही डालोगे? तनिक यह भी तो बताओ

कि तुम मुझे किस तरह मारोगे?'' ''मैं तुमसे मल्ल युद्ध करूँगा। मल्ल युद्ध करते हुए तुम्हारा कचूमर निकाल कर जीवित नहीं छोड़ूँगा''-राक्षस क्रोध से चीखा।

''कौन किसको मारेगा, यह अलग बात है, मगर अच्छी बात है कि इस तरह एक प्रहर की अवधि आराम से गुजर जाएगी। मल्ल युद्ध करने से शरीर में स्फूर्ति आ जाती है। मुझे तो मल्ल युद्ध करना बहुत अच्छा लगता है''-राक्षस का उपहास उड़ाते हुए श्रीकृष्ण महाराज ने कहा।

श्रीकृष्ण महाराज ने तनिक भी क्रोध नहीं किया, इस कारण न राक्षस का आकार बढ़ा और न बल में वृद्धि हुई, फिर भी वह श्रीकृष्ण से भिड़ गया। श्रीकृष्ण चतुरता से लड़ रहे थे। वे अपनी ओर से राक्षस पर आक्रमण नहीं कर रहे थे। राक्षस जब अपनी ओर से प्रहार करता तो वे अपने आपको सफाई से बचा जाते। इस कारण राक्षस को खीज होती, मारे गुस्से के वह और तेज प्रहार करने की चेष्टा करता। इस बात पर श्रीकृष्ण महाराज मंद-मंद मुस्कुराते।

अब की बार राक्षस पर उलटा प्रभाव पड़ा। उसका बल व आकार छोटा होता चला गया। बलक्षय के कारण वह अत्यन्त क्षीण हो गया। आकार में वह इतना छोटा हो गया कि वह श्रीकृष्ण के घुटने के बराबर लगने लगा। अब बलहीन राक्षस की लड़ने की तनिक भी क्षमता शेष न बची थी। जबकि श्रीकृष्ण महाराज मुस्कुराते हुए निरन्तर उसका उपहास उड़ा रहे थे। वह उसे कभी मल्ल युद्ध के लिए तो कभी शस्त्र युद्ध के लिए प्रेरित करते। राक्षस भी क्रोधित हो श्रीकृष्ण से लड़ने का यत्न तो करता, किन्तु लड़ नहीं पा रहा था। आखिर उसकी स्थिति यह हो गई कि उसका आकार एक बेबस कीड़े जितना रह गया। श्रीकृष्ण महाराज ने उसे उठाकर अपने उत्तरीय के पल्लू से बांध लिया। तब तक सूर्योदय हो चुका था। श्रीकृष्ण महाराज ने बलराम तथा सात्यकि को जगा दिया।

बलराम और सात्यकि उठे, रात के अन्धेरे में तो किसी ने किसी को भी ठीक से नहीं देखा था। उठने के बाद इन दोनों ने एक-दूसरे के चेहरों को देखा, वे सूजे हुए थे। उनके शरीर के अंग-प्रत्यंग दुःख रहे थे। उन्होंने जो घटित हुआ वह सब बताया। सात्यकि और बलराम ने श्रीकृष्ण महाराज

से पूछा कि क्या उन्होंने भी उस राक्षस को देखा?

सात्यकि और बलराम की बात सुनकर श्रीकृष्ण महाराज हँसे और बोले- "दाऊ भैया! वह राक्षस और कोई नहीं 'क्रोध' था। जैसे-जैसे आप क्रोधित हो रहे थे, उसका आकार बढ़ता जा रहा था। वह मुझे भी मिला, मैं उसे देखकर पहचान गया। इस कारण मैंने अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखा। उलटे मैंने उसे ही क्रोधित किया। इस कारण उसका आकार बढ़ने की बजाय घटने लगा, उसका बल भी उसी तरह कम होने लगा। अंत में वह एक कीड़े में बदल गया।"

इतना कहकर श्रीकृष्ण ने अपने उत्तरीय का पल्लू खोला। उसके छोर में वह निरीह कीड़ा बंधा हुआ था। फिर कहने लगे- "देखो सात्यकि! यही है वह राक्षस, पहचान लो इसे। यदि इसे उसी रूप में देखना चाहते हो तो इस पर क्रोध करके देखो। यह फिर वही विशालकाय राक्षस बन जाएगा।"

इस तरह श्रीकृष्ण महाराज ने क्रोध रूपी राक्षस का आखेट कर बलराम व सात्यकि के माध्यम से हमें जीवन का यह अनुपम रहस्य समझाया।

(साभार संकलित)

-5-A/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर

प्रश्न :-

1. श्रीकृष्ण, बलराम और सात्यकि को रात जंगल में क्यों बितानी पड़ी?
2. श्रीकृष्ण ने राक्षस से युद्ध कैसे जीता?
3. संधि विच्छेद कीजिए-

   1. निरपराध, 2. चरमोत्कर्ष, 3. सूर्योदय, 4. निश्चिन्त।
4. अर्थ बताइये-

   1. आखेट 2. स्फूर्ति 3. मल्लयुद्ध
   4. निरीह 5. सन्नद्धता 6. आहुति
5. क्रोध से होने वाली कोई पाँच हानियाँ बताइए।
6. इस कहानी में राक्षस किस बात का प्रतीक है एवं उससे क्या संदेश मिलता है?

नोट- मार्च में प्रकाशित कहानी के परिणाम हेतु द्रष्टव्य पृ.संख्या-87

आओ स्वाध्याय करें - 21

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (21)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा (21) का आयोजन 'जिनवाणी' के जनवरी-फरवरी-मार्च-2009 के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन (पचाला वाले), उपाध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, 5, पंचवटी, कटर मशीन की गली में, न्यू मंडी रोड, आलनपुर-322021, सवाईमाधोपुर (राज.) फोनं. 9460441351** के पते पर **5 जून, 2009** तक मिल जाने चाहिए। युवा श्रेणि एवं सामान्य श्रेणि में श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को अलग-अलग क्रमशः 1001 रुपये, 501 रुपये एवं 251 रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। 100 रुपये के दस-दस प्रोत्साहन पुरस्कार भी दोनों श्रेणियों में दिए जायेंगे। युवा श्रेणि के पुरस्कार 15 से 45 वर्ष के उत्तरदाताओं को दिए जायेंगे। युवाश्रेणि हेतु प्रत्येक प्रतियोगी अपने नाम एवं पते के साथ उम्र का भी उल्लेख करे। जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्न क्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न/पृष्ठ संख्या लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।-सम्पादक

(क) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

01. जो इन्द्रियों के विषय में आसक्त नहीं होते हैं।
02. कई तिरे, कई तिर रहे, कई तिरेंगे। किससे?
03. जगत् के वैचारिक संघर्षों की अनोखी सुलझन प्रस्तुत करता है।
04. दुःख आने पर भी दुःखी न होना किसका फल है?
05. गति, योनि और भिन्न-2 स्थानों पर भटकाव का एक मात्र कारण।
06. धर्म और आचरण को जोड़ने की संधि का नाम है।
07. कई जीव तिर गये इन्हीं से और तिरेंगे आगे मान। किनसे?
08. संयम के सरोवर में सद्गुणों के सहस्र पुष्प खिलाएँ।
09. जो सज्जनों के लिए हितकारी होता है।
10. घोर हिंसाकारी आजीविका के कारण नरकगामी कौन बना?

(ख) मुझे पहचानो-

11. मेरा समर्थन सारे पापों का समर्थन है।

12. मेरे बिना किसी भी अस्तित्व का प्रतिपादन नहीं किया जा सकता।
13. तुम चाहे जितनी तेजी से दौड़ो, चाहे जितनी देर तक, चाहे जितनी दूर तक, फिर भी मैं पकड़ में नहीं आती।
14. बुलायां आवे नहीं, नेतियां जीमे नहीं। अपने लिये बनाया लेवे नहीं।
15. मनुष्य के जीवन निर्माण में हमारा बहुत बड़ा हाथ है।
16. मैं अनेक आपत्तियों का स्थान हूँ।
17. मेरे निकले बिना संलेखना नहीं होती है।
18. मैं साता-असाता का वेदन कराने वाला हूँ।
19. मेरा पाठ न पढ़ता तो पढ़ लिखकर भी अनपढ़ रहता।
20. बालकों की वाणी मुझसे हीन होती है।

(ग) हाँ/ना में उत्तर दीजिये।

21. लव सत्तम देव को काल करते समय सात से ग्यारह, ये चार ही गुणस्थान हो सकते हैं।
22. शरीर बाद में छूटेगा, ममता पहले छूटेगी, इसी का नाम कायोत्सर्ग है।
23. सदाचारी व्यक्ति अवश्य ही नैतिक होता है।
24. सत्य, मन वचन और काया का योग है।
25. शास्त्रकारों ने स्वयं की निंदा और पर की प्रशंसा को असत्य कहा है।
26. पानी का घनत्व रक्त की अपेक्षा कम होता है।
27. लोक और अलोक का विभाजन नैसर्गिक है, अनादिकालीन है।
28. फैशन और व्यसन बढ़ने का मुख्य कारण रूप और रुपया है।
29. संयोग अवस्था में जितना सुख मिलता है उससे अनेक गुना दुःख वियोग की अवस्था में मिलता है।
30. समय-परिवर्तन के साथ स्वरूप-परिवर्तन परिहार्य है।

(घ) रिक्त स्थान भरिए-

31. उच्च गोत्र का रहस्य है.....का भंजन।
32. जब व्यक्ति और वस्तु में.....है, तब आकर्षण नहीं होता।
33. कामनाएँ कभी.....करने से तृप्त नहीं होती।
34. .....ज्ञान ही सब अनर्थों का मूल है।
35. सोच के साथ.....परम आवश्यक है।

(ड) निम्न उपमाएँ किनके लिए प्रयुक्त की गई हैं?

36. धर्मप्राण

37. स्वाधीन
38. भारत की आत्मा
39. आध्यात्मिक स्नान
40. संयम धाम

(च) अंकों में उत्तर दीजिए-

41. अनुयोग द्वार सूत्र में वस्तु बोध के कितने प्रकार प्रज्ञप्त हैं ?
42. कितने पाप वचन से संबंधित होते हैं?
43. शरीर के कितने द्वारों से सदा मैल निकलता रहता है।
44. आसालिक कितने प्रकार के निवेशों में उत्पन्न होते हैं?
45. भ. पार्श्वनाथ के कौनसे जन्मकल्याणक पर हस्तिनापुर में विश्व शांति अंहिसा सम्मेलन हुआ।
46. शरदपूर्णिमा का चाँद कितने कोटा-कोटि ताराओं के परिवार से घिरा शोभायमान होता है।
47. जिनशासन में कितनी बातों को ज्ञान कहा गया है?
48. विशिष्ट पुण्य को इकट्ठा करने का सामर्थ्य स्थावर जीवों के कितने भेदों में है?
49. इस वर्ष चातुर्मास की अवधि कितने दिनों की रहेगी?
50. भ. महावीर के धर्मसंघ में कितनी साध्वियाँ थीं?

बाल-स्तम्भ [मार्च-2009] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अनुभव की कीमत' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 36 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	कानन जैन-जोधपुर	19.75
द्वितीय पुरस्कार-200/-	गौरव खींवसरा-जोधपुर	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	वैभव जैन-हिण्डोन सिटी	19.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	मनोज जैन-सवाईमाधोपुर	18.75
	अंकुश जैन-खेरली	18.75
	अंजली जैन-हिण्डोन सिटी	18.75
	ऋषभ जैन-हिण्डोन सिटी	18.75
	नीरज जैन-जोधपुर	18.75

संवाद (23)

माह अप्रेल-2009 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

प्रश्न-मैं जिनवाणी में प्रकाशनार्थ रचना भेजती हूँ, किन्तु वह प्रकाशित नहीं हो पाती है। आप मुझे सुझाव दें कि मैं किस प्रकार अपनी रचना में सुधार करूँ, जिससे वह प्रकाशित हो सके।

- चेतना जैन (काल्पनिक नाम)

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- आपकी रचनाओं को जिनवाणी पत्रिका में स्थान प्राप्त नहीं हो रहा है। इसके लिए रचना भेजने से पूर्व आपको निम्न बिन्दुओं पर विचार करना चाहिए-

1. आप जिस पत्रिका में लेख भेजना चाहती हैं, उस पत्रिका के उद्देश्य को समझना आवश्यक है। जिनवाणी चूंकि एक धार्मिक पत्रिका है, अतः इसका उद्देश्य धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक और जीवन मूल्यों से सम्बन्धित विचारों को पाठकों तक सम्प्रेषित करना है। इन्हीं भावनाओं से सम्पूरित लेख आप भेजेंगी तो अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।
2. आपकी लेखनी साफ होनी चाहिए ताकि लिखे हुए को सही पढ़ा जा सके। यदि लिखावट अच्छी न हो तो लेख टाइप करके भिजवाएँ।
3. समाज में नकारात्मक सोच पैदा करने वाले, समस्या उत्पन्न करने वाले, संशय पैदा करने वाले, धर्मविरुद्ध, सम्प्रदायवाद फैलाने वाले लेख नहीं होने चाहिए।
4. लेख जिस विषय को लेकर लिखा जा रहा है, उसी विषय पर केन्द्रित रहे। विषयान्तर बातें नहीं हो।
5. लेख भेजने से पूर्व एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें। यदि एक बार भेजने पर कुछ महीनों में लेख न छपे तो उसे दुबारा भेजें और साथ में जबावी पत्र भी रखें ताकि प्रकाशित न होने के कारण जान सकेंगी।
6. लेख प्रसंग के अनुसार लिखे जाने पर शीघ्र प्रकाशित होते हैं। महावीर जयन्ती, क्षमापना पर्व, अक्षय तृतीया, दीपावली, होली, राखी आदि से

सम्बन्धित लेखों को इन पर्व के आने के एक-दो माह पूर्व भेजें। बाद में भेजने पर वह एक साल के लिए पेन्डिंग हो जाता है।

7. शोधपरक लेख होने पर संदर्भ ठीक से दिये जाने चाहिये।
8. वैज्ञानिक लेख में डायग्राम बने हों।
9. रचना कहीं से नकल की हुई न हो। स्वरचित लेख ही प्रकाशन योग्य होते हैं।
10. जिनवाणी में प्रकाशित लेखों को आप चिन्तन पूर्वक पढ़ें तो कुछ समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी।

श्रीमती पुष्पा मेहता, पीपाड़ सीटी- जिनवाणी में रचना भेजने वाले कई रचनाकार ऐसे हैं जिन्हें अपनी रचना प्रकाशित होने का इन्तजार है, लेकिन हताश होना सफलता का लक्षण नहीं है- Try Again and Again कोशिश कीजिए, सफलता अवश्य मिलेगी। आप हताश मत बनिए, अपनी कलम चलाते रहिए, अच्छे लेखक के गुण हासिल कीजिए, अपनी रचनाओं को रोचक बनाइए, शिक्षाप्रद बनाइए, सारगर्भित बनाइए तथा अपनी रचनाओं को संस्कारों से युक्त कीजिए सफलता आपके चरणों को चूमेगी तथा आपकी रचना-जिनवाणी में प्रकाशित होकर जिनवाणी की शोभा बनेगी।

दिलीप जैन, जोधपुर- आपकी रचनाएँ आपको अपने दृष्टिकोण से प्रकाशनीय लगती हो, परन्तु किसी न किसी दृष्टि से उनमें अल्पता रहती होगी इसलिये आप द्वारा प्रेषित रचनाएँ प्रकाशित नहीं हो पातीं। आपको रचनाओं में समसामयिक घटनाओं एवं प्रसंगों को आध्यात्मिक पक्ष से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिये और उन घटनाओं व प्रसंगों की लाभ-हानि एवं विषय की क्रमबद्धता के आधार पर लेखन करना चाहिए।

आपकी लेखन कला में उत्कृष्टता अभ्यास से ही आयेगी चूँकि कहा भी है "करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान", अतः आप अपनी रचनाओं में उत्कृष्टता लाने के लिए सतत प्रयास करती रहें एवं एक समय ऐसा आयेगा जब आपको स्वयं लगेगा कि अब मेरी रचनाओं में निखार आने लगा है। अतः मात्र मनोविनोद, खानापूर्ति एवं अप्रामाणिक रचनाओं की अपेक्षा प्रेरणास्पद प्रसंग, कथा आदि का लेखन करने का प्रयास करें। **(क्रमशः)**

10 मई 2009
जिनवाणी 90

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

परमात्मा की पहचान-श्री चतरसिंह मेहता, ***प्रकाशक*** - किताबघर, 24/4855, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, ***पृष्ठ***-164, ***मूल्य***-200 रुपये, ***संस्करण***-सन् 2008

यह पुस्तक जीवन के सत्य को समझने एवं उसे ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण चरण है। 18 अध्यायों में विभक्त पुस्तक का एक अध्याय 'परमात्मा की पहचान' है। इसे ही पुस्तक का नाम दिया गया है। भीतर में बैठे परमात्मा, आनन्द एवं आत्मदृष्टि को पहचानने की पुस्तक में प्रेरणा की गई है। यह बुद्ध के चार आर्य सत्यों का भी विवेचन करती है तो मन के प्रपंच एवं अभिमान को छोड़कर भीतर में उजास करने का भी सन्देश देती है। शिक्षाविद् श्री चतरसिंह मेहता राजस्थान शिक्षा विभाग में निदेशक रहे हैं। उन्होंने अपने अनुभवों एवं सत्यदृष्टि से प्राप्त नवनीत को पुस्तक में सलीके से परोसा है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि के नियमानुसार व्यक्ति की दृष्टि को सुधार कर उसे अपने भीतर परमात्मस्वरूप का अनुभव करने की प्रेरणा पुस्तक में दी गई है।

बाल-मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ-, ***सम्पादक***- सुकेश साहनी एवं रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', ***प्रकाशक***- किताबघर, 24/4855, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002, ***पृष्ठ***-8+128, ***सहयोग राशि***-140/-रुपये, ***संस्करण***-सन् 2009

बच्चों के साथ हमारा व्यवहार उन पर किस प्रकार मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है तथा बच्चों का मनोविज्ञान किस प्रकार कार्य करता है, इससे सम्बद्ध 79 लघुकथाओं का यह अच्छा संकलन है। बालकों को समझने की दृष्टि से ये कथाएँ अच्छी हैं।

दादाजी की कथा- कहावतें- राजेन्द्र प्रसाद, ***प्रकाशक***- विकास पेपर बैक्स, IX/221, मेन रोड़, गांधीनगर, दिल्ली-110031, ***पृष्ठ***-164, ***मूल्य***-175 रुपये, ***सन्***-2008

कहावतों का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। इनका प्रयोग कथन को

अधिक प्रभावी बनाता है। ये कहावतें किस प्रकार चल पड़ीं, इसके पीछे विशेष घटनाक्रम रहे हैं। लेखक ने इस पुस्तक में कहावतों की उत्पत्ति का कथानक दादाजी के माध्यम से बालकों को स्पष्ट कराया है तथा अन्त में प्रत्येक कहावत से शिक्षा दी गई है। कहावत की उत्पत्ति के कथानक काल्पनिक हैं। कहीं-कहीं कहावतों का मूल स्वरूप ठीक स्पष्ट नहीं हुआ है, फिर भी इसमें 51 कहावतों की कहानियाँ बालकों के लिए ज्ञानवर्धक है।

सड़क दुर्घटनाएँ : कारण और निवारण- सिद्धार्थ श्री वास्तव एवं के.एन. श्रीवास्तव, ***प्रकाशक***- किताबघर, 24/4855, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, ***पृष्ठ***-120, ***मूल्य***- 150 रुपये, ***सन्***-2009

सड़क दुर्घटनाएँ विभिन्न कारणों से होती हैं। उन कारणों की चर्चा एवं उनसे बचाव के उपायों की चर्चा लेखक ने कुशलता से की है। पुस्तक में दुर्घटनाओं का विश्लेषण कर उनसे परिणाम निकाले गए हैं। पुस्तक पैदलयात्री, चालक के लिए तो उपयोगी है ही, पुलिस, परिवहन, न्यायालय या वाहन-उत्पादन इकाई में कार्यरत व्यक्तियों के लिए भी पठनीय है।

सफलता कैसे मिले?- ईश्वर सिंह 'शिक्षक', ***प्रकाशक***- विकास पेपर बैग्स, IX/221, मेन रोड़, गांधीनगर, दिल्ली-110031, ***पृष्ठ***-128, ***मूल्य***-125 रुपये, ***सन्***-2009

जीवन में सकारात्मकता का विकास एवं भ्रान्त धारणाओं का निराकरण हो तो सफलता व्यक्ति के चरण चूम सकती है। लेखक की पुस्तक सामान्य पाठकों के लिए उपयोगी है।

गमा- संकलन एवं सम्पादन- श्री धर्मचन्द जैन, ***प्रकाशक***-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, ***पृष्ठ***- 120, ***मूल्य***- 10 रुपये, ***सन्***- 2009

भगवती सूत्र के 24 वें शतक के 1 से 24 उद्देशकों के आधार पर 'गमा' का थोकड़ा चलता है। यद्यपि ज्ञान थोकड़े की पुस्तकें अन्य स्थानों से भी प्रकाशित हैं, किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में ऋद्धि से सम्बन्धित विषयों को स्पष्ट एवं सरल ढंग से प्रस्तुत करने हेतु दिए गए ज्ञातव्य तथा नोट अपने आप में महत्त्वपूर्ण हैं।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 मई, 2009)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	बडोदरा से दिनांक 28.04.2009 को विहार हुआ। मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए अहमदाबाद की ओर दो सिंघाडों में विहार चल रहा है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पाली विराज रहे हैं। यहाँ से पीपाड़ की ओर दीक्षा-प्रसंग से विहार होने की संभावना है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	घोड़ों के चौक पधारे हैं। उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गोविन्दगढ़ में धर्मप्रभावना कर रहे हैं। अग्रविहार तिलोरा, थांवला, पीह होते हुए भकरी की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	8 अप्रेल को वर्धा पधारे हैं। अग्र विहार नागपुर की ओर संभावित है।
तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	भोपालगढ से 9 अप्रेल को विहारकर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसकर 18 अप्रेल को लक्ष्मीनगर, जोधपुर पधारे हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	माधवनगर से कराड होते हुए 22 अप्रेल को सतारा पधारे हैं। अग्रविहार पूना होते हुए मुम्बई की ओर संभावित है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	जयपुर से 15 अप्रेल को विहार कर चाकसू, निवाई होते हुए टोंक पधारे हैं। अग्रविहार कोटा की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी	:	बडोदरा से विहार कर अहमदाबाद की

म.सा. आदि ठाणा 11		ओर पधारने की संभावना है।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	अजमेर से विहारकर पुष्कर, थाँवला, मेड़ता होते हुए 24 अप्रेल को गोटन पधारे। दीक्षा प्रसंग पर पीपाड़ पधारना संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलोर के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पालनपुर, सिरोही, सुमेरपुर होते हुए 22 अप्रेल को पाली पधारे हैं। अग्रविहार पीपाड़ की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	बलसाड अंकलेश्वर होते हुए 18 अप्रेल को सुभानपुरा बड़ोदरा पधारे। महासती वृन्द का अग्र विहार बड़ोदरा से अहमदाबाद की ओर संभावित है।

आचार्यप्रवर द्वारा गुजरात क्षेत्र में धर्मप्रभावना

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.आदि ठाणा 9 गुजरात प्रदेश के ग्राम नगरों को अपने पावन चरणों के संस्पर्शन से धन्य बनाते हुए दिनांक 21.4.2009 को मांजलपुर से विहार कर 9 कि.मी दूरस्थ बड़ोदरा के उपनगर गुमानपुरा के स्थानक भवन में पधारे।

दिनाँक 27 अप्रेल 09 को प्रातः वहाँ से विहार कर वीर सावरकर प्राथमिक शाला, खपोर, गौरवा के भवन में बिराजे, वहाँ पर ही महासती मण्डल ठाणा 16 का पदार्पण हुआ। तप संपूर्ति एवं नवीन व्रत धारण करने का महान् पर्व अक्षय तृतीया महोत्सव सामायिक साधना एवं व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रभावी प्रेरणा के साथ विशाल जनमेदिनी के मध्य सिनर्जी स्क्वायर, कृष्णा इण्डस्ट्रियल इस्टेट, गोरवा, G.I.D.C., गौरवा (बड़ोदा) के विशाल प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

स्थानीय एवं निकटस्थ/दूरस्थ क्षेत्रों से पधारे हुए श्रावक-श्राविकावृंद ने सामायिक-साधना में बिराज कर तप के महत्त्व को अपने गुरु भगवन्त एवं महासती वृंद के प्रवचनों के माध्यम से सुना। धर्म-सभा को सर्वप्रथम तत्त्व चिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने संबोधित कर संभागी बंधु-भगिनियों को श्रद्धाभिभूत कर

दिया, आपने अपनी ओजस्वी वाणी में तप का विवेचन किया, तत्पश्चात् स्तोक निष्णात श्रद्धेय बलभद्र मुनि जी म.सा., श्री योगेश मुनि जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. ने क्रमशः अपने प्रभावोत्पादक वचनों में प्रवचन फरमाये। इसके पश्चात् परमाराध्यदेव पूज्य आचार्य भगवंत ने तप की व्याख्या करते हुए अपने ओजस्वी शैली में जीवन में तप की महत्ता प्रतिपादित करते हुए श्रोताओं को भावाभिभूत कर दिया। श्रीमान् किस्तूरचंदजी सा बाफना ने स्वनिर्मित काव्य पंक्तियों के प्रस्तुतीकरण द्वारा तप की महिमा का बखान एवं कार्यक्रम को सफलता प्रदान करने में सहयोगी जनों का आभार व्यक्त किया।

इसी शुभ अवसर पर विरक्त बंधु श्री जितेन्द्र जी कोठारी का अभिनन्दन-स्वागत किया गया। भाई कोठारी ने अपने विचार धर्म सभा के समक्ष प्रस्तुत कर आभार प्रकट किया। जलगाँव विद्यापीठ के प्राचार्य श्रीमान् प्रकाशचन्द जी जैन ने वर्षीतप पारणक हेतु पधारे हुए 35 तप साधक/साधिकाओं के नामों की सूची का वाचन कर उनका परिचय प्रस्तुत किया।

तप-साधकों के नाम- जोधपुर से मूलचन्द जी बाफना, मूलचन्द जी लुणावत, मीना देवी मूलचन्द जी लुणावत, उषादेवी प्रकाशचन्द जी कांकरिया, सज्जनकंवर भीकमचन्द जी मेहता, कमलादेवी मुकनचन्द जी भंसाली, पुष्पादेवी केवलमल जी झामड़, **भोपालगढ़ से** पुष्पादेवी संपतराज जी रांका, प्रेमलता सोहनलाल जी बोथरा, कमलादेवी भंवरलाल जी पींचा, कमलादेवी शांतिलाल जी पींचा, कंचनदेवी जी बोथरा, **मुम्बई से** चंचलदेवी किशोर जी रांका, अशोक जी कांकरिया, माखन जी कांकरिया, लीलाबाई महावीराज जी भंडारी, मंजुला रतनराज जी भंडारी, **बंगारपेठ से** बसन्ता बेन जवरीलाल जी नाहटा, **कानपुर से** लाड बाई धनराज जी लोढ़ा, **बैंगलोर से** चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, कंचनकंवर चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, सरोजा देवी सुगनचन्द जी खिंवसरा, कनकाबाई पारसमल जी मुथा, **शहादा से** सरिता बाई प्रकाशचन्द जी चौपड़ा, **सूरत से** लाभचन्द जी नाहर, लाड बाई लाभचन्द जी नाहर, **रौलावा से** शकुन्तला बाई रतनलाल जी रांका, **दाहोद से** उमरावदेवी इन्दरचन्द जी सुराणा, **होलनांथा से** वंदना जी खिंवसरा, शकुन्तला बाई जी खिंवसरा, **हीरादेसर से** मांगी देवी चंपालाल जी लोढ़ा, **चेन्नई से** किरण देवी गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, **जालना से** प्रकाश जी मुणोत, अनिता प्रकाश जी मुणोत तथा **हुबली से** शोभादेवी उच्छबराय

जी सालेचा।

आप श्री की चरण सन्निधि में उत्साहपूर्वक तप-पारणक महोत्सव एवं नवीन व्रत ग्रहण करने का कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुआ। इसी शुभ अवसर पर परमाराध्य देव ने विरक्ता बहिन सुश्री सिंधुजी कवाड़ की **भागवती दीक्षा 28 मई 2009** को संपन्न कराने हेतु स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की। साथ ही नागपुर श्री संघ की लंबे समय से चातुर्मासार्थ चली आ रही विनति को मानते हुए **नागपुर को व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा** की स्वीकृति प्रदान कर श्री संघ को कृतार्थ करने की कृपा की।

उपाध्याय प्रवर के सिंवाची एवं मारवाड़ क्षेत्र में विचरण से धर्मप्रभावना

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 के 28 मार्च को पचपदरा पधारने पर ज्ञान,ध्यान, त्याग, तप की प्रभावी प्रेरणा मुनिवृन्दों के प्रवचन के माध्यम से हुई। यहाँ विराजने पर समीप एवं सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं का दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण हेतु आवागमन बना रहा। यहाँ से उपाध्याय श्री दिनाँक 2 अप्रेल को विहारकर मध्यवर्ती क्षेत्रों जांनीयाना, कनाना को फरसते हुए 6 अप्रेल को समदड़ी पधारे। समदड़ी पधारने पर स्थानीय लोगों ने एवं बालोतरा,पचपदरा, जोधपुर, पाली आदि विविध ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने मुनिवृन्द की सेवा का लाभ लिया। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी 7 अप्रेल को महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रवचनादि का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रवचन सभा में सैकड़ों की तादाद में अबाल-वृद्ध जनों ने उपस्थित होकर सन्तरत्नों के प्रभावी प्रेरणादायी प्रवचन का श्रवण किया। सामायिक गणवेश में साधना-आराधना हेतु श्रावक-श्राविकाएँ संलग्न रहे, साथ ही त्याग-तप की महती प्रभावना हुई। मुनिवृन्द द्वारा चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर के जीवन पर प्रकाश डालकर उनके जीवनादर्शी एवं सिद्धान्तों के अनुकरण करने की प्रभावी प्रेरणा की गयी। तदुपरान्त 8 अप्रेल को करमावास, लाखेरा, मजल आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसकर 19 अप्रेल को आपश्री पाली पधारे। पाली में पूर्व से विराजित संघशास्ता श्री सुदर्शन लाल जी म.सा. (पंजाबी) के ज्येष्ठ सुशिष्य महास्थविर, तपस्वीराज श्री प्रकाशचन्द जी म.सा., विद्वत्रत्न श्री जयमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4,

उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा-4 की अगवानी हेतु पाली प्रवेश के अवसर पर समुपस्थित हुए। तदुपरान्त तीन दिन तक सामूहिक प्रवचन का कार्यक्रम भी सुराणा मार्केट स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में चलता रहा। दोनों सम्प्रदायों के स्नेह मिलन को देखकर प्रत्येक श्रावक-श्राविकाएँ भावाभिभूत हुए बिना नहीं रहे। उपाध्याय प्रवर के पाली प्रवेश के समय समाचार प्राप्त हुए कि ज्ञानगच्छीय सन्तरत्न श्री गुलाबमुनि जी म.सा. की पाली से लगभग 17 कि.मी. दूर राजमार्ग में आकस्मिक दुर्घटना हो गयी और उपचार हेतु पाली चिकित्सालय में लाया गया है। समाचार प्राप्त होते ही तुरन्त श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. चिकित्सालय पधारे। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा एवं विद्वत्रत्न श्री जयमुनि जी म.सा भी तत्र पधारे। अन्य सन्त श्री शालिभद्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली पधारने तक 19 अप्रेल को श्रद्धेय श्री जयमुनि जी म.सा.एवं श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. चिकित्सालय में ही सेवार्थ रहे। अगले दिन अन्य सन्त रत्नों का पदार्पण हुआ एवं उपाध्याय प्रवर आदि सन्त रत्नों ने भी उनके स्वास्थ्य सुधार की पृच्छा की। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 भी 22 अप्रेल को पाली पधारे। अक्षय तृतीया का प्रसंग नजदीक होने के कारण पारणक हेतु पधारने वालों का क्रम निरन्तर बना रहा।

उपाध्यायप्रवर एवं महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में 23 तप साधकों ने पाली श्री संघ द्वारा आयोजित तप पूर्णाहुति समारोह में भाग लिया। जो साधक क्षेत्र की दूरी एवं अन्य कारणों से बडोदरा नहीं पधार सके, उन साधकों ने तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार किये। इस अवसर पर जोधपुर, बीकानेर, भोपालगढ़, पीपाड़, बालोतरा, चेन्नई आदि विभिन्न ग्राम-नगरों से तप-साधक एवं परिजन उपस्थित थे।

प्रवचन के माध्यम से उपाध्यायप्रवर, श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने अक्षय तृतीया की ऐतिहासिकता का परिचय व्यक्त कर इस अनुष्ठान एवं तपोनुष्ठान में विकृति न आवे, इस हेतु प्रेरणा प्रदान की।

एक्यूप्रेशर एवं अहिंसक चिकित्सा केन्द्र का शुभारम्भ

आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान, जोधपुर के अन्तर्गत एक्यूप्रेशर एवं अहिंसक चिकित्सा केन्द्र का शुभारम्भ दिनांक 04 अप्रेल, 2009 को 'पूज्यकृपा' 32-नेहरूपार्क, जोधपुर में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उदारमना

समाजसेवी श्री पदमचन्द जी मेहता एवं विशिष्ट अतिथि श्री रंगरूपमल जी कोठारी सेवानिवृत्त आई.ए.एस. ने केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। ट्रस्ट के न्यासी श्री नवरतन जी डागा ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान की स्थापना के उद्देश्यों की जानकारी दी। अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञ डॉ.चंचलमल जी चोरडिया ने बिना दवा से असाध्य रोगों का उपचार करने वाली अनेक अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान, जोधपुर की भावी योजना प्रस्तुत करते हुए उपस्थित महानुभावों से सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा रखी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री रंगरूपमल जी कोठारी ने इन पद्धतियों द्वारा अपने एपेन्डाइटिस रोग के मात्र 24 घण्टे में उपचार की बात कही। साथ ही उन्होंने कहा कि अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियाँ अधिक प्रभावशाली, मौलिक एवं वैज्ञानिक हैं जिनमें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव की संभावना नहीं होती। मुख्य अतिथि श्री पदमचन्द जी मेहता ने इन पद्धतियों के और अधिक प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के अन्त में न्यासी श्री सुभाष जी जैन ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाश जी सालेचा ने किया। कार्यक्रम मे उपस्थित अधिकांश महानुभावों ने कार्यक्रम के पश्चात् चिकित्सा केन्द्र का अवलोकन किया एवं अपने रोगों का उपचार करवाया। इस केन्द्र पर नियमित रूप से प्रातः 7.30 से 10.30 तथा सायं 5 से 7 बजे तक एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ श्री रंगरूपमल जी डागा के नेतृत्व में सुयोग्य विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न रोगों का उपचार किया जायेगा।

जलगाँव में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ-जलगाँव द्वारा दिनाँक 21 से 25 अप्रेल 2009 तक पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर श्री रतनलाल सी. बाफना गौ सेवा अनुसन्धान केन्द्र कुसुम्बा-जलगाँव में आयोजित किया गया।

इस शिविर में जलगाँव, धुलिया, नाशिक जिलों के विभिन्न ग्राम-नगरों के 314 भाई-बहिनों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। प्रशिक्षण कार्य में श्री महावीर जैन स्वाध्यायी विद्यापीठ, जलगाँव के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, साधनाशील युवा अध्यापक श्री दिनेश जी भंसाली-बैंगलोर, सौ. मंगला बाई

चोरड़िया-जलगाँव, श्री हीरालाल जी मंडलेचा-जलगाँव, श्री मनोज जी संचेती-जलगाँव, सौ. किरण जी कोठारी-बोदवड़, विरक्ता मधुबाला जी कांकलिया-जलगाँव की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। विशेष उपलब्धि के रूप में इस शिविर में 43 नये स्वाध्यायी बने।

चार कक्षाओं में विभाजित कर अध्ययन कराया गया। रत्नसंघीय शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल सी.बाफना, श्री महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कस्तूरचन्द जी बाफना, श्री कंवरलाल जी सिंघवी एवं जलगाँव संघ के अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी चोरडिया का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

सभी शिविरार्थियों को आने-जाने का मार्ग व्यय तथा प्रोत्साहन पुरस्कार श्री रतनलाल सी.बाफना-जलगाँव की ओर से प्रदान किया गया।

जयपुर में वीतराग ध्यान शिविर का आयोजन

श्री वीतराग साधना ध्यान केन्द्र द्वारा दिनाँक 17 मई से 24 मई तक हस्ती धर्मशाला, दैनिक भास्कर के पास, जवाहरलाल नेहरु रोड़, जयपुर में विशिष्ट ध्यान साधक श्रीमान् कन्हैयालाल जी लोढ़ा के सान्निध्य में ध्यान शिविर रखा गया है। उपर्युक्त ध्यान शिविर में भाग लेने वाले साधकों से निवेदन है कि वे शिविर में भाग लेने हेतु शीघ्र सम्पर्क करें।- *शान्ता मोदी, संयोजिका, वीतराग ध्यान साधना केन्द्र, सी-26, देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर-303018 (राज.) फोन : 0141-2710077, 93144-70972 (मोबाइल)*

श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव में प्रवेश का सुअवसर

विद्यापीठ की स्थापना के उद्देश्य-

(1) देश के कोने-कोने में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान् सुयोग्य प्रचारक तैयार करना।

(2) बच्चों में धर्म के संस्कार डालने के लिए स्थान-स्थान पर धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना करवाकर सुयोग्य अध्यापक तैयार कर भेजना।

(3) स्वाध्याय संघों व सामायिक संघों की स्थापना करना तथा उनके संचालन के लिए योग्य स्वाध्यायी तैयार कर भेजना।

आवासीय योजना–

(1) धार्मिक अध्यापक तैयार करने हेतु :–

1. न्यूनतम योग्यता– 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण, उम्र 17–21 वर्ष।
2. तीन वर्ष तक विद्यापीठ में रहकर धार्मिक अध्ययन।
3. अध्ययन काल में भोजन, आवास तथा धार्मिक–शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था के साथ प्रथम वर्ष में रुपये 600/–, द्वितीय वर्ष में रुपये 750/– तथा तृतीय वर्ष में रुपये 900/– प्रतिमाह छात्रवृत्ति। पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर समाज सेवा में रुपये 5000/– प्रतिमाह एवं दक्षिण में 7000/– रुपये प्रतिमाह तक सर्विस। 10 वर्ष तक समाज सेवा में निरन्तर सर्विस करने पर विशेष सम्मान पुरस्कार। प्राइवेट परीक्षा की छूट।

(2) स्वाध्यायी तैयार करने हेतु:–

न्यूनतम योग्यता 10 वीं कक्षा। अध्ययन काल में भोजन, आवास एवं धार्मिक शिक्षण की निशुल्क व्यवस्था। कॉलेज शिक्षण की छूट। धार्मिक शिक्षण पाठ्यक्रमानुसार।

प्रवेश तिथि : जून माह से प्रारम्भ

सम्पर्क करें:– प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य, श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ, व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर, जलगाँव–425001 (महा.) फोन : 0257–2232315 (ऑ.), 2235658 (नि.)

सुझाव एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन नवयुवक मण्डल, जोधपुर द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सुझाव एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबंध का विषय है– **गर्मी की छुट्टियों का धार्मिक उपयोग एवं सार्थकता कैसे संभव है?** इस विषय पर आपके ध्यान में जितने भी सुझाव, योजना, प्रवृत्तियाँ, कार्यक्रम आते हैं आप उनकी जानकारी लिखित रूप में प्रेषित कर सकते हैं। यदि आप चाहें तो इस विषय पर अपने विचार निबंध रूप में भी लिख सकते हैं। उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने वाले उत्कृष्ट प्रयासों के आधार पर 21 प्रतियोगियों को सौ–सौ रुपये के पुरस्कार देने की योजना है। निबंध प्रविष्टि एवं

सुझाव भेजने की अंतिम तिथि- 15 जुलाई, 2009 है। -*नितेश 'नागोता' जैन, महामंत्री-श्री. अ.भा. सुधर्म जैन नवयुवक मण्डल, 175, जैन हाउस, ए.के.जैन एण्ड कंपनी, भवानीमंडी-326502(राज.) फोन : 07433-222621, 94131-01489 (मोबाइल)*

जैन कॉन्फ्रेंस शताब्दी अभिनन्दन-ग्रन्थ का समर्पण

जैन कॉन्फ्रेंस के ऐतिहासिक दस्तावेज शताब्दी अभिनन्दन ग्रन्थ का समर्पण 3 मार्च को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल के कर कमलों में सम्पादक मण्डल द्वारा किया गया। सभा में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् कान्तिलाल जैन, महामंत्री श्री पारस छाजेड़ एवं शीर्ष पदाधिकारी उपस्थित थे। अभिनन्दन ग्रन्थ में संस्था द्वारा किये गए मानवसेवी कार्यों और सामाजिक आध्यात्मिक एकता के ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये गए हैं। विगत शताब्दी में हुए राष्ट्रीय परिवर्तन और जैन समाज के सामाजिक उत्कर्ष का भी उल्लेख है। इस ग्रन्थ को देश भर के वाचनालयों में रखे जाने की योजना है। इस ग्रन्थ का सम्पादन श्री नेमीचन्द चौपड़ा, श्री पारसमल छाजेड़, श्री शेरसिंह जैन, श्री अविनाश चोरड़िया, श्री पारस मोदी, श्री बालचन्द खरवड़ और श्री हुकमचन्द जैन ने किया।

लंदन में जैन अध्ययन कार्यशाला सम्पन्न

लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरियंटल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज **(SOAS)** के सेन्टर ऑफ जैन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ लुंड (स्वीडन) और विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूजियम लन्दन के संयुक्त तत्त्वावधान में लन्दन यूनिवर्सिटी के बर्लेन गैलरी सभागार में 12 एवं 13 मार्च 2009 को 11 वां **जैन स्टडीज वर्कशाप** का भव्य आयोजन हुआ। इसमें 12 मार्च 09 को यूनिवर्सिटी ऑफ म्यूनिख के प्रो. बंशीधर भट्ट का विस्तार व्याख्यान हुआ। उन्होंने प्राचीन जैन स्रोतों के आधार पर 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन और चिन्तन पर प्रकाश डाला। चातुर्मास धर्म, जिनकल्प, स्थविरकल्प आदि बिन्दुओं पर श्वेताम्बर साहित्य में जो सन्दर्भ हैं, उनकी दिगम्बर साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

13 मार्च, 09 को **प्राकृत जैन ग्रन्थ और दर्शन** विषय पर कार्यशाला में चार सत्र आयोजित हुए। डॉ. पीटर फ्लुगल-लन्दन, श्रवणबेलगोला के

निदेशक प्रो. प्रेम सुमन जैन, डॉ. जयेन्द्र सोनी-जर्मनी, डॉ. नलिनी बलवीर-फ्रांस, प्रो. बलसेरोविज-पोलैण्ड आदि अनेक विद्वानों एवं विदुषियों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस कार्यशाला के अवसर पर 'जैन स्टडीज' न्यूजलैटर का भी प्रकाशन किया गया। प्राकृतभारती, जयपुर एवं श्रवणबेलगोला संस्था के द्वारा प्रकाशित 'प्राकृत लर्निंग मैन्युअल' की प्रथम प्रति प्रो. विलियम बोली को भेंट की गई। यह भी सूचना दी गई कि नवम्बर 2010 में श्रवणबेलगोला में 'इण्टरनेशनल प्राकृत कान्फ्रेंस' का आयोजन किया जाएगा। वर्जवर्ग (जर्मनी) में सितम्बर 2009 में 'प्राकृत समर स्कूल' आयोजित करने की भी सूचना दी गई। सितम्बर 2009 में क्योटो, जापान में सम्पन्न होने जा रहे 'वर्ल्ड संस्कृत कान्फ्रेंस' में जैनविद्या का एक सेक्शन रखने की भी जानकारी प्रसारित की गई।

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, चेन्नई की ओर से श्री स्थानकवासी जैन महिला संगठन तमिलनाडु के तत्त्वावधान में नारी समाज में एकता, समन्वय समर्पण, साधना सेवाभाव एवं ज्ञानवृद्धि को जागृत करने के उद्देश्य को लेकर भ.महावीर जन्म कल्याणक दिवस के पूर्व दिनाँक 6 अप्रेल, 2009 को महिला स्थानक, साहुकारपेट में विभिन्न नाटिकाओं एवं धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। इसमें तमिलनाडु महानगर के अनेक महिला संघ आमन्त्रित थे। मुख्य अतिथि के रूप में सम्यक् ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्रीमान् पी.एस.सुराणा पधारे तथा श्रीमान् अशोक जी कवाड़, पारसबाई जी भण्डारी, ललिता जी भण्डारी, कमला जी मेहता, मदनबाई जी खाबिया व चन्द्रकला जी गेलेडा महानुभव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मण्डल ने, स्वागत- गीत श्रीमती कमला जी मेहता ने और धन्यवाद मधु सुराणा ने ज्ञापित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन सरोज जी कोठारी द्वारा किया गया।

चेन्नई- श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न युवती मण्डल, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ एवं विभिन्न संघों के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वाध्याय-भवन के प्रांगण में मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी का स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। संघ मंत्री श्री जवाहरलाल जी कर्णावट द्वारा मंगलाचरण के अनन्तर मुमुक्षु भाई का परिचय

दिया गया। अभिनन्दन सभा में श्री रमेश जी जांगड़ा, श्री शिवराज जी खाबिया, श्री पी.एस. सुराणा, श्री कैलाशमल जी दूगड़, श्री भंवरलाल जी गोठी, श्रीमती मधुजी सुराणा, श्री भंवरलाल जी गोठी आदि अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धाभाव एवं संयम यात्रा के लिए मंगल कामना व्यक्त की। वरिष्ठ सुश्रावक श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल ने माल्यार्पण कर, श्री दुलीचन्द जी बागमार ने शाल ओढ़ाकर तथा संघाध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुग्गड़ ने खोल भराई की रस्म से मुमुक्षु बन्धु का स्वागत-अभिनन्दन किया। मुमुक्षु भाई ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह अभिनन्दन मेरा नहीं, अपितु मेरे जीवन निर्माता गुरु का एवं संयम-चारित्र का है। कार्यक्रम संचालक एवं संघ मंत्री श्री जवाहरलाल जी कर्णावट ने अपनी अभिव्यक्ति में कहा-

ज्ञान चेतना की चमकती चाँदनी का अभिनन्दन।
संयम-साधना की दमकती रोशनी का अभिनन्दन॥

नई दिल्ली- भारत सरकार के डाक विभाग ने खरतरगच्छ महासंघ के यशस्वी अध्यक्ष श्री हरखचन्द जी नाहटा की स्मृति एवं सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया है। महाराष्ट्र राज्य के राज्यपाल श्री एस.सी.जमीर के करकमलों से यह डाक टिकट जारी किया गया।

हुबली- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली द्वारा संघ की आम सभा में निर्णय लिया गया कि विवाह, आशीर्वाद समारोह एवं किसी सामूहिक समारोह में सामूहिक रात्रि-भोजन का सम्पूर्ण निषेध रहेगा। इसके साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि सामूहिक भोज में जमीकन्द का उपयोग नहीं किया जायेगा। ये निर्णय आषाढ शुक्ला चतुर्दशी, 6 जुलाई, 2009 से लागू होंगे।

बीजापुर- जनसेवा के उद्देश्य से स्थापित एस.आर.भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा सज्जनराज भंवरी देवी भण्डारी चेरिटेबल पोली क्लिनिक का रायचूर में निर्माण किया गया, जिसका उद्घाटन 14 फरवरी को हुआ। यह चिकित्सालय न्यूनतम लागत पर रोगग्रस्त जनता को लाभान्वित कर रहा है। इसी ट्रस्ट द्वारा लगभग साढ़े छह लाख रुपये की डायलिसिस मशीन चेन्नई चिकित्सालय को उपहार स्वरूप प्रदान की गई।

जोधपुर- हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के तत्त्वावधान में दिनाँक 17 मई, 2009 से 7 जून, 2009 तक बच्चों में धार्मिक

एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने के उद्देश्य से शहर के विभिन्न आठ केन्द्रों (घोड़ों का चौक, पावटा, नेहरू पार्क, लक्ष्मीनगर, सिंहपोल, सरस्वती नगर, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, प्रतापनगर आदि) पर शिविर लगाया जायेगा, जिसमें सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, तीर्थंकरों की जीवनी आदि धार्मिक ज्ञान के साथ विनय, सरलता, व्यसन-मुक्ति, दान, अहिंसा आदि जीवनोपयोगी विषयों का अध्ययन कराया जायेगा ताकि यह नई पीढ़ी समाज एवं देश के लिये नवीन कार्य कर सके। -*शेखर सुराणा, शाखा सचिव*

दिल्ली- श्रमण संघीय सलाहकार श्री सुमतिप्रकाश जी महाराज का स्वर्ण जयन्ती दीक्षा समारोह 5 अप्रेल, 2009 को लाल किले के समक्ष परेड ग्राउण्ड में सम्पन्न हुआ तथा राष्ट्रपति भवन में अभिनन्दन समारोह का पृथक् से आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित उपस्थित हुईं तथा द्वितीय चरण के समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण किया। सभा का संचालन समाजसेवी श्री सुभाष जी ओसवाल ने किया।

बधाई/चुनाव

मुख्यमंत्री द्वारा डॉ. सागरमल जी जैन सम्मानित

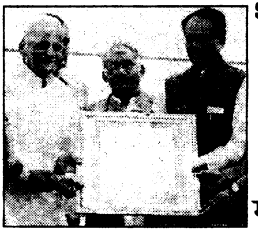

शाजापुर- भारतीय साहित्य, कला एवं संस्कृति को समर्पित शाजापुर नगर की 'पहचान' संस्था द्वारा 19 फरवरी 2009 को अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन विद्वान् डॉ. सागरमलजी जैन के सम्मान में 'अमृत महोत्सव' समारोह का आयोजन किया गया। समारोह पूज्या पुष्पाजी म.सा. आदि ठाणा-7 की निश्रा, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के मुख्य आतिथ्य तथा श्री पारस जी जैन खाद्य आपूर्ति मंत्री, म.प्र. शासन की अध्यक्षता में स्थानीय प्रह्लाद जीन परिसर में उपस्थित विशाल जन समुदाय के बीच सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने गुरु डॉ. जैन को अभिनन्दन-पत्र भेंटकर उनका बहुमान किया। इस अवसर पर उपस्थित साध्वी मंडल ने डॉ.सागरमल जी जैन को 'ज्ञान महोदधि' की उपाधि से अलंकृत किया। डॉ.

जैन द्वारा सम्पादित अध्यात्मसार, ध्यानदर्पण एवं ऋषिभाषितः एक अध्ययन नामक पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। इसके अतिरिक्त नगर की 100 संस्थाओं ने भी इस अवसर पर डॉ. जैन का बहुमान किया।

जयपुर- युवा श्री रवि जैन सुपुत्र श्री राकेश जैन, सुबोध स्कूल, सांगानेर ने अखिल भारतीय नागरिक विकास केन्द्र, औरंगाबाद द्वारा अयोजित हस्त-लेख प्रतियोगिता में श्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया है।

श्रवणबेलगोला- जैन साहित्य सेवा के उपलक्ष्य में श्री क्षेत्र, जैन मठ, श्रवणबेलगोला द्वारा श्रीमती डॉ. सरोज जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-हिन्दी विभाग, बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ को श्री गोम्मटेश्वर विद्यापीठ साहित्य अवार्ड कर्नाटक के पूर्व लोकायुक्त, न्यायविद् श्री एम.जे. इन्द्रकुमार के कर कमलों से प्रदान किया गया। कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने 21000 रुपयों का चेक और फल मंजूषा डॉ. जैन को भेंट की।

जोधपुर- सुश्री रुचि भंसाली सुपुत्री श्री गिरीश कुमार भंसाली, लक्ष्मीनगर की नियुक्ति फीडर मैनेजर(AEN) के पद पर जोधपुर विद्युत वितरण निगम, जोधपुर द्वारा बिलाड़ा विद्युत मंडल में की गई है।

सुकेणा (नासिक)- श्री केतन ललित गाँधी ने **MBBS** परीक्षा उत्तीर्ण कर पोस्ट ग्रेज्युएशन की प्रवेश परीक्षा **MHCT** में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

श्रद्धाञ्जलि

महासती उमरावकंवर जी 'अर्चना' का स्वर्गगमन

अजमेर- काश्मीर प्रचारिका, योगेश्वरी महासती श्री उमराव कंवर जी 'अर्चना' का 22 अप्रेल 2009 को प्रातः 4.15 बजे संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आपने प्रातः 4 बजे महावीर कॉलोनी स्थित महावीर भवन में यावज्जीवन संथारा ग्रहण किया। आप लगभग एक माह से अस्वस्थ थे तथा रात्रि में 11 बजे उन्हें जयपुर से लाया गया था। फायसागर रोड़ स्थित पार्श्वनाथ मानव सेवा संस्थान परिसर में पार्थिव देह का अंतिम संस्कार किया गया, जिसमें जनसैलाब

उमड़ पड़ा।

आपका जन्म किशनगढ के दादिया ग्राम में वि.सं. 1979 में हुआ तथा वि.स. 1994 में नोखामण्डी में पूज्य प्रवर्तक श्री हजारीमल जी म.सा. से दीक्षा अंगीकार कर आप महासती श्री सरदारकंवर जी की शिष्या बनी। आप स्थानकवासी समाज में विदुषी एवं विचारशील साध्वी थीं। आपके व्यक्तित्व में ओज एवं माधुर्य का समन्वय था तथा प्रवचनशैली स्पष्ट, निर्भीक एवं प्रभावशाली थी। आपकी अनेक साहित्यिक कृतियाँ प्रकाशित हैं, यथा- आम्रमंजरी, अर्चना और आलोक, अर्चना के फूल, हिम और आलय, जैन योग ग्रन्थ चतुष्टय आदि। आपके उपदेश से सेवा के क्षेत्र में अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं। पार्श्वनाथ मानव सेवा संस्थान, अजमेर भी उनमें से एक है। आप धर्मवृद्धि एवं ज्ञान-विकास के साथ प्राणिमात्र की भलाई के लिए भी चिन्तनशील रहीं।

चेन्नई- दृढ़धर्मी, श्रद्धानिष्ठ एवं संघ समर्पित अनन्य गुरुभक्त उदारमना

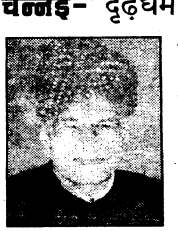

सुश्रावक श्रीमान् उदयराज जी सुराणा का 5 अप्रेल 2009 को प्रातः 5.00 बजे हृदयगति रुक जाने से स्वर्गगमन हो गया। आप आचार्य हस्ती के संदेश सामायिक-स्वाध्याय को अपने जीवन का आयाम बनाकर आत्मसात् करते हुए प्रतिदिन लगभग 7-8 सामायिक एवं स्वाध्याय में निरन्तर संलग्न रहते थे। गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति आपकी अटूट आस्था एवं श्रद्धा भक्ति थी। आपका जीवन सहिष्णुता, वात्सल्य, करूणा एवं सरलता से ओत-प्रोत था। आप धर्म-साधना में सतत जागृत रहते तथा गुप्त दान देने में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने सामाजिक संस्थाओं चिकित्सा, ज्ञान आदि कई क्षेत्रों में गुप्तदान देकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आप पारिवारिक संगठन को बनाये रखने में ही विश्वास रखते थे। आपके जीवन में रात्रि-चौविहार-त्याग, जमीकन्द-त्याग आदि कई प्रकार के व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण किये हुए थे। आप "सादा जीवन उच्च विचार" की उक्ति को चरितार्थ करने वाले थे। अपने जीवन में आपने एक बार 27 आयम्बिल की बड़ी तपस्या भी की। आप अपने पीछे भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं। आप हमेशा संगठन में ही विश्वास रखते थे, इसी का सुफल है कि आपके द्वारा दिये गये संस्कारों से आपके सुपुत्र गौतमराज जी

सुराणा एवं अन्य सुपुत्र भी आज संघ एवं समाज में आदर्श व्यक्तित्व की छवि के रूप में शोभायमान हैं। -*श्री सुरेश चोरडिया*

कोलकाता- सुश्रावक श्री अमोलकचन्द जी बम्ब, टोंक (राज.) का

आकस्मिक निधन 2 फरवरी को मध्य रात्रि में हो गया। प्रतिदिन रात्रि में 3.30 बजे जगने के पश्चात् आपकी जीवनचर्या प्रारम्भ होती थी तथा आहार-शुद्धि, विचार-शुद्धि और व्यवहार-शुद्धि का आप पूरा ध्यान रखते थे। पूज्य आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. के सांसारिक पौत्र तथा सरलमना श्री वृद्धिकंवर जी म.सा. के सांसारिक भतीजे श्री बम्ब सा. शालीनता, सहजता, मृदुता आदि गुणों से सम्पन्न थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के सम्पर्क में आकर आपने सम्यग्ज्ञान के प्रचार में सहभागिता प्रदर्शित की।

जयपुर- श्री सुरेन्द्र कुमार जी गादिया उर्फ मुन्नाबाबु आगरा वालों का 72 वर्ष की

उम्र में 5 अप्रेल 2009 को स्वर्गवास हो गया। आप स्व. श्री सिताबचन्द जी गादिया आगरा निवासी के सुपुत्र थे। आप प्रिय धर्मी, दृढ़धर्मी, जमीकन्द के त्यागी, तत्त्वचिन्तक तथा स्वाध्याय प्रेमी थे। आपकी उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी म.सा. एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति अनन्य भक्ति थी। आप अपने पीछे पत्नी, पुत्र सुमत जी गादिया, पुत्रवधू, चार पुत्रियाँ एवं भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आप सरल-स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी थे।

भोपाल- धर्मनिष्ठ श्रावक श्री घेवरचंद जी नाहर सुपुत्र स्व. श्री अमरचंद जी

नाहर, भोपाल (म.प्र.) का 30 मार्च, 2009 को रात्रि में 2 बजे संथारा सहित देवगमन हो गया। आप विगत 20 दिनों से एक कप दूध ही ग्रहण कर रहे थे। आपकी पूज्य गुरुदेव पर दृढ़ आस्था थी। आप विगत 65 वर्षों से प्रति रविवार का आयंबिल व प्रतिदिन 15 सामायिक करते थे। आपके परिवार में एक पुत्री ने भी दीक्षा अंगीकार की है, जो श्रमण संघ में पुष्पकंवर जी म.सा. के नाम से विख्यात हैं।

नागपुर- सुश्राविका श्रीमती उमरावबाई बुंदेला धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचन्द

बुंदेला (मूल निवासी पीपाड़) का 75 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। वे अत्यधिक सहनशील थीं और धर्माराधना में रुचि रखती थीं। आपने पाँच वर्षीतप, सोलह, पन्द्रह, ग्यारह की तपस्याएँ एवं कई अठाइयाँ की। आपकी आचार्य श्री हस्ती के प्रति अनन्य श्रद्धा थी।

जयपुर- सुश्रावक श्री नवरतनमल जी हीरावत का 82 वर्ष की वय में 20 अप्रेल, 2009 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्यप्रवर एवं संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

इन्दौर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्ताबाई कटारिया धर्मपत्नी श्री

सागरमल जी कटारिया का 7 अप्रेल, 2009 (महावीर जयन्ती) को स्वर्गगमन हो गया। आपकी सभी संप्रदाय के साधु-साध्वियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आपके रात्रि भोजन त्याग, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी का त्याग तथा दिन में भी त्याग-व्रत रहता था। आप नित्य 10 से 11 सामायिक एवं स्वाध्याय की साधना में रत रहकर, स्थानक में अनेक महिलाओं को सामायिक, संवर आदि की प्रेरणा देती रहती थी। आप अनेक संस्थाओं से भी जुड़ी हुई थीं।

वेलेचेरी(चेन्नई)- श्री परीश जी कोठारी सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी कोठारी

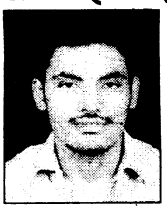

सुपौत्र श्री पन्नालाल जी कोठारी का 19 वर्ष की अल्पायु में 4 अप्रेल 2009 को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप इंजीनियरींग कॉलेज में 2nd Year में अध्ययनरत थे। सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

जलगाँव- सुश्राविका, स्वाध्यायी श्रीमती चंचलबाई हीराचन्द जी लोढ़ा का

66 वर्ष की वय में 19 अप्रेल 2009 को सागारी संथारे के साथ देहावसान हो गया। आप गत 25 वर्षों से स्वाध्यायी बनकर संघ को सेवा देती रही हैं। आप निरन्तर तीन वर्ष से एकान्तर तप, प्रतिदिन पाँच सामायिक करती हैं। आपके सुपुत्र श्री मनोज जी लोढ़ा श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जलगाँव के शाखा सचिव तथा श्री जैन नवयुवक मण्डल, जलगाँव के अध्यक्ष हैं। श्री जितेन्द्र जी लोढ़ा एवं नितिन

जी लोढ़ा भी संघ में समर्पित हैं।

मालेगाँव- सुश्रावक श्री. रतनलाल जी सांखला का 74 वर्ष की आयु में दिनांक 9 फरवरी, 2009 को त्याग प्रत्याख्यान व संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आप सरलमना, मृदुभाषी, उदारमना एवं धर्मपरायण थे। आप नियमित सामायिक करते थे। आपके कनिष्ठ सुपुत्र चि. विनोदकुमार जी ज्ञानगच्छ में दीक्षित हैं। - *प्रेमचन्द सांखला*

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बाबूलाल जी कोठारी सुपुत्र श्री हीरालाल जी

कोठारी का आकस्मिक निधन 14 अप्रेल 2009 को हो गया। आपकी गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अटूट आस्था थी। सीमा सुरक्षाबल से सेवानिवृत्त होकर विगत आठ वर्षों से जोधपुर में रहकर धर्म-साधना करते हुए आप शान्तिपूर्वक जीवन यापन कर रहे थे। आप अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। धर्मपत्नी श्रीमती सरला जी, सुपुत्र श्री प्रवीण जी कोठारी एवं पुत्रवधू श्रीमती आशा जी कोठारी की संघ के प्रति पूर्ण निष्ठा है।

बालोतरा- सुश्रावक श्री मदनलाल जी लुंकड़ का 16 अप्रेल 2009 को देहावसान हो गया। आप साम्प्रदायिक भावना से परे रहकर धर्माराधना, तपाराधना एवं संघ सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के बालोतरा चातुर्मास में आपकी अहर्निश सेवाएँ अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहीं। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित अनन्य गुरुभक्त श्री लुंकड़ साहब का जीवन धार्मिकता के साथ सामाजिक कार्यों में भी सराहनीय रहा।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती पुष्पा कंवर जी धर्मपत्नी श्री नरपतराज जी सिंघवी

का 3 अप्रेल 2009 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आप नियमित धर्माराधन करती थीं। माला फेरने के साथ तिथियों पर आपके लिलोती का त्याग था। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमार एवं सुरेन्द्र कुमार का संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11921 श्री सुभानपुरा स्थानकवासी जैन संघ, 1/1 अर्बुदा नगर, ईलोरा पार्क, बड़ोदरा (गुजरात)
11922 Shri Santosh ji Bafna, Jasraj Distributors, Sidco, Nasik (M.H.)
11923 Shri Lalit Kumar ji Golechha, Ahemdabad (Gujrat)
11924 श्री धर्मवीर जी जैन, नीवी चक्की के पीछे, मंडी रोड, जालन्धर (पंजाब)
11925 श्री पृथ्वीराज जी जैन, मौहल्ला गोविन्दगढ़, जालन्धर (पंजाब)
11926 श्री कुलभूषण जी जैन, दीनदयाल उपाध्याय नगर, जालन्धर (पंजाब)
11927 श्रीमती स्नेहलता जी जैन, जैन स्थानक, टैगोर मार्ग के पास, होशियारपुर (पंजाब)
11928 श्री महेश जी दुग्गड, विसावा कैफे पार्क, नारायण चाल, स्टेशन रोड, परभणी (महाराष्ट्र)
11929 श्री अमित जी मुथा, पोस्ट–मांडेली, तालुका–चरोरा, जिला–चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)
11930 श्रीमती अनुषा जी कोठारी, नीलकंठ टॉवर, गारोदिया नगर, घाटकोपर ईस्ट, मुम्बई (महा.)
11931 श्री शंकरलाल जी जैन, 2-बी, शिव रोड, रातानाडा, जोधपुर (राजस्थान)
11932 श्री सुनील कुमार जी बडोला, बडोला भवन, नगर परिषद् के सामने, भीलवाडा (राजस्थान)
11933 Shri Sajjan Raj ji Vedmutha, Walajapet, Distt. Vellore (Tamilnadu)
11934 Shri S. Nirmal Kumar ji Vedmutha, Walajapet, Vellore (Tamilnadu)
11935 श्रीमती सरोज तलेसरा, न्यू डोरे नगर, सेवाश्रम पुलिया के पास, उदयपुर (राजस्थान)
11936 श्री अजीत कुमार जी सकलेचा, पोस्ट– अलाय. नागौर (राजस्थान)
11937 Shri K.K. Sancheti ji, Konark Tower, Worlinaka, Mumbai (M.H.)
11938 श्री रोहित जी कर्णावट, बी-33, गणेशमार्ग, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान)
11940 Shri Goutham Chand ji Bora, Saidapet, Chennai (Tamilnadu)
11941 श्री गजेन्द्र कुमार जी जैन, क्लर्क कॉलोनी, परदेसीपुरा, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
11943 Smt. Bharti ji Bothra, Main Road, Jiaganj, Murshidabad (W.B.)

250/- श्री व्ही. पारस भय्या चोरड़िया, उज्जैन के सौजन्य से

11939 श्री राकेश जी जैन, पंचवटी कॉलोनी, गुर्जर की थड़ी, जयपुर (राजस्थान)
11942 श्री कुन्दनमल जी मल्हारा, नेहरू बाजार, उदयपुर (राजस्थान)
11944 Shri Sreekanta ji, Srinagar, Bangalore (Karnataka)
11945 श्री धर्मेन्द्रकुमारजी कुदाल,ओ.टी.सी.स्कीम,बधिर विद्यालय के सामने,उदयपुर(रांज.)
11946 श्री प्रेमसिंह जी मेहता, मेहता गली, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
11947 श्रीमती कुसुम जी जैन, बनियावाडी रोड, धार (मध्यप्रदेश)
11948 श्रीमती शोभा जी बोहरा, कवि कालिदास मार्ग, गेंदा बावडी, बडनगर (मध्यप्रदेश)
11949 श्रीमती अनिता जी पीतलिया, महावीर मार्ग, किले के अन्दर, विदिशा (मध्यप्रदेश)
11950 श्रीमती अमिता जी मुणोत, कालाराम मंदिर के पीछे, अमरावती (महाराष्ट्र)
11951 श्री अमित जी जैन,कोनार्क नगर, पाल गाँव, मंगाणा रोड़, जोधपुर (राज.)
11952 श्री भूपेन्द्र जी कुम्भट, काजीवाड़ा, मौती चौक, जोधपुर (राज.)
11953 Sh. Sanjeev Ji Jain, 48, Hemchandra Naskar Road,Kolkatta (W.B.)
11954 श्री विशेष जी जैन, मिश्रीमल ममैया भवन, 17/59, चौ.हा.बो. जोधपुर (राज.)

11955 सुश्री हनी भण्डारी, प्लॉट नं. 186, सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
11956 श्री गौरव जी चौपड़ा, महारानी साड़ी सेन्टर, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)
11957 श्रीमती सरोज जी कांकरिया,अजय आर्ट एम्पोरियम, सर्किट हाउस के पास,जोधपुर
11958 श्रीमती नीताजी जैन, फ्लेट नं. क्यू-504, रोजलेण्ड रेजीडेन्सी गेट नं.4, पुणे (महा.)
11959 श्रीमती त्रिशला जी टाटिया, बी-8, उदय हाउसिंग सोसायटी, छिंदवाड़ा रोड़, नागपुर
11960 श्री राहत जी गांग, 16/392, चौ.हा.बोर्ड, जोधपुर (राज.)
11961 श्रीमती संतोष जी कांठेड़, महावीर नगर, अरिहन्त मेन्शन, ए ब्लॉक,फ्लेट नं.6, पाली
11962 श्री सौरभ जी धारीवाल,406, मिर्धा भवन, प्रथम सी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर(राज.)
11963 श्री मनीष जी टाटिया, मकराना रोड़, जोधपुर (राज.)
11964 श्री अशोक कुमार जी, कोर्ट का मौहल्ला, सोजतसिटी, जिला-पाली (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्री सुनील जी, अनिल जी नाहटा, बंगारपेट (कर्नाटक), अपनी माताश्री श्रीमती बसन्ता बाई जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री जौहरीलाल जी नाहटा के दूसरे वर्षीतप का पारणा आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में बड़ोदरा में सानन्द सम्पन्न किया उसके उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3200/- श्री अमोलकचन्द जी, सुशील कुमार जी बम्ब, कोलकाता, पूज्य श्री अमोलकचन्द जी बम्ब की पुण्य स्मृति में भेंट।

3100/- श्री अभय कुमार जी, सम्पत कुमार जी चोरड़िया, जयपुर, श्रीमान् गुमानमल जी चोरड़िया के 16 दिवसीय चौविहार संलेखना संथारा के साथ समाधि पूर्वक देह त्याग पर उनके परिवार जन की ओर से भेंट।

1100/- श्री के. प्रकाशचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई, श्रीमती लीलादेवी प्रकाशचन्द जी ओस्तवाल की सुपुत्री सौ.कां. सपना का शुभविवाह चि. विकास जी सुपुत्र श्रीमती चंचलदेवी-सज्जनराज जी बैद मूथा, वालाजापेठ के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुमत कुमार जी गादिया, जयपुर,श्री सुरेन्द्र कुमार जी गादिया का स्वर्गवास दिनांक 05/04/2009 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती प्रभा जी, अनुपम जी, अनुरूप जी लोढ़ा, जयपुर, स्व. श्री सुधीर कुमार जी लोढ़ा की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री पी.सी.जैन (अब्बानी), श्रीमती चन्द्रा जी, सुपौत्र रचित एवं राहुल जैन, जोधपुर, द्वारा पूज्या स्व. श्रीमती पारसकंवर जी अब्बानी एवं स्व. श्री चंचलमल सा अब्बानी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सुमतिचन्द जी, सुनीलकुमार जी, सुरेन्द्र जी, सुधीर जी एवं संदीप जी डागा, जयपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री कैलाशचन्द जी डागा की 26 अप्रेल, 2009 को प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती सरला जी, प्रवीणजी एवं आशा जी कोठारी, जोधपुर, स्व. श्री बाबुलाल जी कोठारी के 14.04.2009 को देवलोक गमन होन पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट

1100/- श्री पूनमचन्द जी हीरावत, जयपुर, पूज्य पिताजी नवरतनमल जी हीरावत की पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री संजय कुमार जी खुशालचन्द जी खींवसरा, मांडल (महा.), श्रीमती शकुन्तला बाई

खींवसरा के आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में बड़ोदरा में वर्षीतप पारणा करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री राजेन्द्र जी विनय जी लुणावत, जोधपुर, शासनप्रभाविका,साध्वीप्रमुखा, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री नरपतराज सा, नरेन्द्र सा, सुरेन्द्र सा सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती पुष्पा कंवर जी धर्मपत्नी श्री नरपतराज सा कुम्भट की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री इन्द्रचन्द जी, रमन जी, सुमन जी सिंघवी, जोधपुर, द्वारा श्रीमती अंकलकंवर जी सिंघवी के तीसरे वर्षीतप के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री इन्द्रचन्द जी, रमन जी, सुमन जी सिंघवी, जोधपुर, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

सम्यज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित साहित्य हेतु साभार

40000/- श्रीमती अर्चना जी, श्री प्रेमचन्द जी चौपड़ा एवं परिवारजन सूरत की ओर से स्व. श्री पन्नालाल जी चौपड़ा(अजमेर वाले) की पुण्य स्मृति में नन्दी सूत्र के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

600/- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

20000/- श्री सुनील जी नाहटा, बंगारपेट द्वारा अपनी मातुश्री श्रीमती बसन्ताबाई जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री जौहरीलाल जी नाहटा के दूसरे वर्षीतप का पारणा आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में बड़ोदरा में सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

20000/- श्री अनिल जी नाहटा, बंगारपेट द्वारा अपनी मातुश्री श्रीमती बसन्ताबाई जी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री जौहरीलाल जी नाहटा के दूसरे वर्षीतप का पारणा आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में बड़ोदरा में सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

60,000/- श्री नागरमल जी प्रसन्नचन्द जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)

60,000/- श्री महावीर जी भण्डारी, चेन्नई (तमि.)

36,000/- श्री कैलाशमल जी दुग्गड, चेन्नई (तमि.)

36,000/- श्री जवाहरलाल जी अशोक कुमार जी बाघमार, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्री पदम कुमार जी कवाड़, चेन्नई (तमि.)

12,000/- श्रीमती सुधा जी डागा, बीकानेर (राज.)

12,000/- श्री उमरावमल जी श्रीपाल जी सुराना, चेन्नई (तमि.)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड'

योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

ज्येष्ठ कृष्णा 5	गुरुवार, 14.05.2009	आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 19 वां आचार्य पद दिवस
ज्येष्ठ कृष्णा 6	शुक्रवार 15.05.2009	पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. की 226 वीं पुण्यतिथि
ज्येष्ठ कृष्णा 8	रविवार, 17.05.2009	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्णा 14	शनिवार, 23.05.2009	चतुर्दशी, पक्खी,
ज्येष्ठ शुक्ला 8	रविवार, 31.05.2009	अष्टमी
ज्येष्ठ शुक्ला 14	शनिवार, 06.06.2009	चतुर्दशी, क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की 164 वीं पुण्यतिथि
ज्येष्ठ शुक्ला 15	रविवार 07.06.2009	पक्खी
आषाढ कृष्णा 2	मंगलवार 09.06.2009	213 वां क्रियोद्धारक दिवस

('हमारे तारक गुरु' पृ. 40 का शेषांश)

तप की उष्णता से,
क्रिया के तेज पुंज से,
अंकुरित होगी, अनन्तशक्ति, आत्म रमणता
श्रद्धा की वह भरपूर फसल, आत्मिक गुणों का उद्यान,
वही होगा जीवन का,
सच्चा परिवर्तन, परिवर्धन, संवर्धन
अपने आपको समर्पित कर गुरुसेवा में, संघ सेवा में,
आत्मरमण कर, पूज्य गुरुदेवों के सान्निध्यों में,
अवश्य ही मिलेगी,
जीवन जीने की कला,
मुक्ति महल की वह मंजिल,
हे भगवन्, पूज्य गुरुवर,
ऐसी शक्ति दो, मन दृढ़ कर दो, ऐसी सुदृढ़ श्रद्धा से,
चिंतन को प्रबुद्ध कर दो,
मेरे भगवद् रूप गुरुवर,
जिससे गुणस्थानों की सीढ़ियाँ निरन्तर आगे बढ़ सकें।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 17 अगस्त से 24 अगस्त 2009 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 25 जुलाई 2009 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष– दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- सूरजमल जी भंडारी, फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), 25381001, मो.9443336674

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

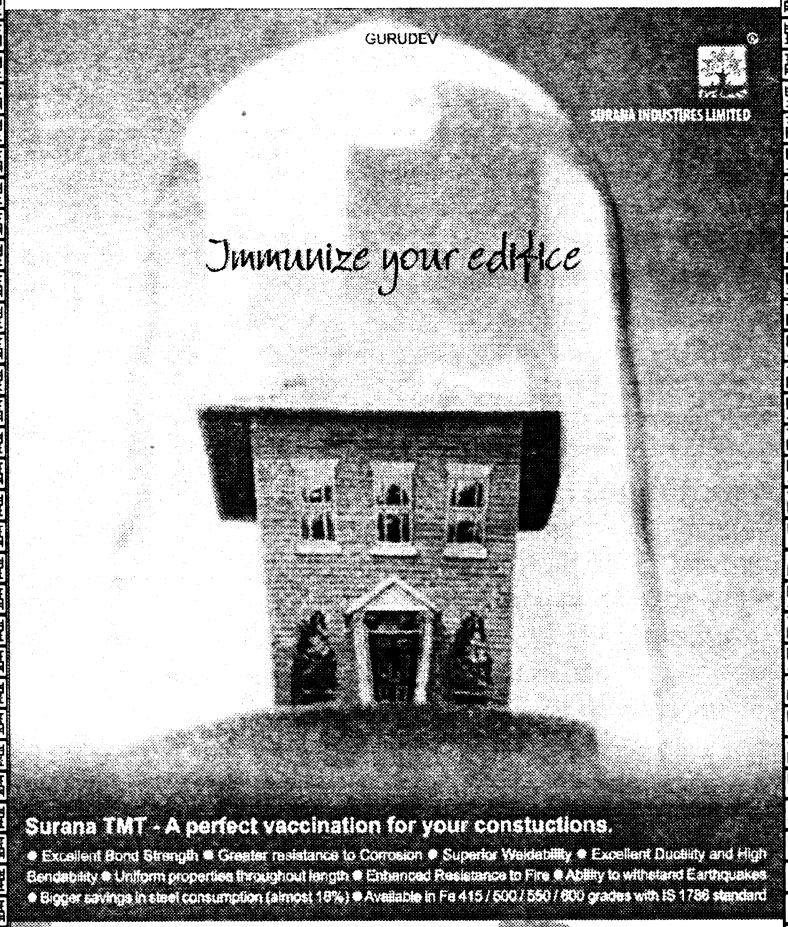

● Excellent Bond Strength ● Greater resistance to Corrosion ● Superior Weldability ● Excellent Ductility and High Bendability ● Uniform properties throughout length ● Enhanced Resistance to Fire ● Ability to withstand Earthquakes ● Bigger savings in steel consumption (almost 18%) ● Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in / silimited@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

IS:1786 ISI

SURANA™ TMT RE-BARS
yes, the best

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्नबन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad
PRITHVI EXCHANGE
33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2009 ★ वैशाख 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

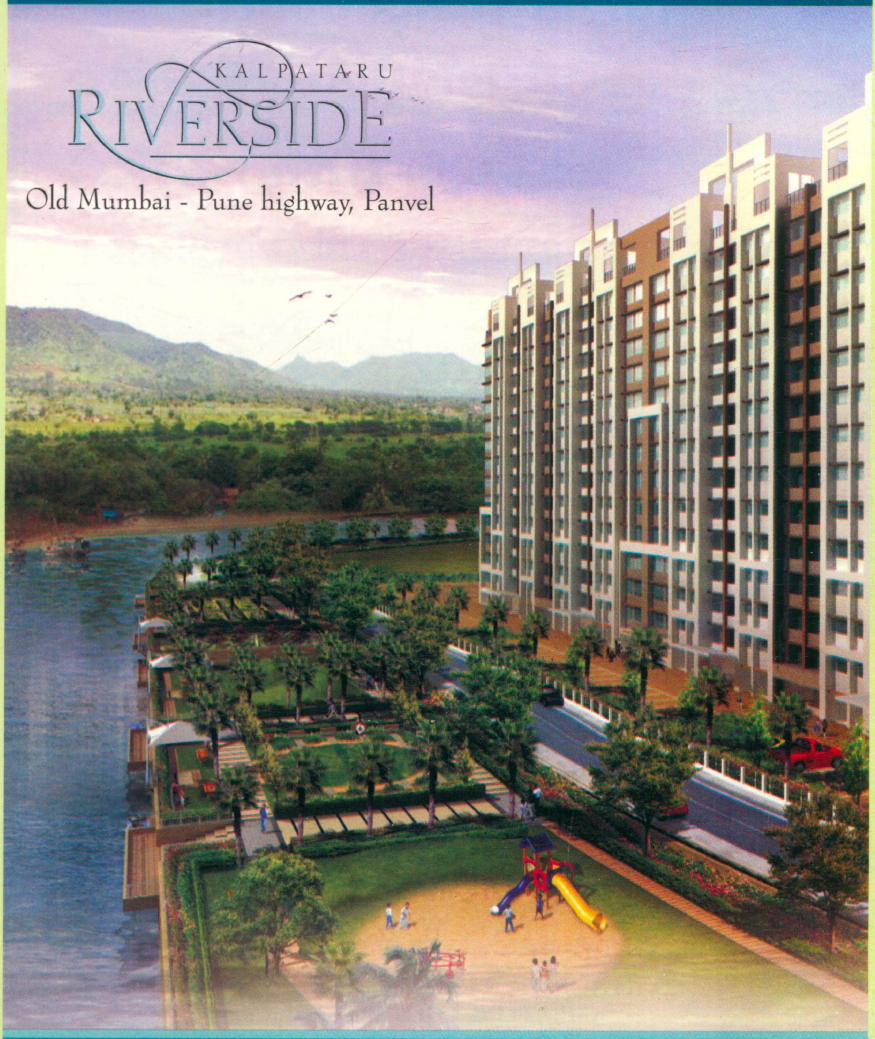

KALPA-TARU®

101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।